

प्रतो ६००.

श्री.

संन्यास दीक्षा प्रतिबंधक निबंधना मुसहा उपर विचार
करवा निमायली समितिनुं

निवेदन



વડोदરा सरकारी छापखाना.

१९३२.

किंमत रु. ०-११-०.

श्री.

संन्यास दीक्षा प्रतिबंधक निवंध समितिनुं निवेदन.

अनुक्रमणिका.

परिच्छेद अंक.

बाबत.

पृष्ठांक.

प्रकरण १ लुँ.

प्राथमिक हकीकत.

१	बडोदरा राज्यनी धारासभामां रज थयेलो ठराव.	१
२	ठराव पाळो खेंची लेवायो.	१
३	दीक्षाप्रतिबंधक निवंधनो खरडो.	२
४	समितिनी निमणूक.	२
५	सूचनाओ मंगावी.	२
६	सूचनाओनो प्रकार.	२
७	विशेष खुलासो करी लीधो.	२
८	निवेदनमां समावेश करेली बाबतो.	२

प्रकरण २ जुँ.

संन्यास.

९	संन्यास लेवानो उद्देश.	४
१०	इस्लाम धर्मां संन्यास नथी.	४
११	खिस्ती धर्मां संन्यास नथी.	५
१२	शोरोस्ट्रीयन धर्मां संन्यास नथी.	५
१३	हिन्दु धर्मां संन्यास.	६
१४	संन्यास क्यारे लई शकाय.	६
१५	हिन्दुधर्मां जुदा जुदा प्रकारना संन्यास.	७
१६	साधु संस्था.	८
१७	ढोगी साधु.	९

परिच्छेद अंक.	बाबत. जैन धर्म.	पृष्ठांक.
१८	जैन धर्ममां संन्यास दीक्षा. ९
१९	जैन धर्मना संप्रदाय—श्वेतांबर अने दिगंबर. ९
२०	स्थानकवासी संप्रदाय. १०
२१	तेरापंथी. ११
२२	जैन धर्ममां दीक्षा. ११
२३	जैन साधुए पाल्वानां पांच व्रतो. ११
२४	कोण दीक्षा लई शके. ११
२५	दीक्षा माटे नालायकी. १२
२६	जैनोमां खरो त्याग. १३
२७	दीक्षा आपनार गुरुनी लायकात. १३
२८	दीक्षाना उमेदवारनी परीक्षा करवी. १५
२९	जैन दीक्षानी क्रिया. १६
३०	आचार्य. १७
३१	गच्छ. १७
३२	हिन्दु अने जैन साधु रचनानी सरखामणी. १७
३३	संधनी साधु उपर असर. १८
३४	श्रावकोनी साधु उपर सत्ता. १९
३५	साधुओनी श्रावको उपर सत्ता. २०
३६	समाजमां अने त्यागी संस्थामां सुधारानी आवश्यकता. २०

प्रकरण ३ जुं.

अयोग्य दीक्षा अपाय छे के?

३७	अयोग्य दीक्षा. २१
३८	निर्णय करवाना मुद्दा. २३
३९	सगीरने फोसलाववानो आरोप. २३
४०	साधुओ दीक्षा माटे नसाडे भगाडे छे के केम? २४
४१	समजवगरनाने दीक्षा अपाय छे ? २६
४२	सगीरोने छूपी रीते दीक्षा अपाय छे. २७
४३	सोल्वर्धनी उपरनाने दीक्षा लेती वखते माबाप विगेरेनी संमतिनी अपेक्षा. २९
४४	माता पिता विगेरेनी संमतिनी आवश्यकता, ३२

रिच्छेद अंक.	बाबत,	पृष्ठांक.
४६	भरणपोषणनी जवाबदारी सबंधी एक जैनमुनिना विचारो. ३३
४७	मातापिता अने पत्नीने निराधार मूकवां ए योग्य नथी. ३३
४८	सोळ वर्षनी उमरना दीक्षा लेनार इसमनी तेनी स्त्री पत्येनी फरज.	३४
४९	संघनी संमति. ३४
५०	जैन कॉन्फरन्सोना ठारो. ३५
५१	संघनी संमतिनी आवश्यकता नथी. ३६

प्रकरण ४ थुं.

अयोग्य दीक्षा अटकाववा शुं करवुं.

५१	वेशधारी साधु बनता कर्कोरो—अने हुं साधुओ. ३७
५२	जैन साधु. ३७
५३	जे ते धर्मना अनुयायीओनी फरज. ३७
५४	लाला सुखबीरसिंहनो खरडो. ३८
५५	सन्यास दीक्षामां मात्र नसाडया भगाडयानो सवाल नथी. ३९
५६	समाजने नुकसान थाय तेवी बादतो समाज अटकावी शके नहीं तो ते अटकाववानी राज्यनी फरज. ४०
५७	दीक्षाना विरोधीओनी दलील. ४०
५८	जे ते धर्मना अनुयायीओ सुधारा करे छे ते इच्छा जोग छे.....	४१
५९	बालदीक्षा मात्र अपवाद रूप हती. ४२
६०	कमीमां कमी १६ वर्षनी अंदर दीक्षा आपवी योग्य नथी. ४३
६१	दीक्षा लेवानी उमरमां फेरफार करवायी धर्मना मूळ सिद्धांतोमां फेरफार थतो नथी. ४४
६२	गौण बाबतमां करेला फेरफारोनां उदाहरणो. ४५
६३	मोटी उमरे दीक्षावाला माटे शास्त्रना आधारो. ४७
६४	बालदीक्षितज विवदान थई शके एम काँई नथी. ४८

प्रकरण ५ सुं.

कायदो.

६५	बदोबस्त करवानी बाबतो. ४९
६६	कायदो करवानी आवश्यकता. ५०
६७	कायदानो अमल केवो थशे. ५१
६८	प्रसिद्ध थयेला खरडामां केवो फेरफार करवो ते बाबत. ५२

परिच्छेद अंक.	बाबत.	पृष्ठांक.
६९	१६ वर्षीयी कमी उमरना माटे दीक्षानो प्रतिबंध. ९२
७०	सोळ वर्षनी उमरना विशेष प्रकारनी बुद्धिवाला बालको माटे अपवाद करवानी जहर नथी. ९३
७१	१६ वर्ष तथा ते उपरनी उमरना सखसो माटे दीक्षा लेवानी छूट. ९४
७२	छोरी के घणीनी समतिनां कारणो. ९४
७३	संधनी संमतिनी अपेक्षा न होवा विषे. ९४
७४	संमति माटे पुरावो केवो होवो जोईए. ९५
७५	दीक्षा छोडी देनारनो मिलकत उपरनो हक्क. ९५
७६	फरियाद. ९६
७७	शिक्षा. ९७
७८	निबंधनो सुधारलो खरडो. ९७
७९	उपसंहार. ९७
८०	आभार प्रदर्शन. ९८
परिच्छिष्ट १ छुं.	 ९९
" २ छुं.	 ६६
" ३ छुं.	 ६६

संन्यास दीक्षा प्रतिबंधक निवंध समितिनुं निवेदन.

—+::+—

प्रकरण १ लुं.

प्राथमिक हकीकत.

केटलांक वर्षधी जैन धर्मने लगतां अने बीजां केटलांक वर्तमानपत्रोमां एवी
मतलबनी चर्चा उभी यई छे के जैन धर्मना साधुओ
वडोदरा राज्यनी धारासभामां कुमठी वयना बाळकोने फोसलावीने नसाडी भगाडी
रजू थयेलो ठराव. लई जाय छे अने तेमनां माबाप अगर वालीनी संमति
मेलव्या वगर तेमने दीक्षा आपी दे छे; तेथी तेमनां माबापनी स्थिति कफोडी थाय
छे एटलुंज नहीं पण एवी अयोग्य रीते अपाती दीक्षाने लीधे जैन संघ पैकी एवी
दीक्षानो ढांकपिण्ठोडो करनारा अने तेनो विरोध करनारा एवा वे पक्ष पडी कजिया,
कंकास अने अरसपरस विरुद्ध लागणी उत्पन्न थाय छे अने कोई कोईवार दिवानी
फोजदारी न्यायाधिशीमां फरियादो दाखल थवाना प्रसंग पण आवे छे. ते उपरथी एवी
अमिष्ट पद्धति बंध थाय अने दीक्षा आपवा जेवी महत्वनी धर्म संबंधी बाबततुं नियमन
रहे एवा हेतुथी वडोदरा राज्यनी धारासभामां वडोदरा विभाग तरफथी चूंटायला
सभासद रा. रा. लल्लुभाई किशोरभाई पटेले तारीख १९-१२-१९२९ ने रोज नीचे
प्रमाणे ठराव चर्चा माटे रजू कयों हतो:—

“ नाहनी उमरमां माणसोने दीक्षा आपी त्यागी बनावत्रामां आवे छे, तेथी
कुमठी वयनां अने काची बुद्धिनां माणसो समजवगर दीक्षा ले छे अने त्यागी
बने छे, तेथी घणा प्रसंगे अनर्थ थाय छे. माटे जेनी उमरना २१ वर्ष पुरां थयां
न होय तेवा कोई पण माणस, ख्री अगर पुरुषने संसार त्यागनी दीक्षा आपी
शकाय नहीं तथा जेनी उमरना २१ वर्ष पुरां थयां होय पण ३० वर्ष पुरां थयां
न होय तेवा माणसने प्रांत फोजदारी न्यायाधिशीनी परवानगी मेलव्या शिवाय
संसारत्याग करवानी दीक्षा आपी शकाय नहीं एवुं धोरण ठाववा आ धारासभा
श्रीमंत सरकारने विनंति करे छे.”

२. आ ठरावना संबंधमां धारासभाना अध्यक्ष (नामदार दिवान) साहेबे
ठराव पाछो खेची लेवायो. खुलासो कयों हतो के आ ठरावनी तरफेणमां तेमज
उपर संख्याबंध तारो आवेला छे, तेथी आ बाबतमां तपास करी दीक्षा उपर कंई

कायदेसर अंकुशनी जरुरियात छे के केम तेनो विचार करवामां आवशे. ए उपरथी रा. रा. लल्लुभाईए पोतानो ठराव पाढो खेंची लीओ हतो.

३. आ पछी वर्तमानपत्रोमां यती विशेष चर्चा अने सरकार आगळ आवेली दीक्षाप्रतिबंधक निबंधनो खरडो. बीजी हकीकत उपरथी प्रथमदर्शनीय एम जणाव्युं हतुं के साधु, संन्यासी, यति, योगी, वेरागी विगेरे लोको तरफथी अज्ञान बाळकोने संन्यास एठले संसार त्याग करवानी दीक्षा आपवामां आवे छे तेथी अनेक अनर्था याय छे, ते अटकाववा कांईक प्रतिबंध मुकवो इष्ट छे माटे परिशिष्ट १ वाळो कायदानो मुसद्दो श्रीमंत संरक्षार महाराजा सयाजीराव गायकवाड एमनी आज्ञाधी राज्यना न्यायमंत्री तरफथी तैयार करी तारीख ३०-७-३१ नी आज्ञापत्रिकामां प्रसिद्ध करवामां आव्यो हतो अने ते संबंधे कोईने कांई सूचना करवानी होय तो ते खरडो प्रसिद्ध यायानी तारीखथी बे मासनी अंदर मोकलवा जणाव्युं हतुं.

४. ए खरडाना संबंधमां जे सूचनाओ आवे अगर पोताने योग्य लागे तेवी बीजी मंगावी आ वाबतमां आगळ शी रीते करवुं ए समितिनी निमणूक. विषे सरकारमां निवेदन करवाने दिवान हुक्म अंक. ० तारीख १५-८-३१ (परिशिष्ट २) यी नीचे प्रमाणे समिति तारीख १५-८-३१ ना रोज निमवामां आवी हती:-

प्रमुख.

मे. रा. बा. गोविंदभाई हाथीभाई देसाई, बी. ए., एलएल. बी.

(निवृत्त नायब दिवान.)

सभासदो.

मे. रा. रा. विष्णु कृष्णराव धुरंधर, बी. ए., एलएल. बी., एडवोकेट. (न्यायमंत्री, वडोदरा राज्य).

मे. रा. रा. अब्राहम आ. केहीमकर, बी. ए., एलएल. बी.

(निवृत्त न्यायाधीश वडोदरा).

सेक्रेटरी.

रा. रा. पुष्करराम वामनराम महेता, एम. ए., एलएल. बी.

(नायब न्यायमंत्री, वडोदरा राज्य).

५. प्रसिद्ध यएला खरडानी विरुद्धमां अगर लाभमां जेमने जे कांई हकीकत सूचनाओ मंगावी.

जाहेर करवी होय ते जाहेर करवा शस्वातमां एक मासनी

मुदत आपवामां आवी हती; ते उपरांत समितिए बीजी

बे मासनी मुदत आपी हती अने ते पछी पण जर्वर जणाई ते प्रमाणे ए मुदतमां बखतोवखत वधारो कर्यो हतो.

६. समिति तरफ जे सूचनाओं आवी हती तेमां केटलीक कायदो करवानी सूचनाओंनो प्रकार.

विरुद्धनी अने केटलीक कायदो करवानी तरफेणनी हती। कायदो करवानी विरुद्धनी सूचनाओंमां मुख्य दलील ए बतावामां आवी हती के दीक्षाथी कंई अनर्थ थतो नथी, सगीरोने नसाडी भगाडी लई जई दीक्षा आपवानुं कहेवामां आवे छे ते खेटुं छे। दीक्षानो प्रतिबंध करवानो कायदो करवानी कंई जरूर नथी अने ते सरकारथी थई शके पण नहीं, जो ते करवामां आवशो तो साधुसंस्थानो नाश थई धर्मने घणी हानि थक्के। कायदो करवानी तरफेणनी सूचनाओं एवी मतलबनी हती। के कुमठी वयनां बाळकोने मावापनी अने परणेतरनी संमिति वगर दीक्षा आपी देवानो प्रकार बने छे तेथी घणुं अनिष्ट याय छे अने ते अटकाववाने कायदो यवानी जरूर छे। कायदो करवानी विरुद्धता के तरफेणनी बधी सूचनाओं जैनधर्मना अनुयायी तरफथी आवी हती। हिंदु, मुस्लीम विगेरे बीजा धर्मना अनुयायीओ तरफथी कायदाना लाभमां के विरुद्धमां कंई पण सूचना आवी नहोती। आ उपरथी एवुं अनुमान थई शके छे के श्रीमंत सरकारे करवा धारेला कायदाना संबंधमां जैन शिवाय बीजा कोई धर्मवालानो विरोध नथी।

७. समिति तरफ आवेली केटलीक सूचनाओना संबंधमां विशेष खुलासो करी लेवानी जरूर जणायायी समितिने योग्य जणायुं ते विशेष खुलासो करी लीधो।

प्रमाणे एकंदर २९ इसमोने समितिए पोतानी रुबरु बोलावी जुबानी तरीके हकीकत पुछी लीधी हती। आ उपरांत वडोदरा कॉलेजना संस्कृतना प्रोफेसर गोविंदलाल भट एम. ए., तथा वडोदरा ओरिएन्टल इन्स्टीट्युटना डायरेक्टर डॉक्टर बिनयतोष भट्टाचार्य एम. ए., पीएच. डी. पासेथी हिन्दु तथा जैन शास्त्रमाना संन्यास दीक्षा संबंधी फरमाननी नोंध करावी लेवामां आवी हती; तेम प्रमाण तरीके गणाता ग्रंथो पण जोवामां आव्या हता।

८. कायदो करवानी तरफेणमां तथा तेनी विरुद्धमां जे एकंदर हकीकत आवी हती ते विचारमां लेतां समिति जे निर्णय उपर आवी निवेदनमां समावेश करेली छे तेनुं आ निवेदन सादर करवामां आवे छे। प्राथमिक हकीकतना आ पहेला प्रकरण पछी बीजा प्रकरणमां आपणे त्यां प्रचलित मुख्य धर्मोमां संन्यास दीक्षा संबंधे शी रीते ठेरेलुं छे ते टुकामां दर्शाव्युं छे। दीक्षा आपवामां कंई अयोग्यपणुं याय छे के केम तेनो विचार त्रीजा प्रकरणमां कयों छे, ते अटकाववा कुं करवुं ते चोथा प्रकरणमां बताव्युं छे; अने कायदो करवानी जरूर छे के नहीं अने होय तो ते केवा प्रकारनो करवो जोईए अने प्रसिद्ध थयेला खरडामां केवो फेरफार करवानी आवश्यकता छे ए पांचमां प्रकरणमां दर्शाव्युं छे।

प्रकरण २ ऊँ.

संन्यास.

९. हिंदु, जैन अने बीजा केटलाक धर्ममां एवी मान्यता छे के कर्या कर्म भोगववानां छे अने ज्यां सुधी कर्मनो क्षय थई जीवात्मा संन्यास लेवानो उद्देश.

परमात्मा साथे मठी जई मोक्ष न थाय त्वां सुधी करेलां कर्म प्रमाणे पुनर्जन्म लेवो पडे छे. जे कर्मनां फळ माणसयी वर्तमान जीवनमां प्रेरपुरां भोगवी लेवातां नयी ते मृत्यु पछी पण वलगी रहे छे अने नवा भवनुं कारण बने छे. तेत्रो प्रसंग बने तेटलो थोडो आवे अने कर्मनो क्षय थई मुक्ति मझे एटला माटे संसारना भौतिक प्रयासोने असार मार्नाने तेनो त्याग करी धार्मिक ध्यान धरवा अने तप करवा हिंदु अने जैन धर्ममां संन्यास लेवामां आवे छे; अने केटलाक धर्ममां संन्यास न लेतां दुनियामां रहीनेज साधुजीवन गाठवामां आवे छे. आ बाबतमां प्रचलित मुख्य धर्म हिंदु, जैन, मुस्लीम, झोरोस्ट्रीयन अने खिस्ती धर्ममां शी रीते ठरेलुं छे तेनु टुकामां दिग्दर्शन करवायी कायदाना जे खरडानो समितिए विचार करवानो छे ते उपर कंई अजवालुं पडी, तेनो योग्य निर्णय करवाने मदद रूप यशे एम लागवायी प्रथम ए जूदा जूदा धर्ममां संन्यास लेवा माटे शी रीते ठरेलुं छे ते जोईश्युं.

इस्लाम धर्म.

१०. इस्लाम धर्ममां संन्यास लेवानुं काई छेज नहीं. ए धर्मना फरमान प्रमाणे संन्यास लेवायज नहीं. खुइ पेगंबर साहेबे फरमान कर्यु इस्लाम धर्ममां संन्यास नयी.

छे के खुदाए मनुष्य माटे उपयोगनी जे जे वस्तुओ पेदा करी छे तेनो उपयोग करवानुं वर्जित न करवुं जोइए.^१ रमजानमां अपवास करवानुं, श्राव नहीं पीवानुं, पांच वलत बंदगी करवानुं, मक्कानी जात्रा करवानुं ए विगेरे फरमान पेगंबर साहेबे करेलां छे ते संसारमां रही धार्मिक जीवन गाठवाने माटे छे. सर्व कोई खुदा उपर आकीन राखी पोतपोतानुं कर्तव्य करवानुं फरमान करवामां आव्युं छे पण संसारनो त्याग करी संन्यासी बनी जवानुं कोई ठेकाणे फरमान करेलुं नयी. इस्लाम धर्ममां मुलां, मोलवी, मौलाना, पीर विगेरे नामथी ओळखाता विद्वान् धर्मगुरुओ होय छे पण ते लग्न करी घरबारी तरीके रही शके छे. आत्रा उत्तम कोटीना धर्मगुरुओ उपरांत दरवेश, फकीर विगेरे नामथी अर्धनग्न अगर विचित्र पोशाकमां भीख मागवा माटे रखडता फरता इसमो जोवामां आवे छे ते पण घरबारी तरीके रही शके छे. तेमाना केटलाक फक्कड (कुंवारा) तरीके रहे छे पण एवी रहेणी करणीने इस्लाम धर्मशास्त्रनी कंई अनुमती नयी. फकीरोमां बेशरा अने बाशरा एवा वे विभाग होय छे. बेशरा-शरा विरुद्ध वर्तनारा-परणता नयी पण बाशरा-शरा प्रमाणे वर्तनारा-परणे छे अने घरबारी तरीके रहे छे. फकीरो घणा प्रकारना होय छे पण तेमां

^१ वडोदरा राज्यनो १९११ नो सेन्सस रिपोर्ट, पान १०२.

અબ્દાલી અથવા ડફાલી, નક્ષબંદ, બેનવા, કલંદર, મદારી, મુસા સુહાગ, રફૈ અને રસુલ શાહી એ સુખ્ય છે.^૧ સન ૧૯૩૧ ની વસ્તી ગણત્રી પ્રમાણે વડોદરા રાજ્યમાં આવા ફકીરોની સંખ્યા ૬,૪૯૯ છે અને તે ઉપરાંત બીજા ઘણા બહારથી ભીખ માગવા આવી અહોં તહીં ફરતા ફરે છે અને ગૃહસ્થો ઘર આગઠ અગર બજારમાં દુકાનદારોની દુકાન આગઠ અછુટાહને નામે પૈસા, અનાજ વિગેરે ભીખ તરીકે લે છે. એવી ભીખ ન આપવામાં આવે તો કેટલાક તોકાન મચાવીને પણ લે છે.^૨

ખિસ્તી ધર્મ.

૧૧. ઇસ્લામની પેઠે ખિસ્તી ધર્મમાં પણ સંન્યાસ લેવા જેવું કંઈ નથી. કદાચ કોઈને દુનિયાદારી ઉપર વિતરણ આવે તો તે એકાન્ત ખિસ્તી ધર્મમાં સંન્યાસ નથી. જીવન ગાંઠે છે પણ કંઈ સંન્યાસી થઈ જતો નથી. ધર્મ-ગુરુઓ પણ ઘરબારી હોય છે. ઇસવી સન ૧૬૦૦ ના અરસામાં ખિસ્તી ધર્મમાં સુધારો (રેફર્મેશન) થયો તે પહેલાં મઠ અને તેમાં રહેતા સાધુ સાધ્વીની ઘણી ધમાલ તે ધર્મમાં પણ હતી પણ તે પછી તેના પ્રોટેસ્ટન્ટ સંપ્રદાયમાંથી તે તદ્દન નિકળી ગઈ છે અને માત્ર રોમન કેયોલિક સંપ્રદાય કે જે જૂના રીત રિવાજને વળગી રહ્યો છે તેમાં રહેલી છે, પણ એવા સાધુ સાધ્વી લાયક ઉમરનાં થયે સ્વેચ્છાથી દુનિયાની ઉપાધિઓથી દૂર રહેવા માગતા હોય તો જ સાધુ સાધ્વી બને છે. સાધુ થવા ઈચ્છનાર સાધુ થતી બખતે અવિવાહિત હોવોજ જોઈએ એટલું જ નહીં પણ તેણે ૨૯ વર્ષની વય પહેલાં ઓછામાં ઓછા ૭-૮ વર્ષ સાધુઓની ચાલતી કોલેજમાં અભ્યાસ કરી પરીક્ષામાં પસાર થવું જોઈએ. પસાર થયા પછી પણ બધાને ધર્મગુરુ (priest) તરીકે લેવામાં નથી આત્મતા. રોમન કેયોલિક અને ખિસ્તી ધર્મના એવા બીજા સંપ્રદાયમાં પણ સાધુ થવાની ભાવના દિનપ્રતિદિન કમી થતી જાય છે. દુનિયામાં રહીને પોતાના ઉપભોગને માટે જેમ બને તેમ ઓછું ખર્ચવું અને બીજાઓને સુખી કરવા માટે જેટલું બને તેટલું બચાવી પરમાર્થ કરવાની ભાવના વધતી જાય છે અને તે મુક્તિકોજ (સાલ્વેશન આર્મા) અને બીજા સંપ્રદાયના પાદરીઓ (મિશનરીઓ) માં જોવામાં આવે છે. એમાં સમાયલો સેવાધર્મ ઘણો શ્યુત્ય છે, પણ તેણે સંન્યાસ દીક્ષા સાથે કંઈ સંબંધ નથી.^૩

જોરોસ્ટ્રીયન ધર્મ.

૧૨. જોરોસ્ટ્રીયન ધર્મના અનુયાયીઓમાં ગૃહસ્થો બેહદીન કહેવાય છે અને તેમના ધર્મગુરુ દસ્તુર, અને ધર્મક્રિયા કરનાર મોબેદ નથી. જોરોસ્ટ્રીયન ધર્મમાં સંન્યાસ કહેવાય છે, પણ દસ્તુરો અને મોબેદો પણ ગૃહસ્થોની પેઠ ઘરબારી હોય છે. વળી મોબેદો પૈકી ઘણા તો હવે પોતાનો બાપદાદાથી ચાલતો આવેલો ધર્મક્રિયા કરવાનો ધંધો છોડી દઈ ઇતર ગૃહસ્થોની પેઠ

૧ કુરાન ૫, ૮૯.

૨ વડોદરા રાજ્યનો ૧૯૧૧ નો સેન્સસ રિપોર્ટ, પાન ૧૦૨.

૩ Dictionary of Religion and Ethics Vol. 1. 4.

वेपर, नोकरी विगेरे पण करे छे. तेमनामां दुनियानो त्याग करी संन्यास लेवानुं कर्हे होतुं नथी.^१

हिंदु धर्म.

१३. हिंदु धर्ममां श्रुति (वेद) अने स्मृति प्रमाणे ब्रह्म सत्य अने जगत् मिथ्या छे अने आखरे जीवात्माए परमात्मामां अंतर्गत थई जवानुं हिंदु धर्ममां संन्यास.

छे तेथी एवो शुभ प्रसंग व्हेलो आवे अने कर्मनी उपाधिमां पडवुं न पडे एटला माटे संसारना भौतिक प्रयासोने असार मानी मोक्ष मेळववाने माटे प्राचीन काळथी ध्यान धरवामां अने तप करवामां जीवन गाळवा संन्यास लेवानी रीत दाखल यएली हती. पहेलां तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए चार मूळ वर्ण पैकी मुख्यत्वे करीने ब्राह्मणज संन्यास वेता अने ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने संन्यास एवा जिंदगीना चार आश्रम ठरावेला हता ते पैकी वानप्रस्थामत्र पूरो कर्या पछी संन्यास लेता. पाछलथी गमे ते आश्रममांथी अने गमे ते वर्णना लोकोए संन्यास लेवानी प्रथा पडी गई हती.^२

१४. क्यरे संन्यास लई शकाय ए बाबत शास्त्रना ग्रंथोमां मतभेद छे. संन्यास क्योरे लई शकाय.

यो होय तेज संन्यास लई शके. वितराग यथा वगरनो संन्यास ले तो नरकमां पडे. संन्यास वानप्रस्थाश्रम पूरो कर्या पछी लेवाय के तेनी पहेलाना गमे ते आश्रममांथी लई शकाय ए विषे शास्त्रना ग्रंथोमां मतभेद छे. केटलाकनो मत एवो छे के वानप्रस्थाश्रम पूरो कर्या वगर संन्यास लई शकाय नहीं. ब्रह्मचर्याश्रम पूरो कर्या पछी गृहस्थाश्रममां दाखल थई ते पूरो कर्या पछी वानप्रस्थाश्रममां दाखल यवुं जोईए अने ते पछी मरजी होय तो संन्यास लई शकाय.^३ संन्यासोपनिषद्मां कहुं छे के पहेलां त्रण आश्रम पूरा कर्या पछी संन्यास लेवानी इच्छा राखनारे तेनां मात्राप, स्त्री, पुत्र अने बीजां सगां संबंधीनुं अनुमोदन लेवुं जोईए अने पोतानी मिलकतनी धर्मादा वगेरेमां व्यवस्था करवी जोईए.^४ कौटिल्यना अर्थशास्त्रमां तो एम पण कहेलुं छे के बैरी छोकराना निर्वाह माटे गोठवण कर्या वगर कोई संन्यास ले तो तेनो राजाए २९० पण दंड करवो जोईए. ब्रह्मचर्याश्रम पूरो कर्या पछी परणवानुं, पुत्रोत्पत्ति करवानुं, अने यज्ञ करवानुं याङ्गवल्क्य स्मृतिमां फरमाव्युं छे. अने विशेषमां कहुं छे के ए प्रकारानुं ऋण (देवुं) अदा कर्या वगर मोक्षने माटे संन्यास लेवानी

१ सन १९११ नो वडोदरा राज्यनो सेन्सस रिपोर्ट, पान १०४.

२ (१) वैखानस धर्म प्रश्न १०.

(२.) यति धर्मसंग्रह १५८.

३ संन्यासोपनिषद्, पान ६३, ६४.

४ गौतम धर्मसूत्र, पान २१, २२.

५ संन्यासोपनिषद् २३६.

पात्रता आवती नथी.^१ मनुस्मृतिमां पण मनुष्यना जिंदगीना चार भाग करी पहेला त्रण भाग ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, अने वानप्रस्थाश्रममां गाठी, छेवटना चोया भागमां संन्यास लेवानुं कहेलुं छे.^२ जाबालोपनिषद्मां कहेलुं छे के मरजी होय तो ब्रह्मचारी के बीजा गमे ते आश्रममांथी संन्यास लहै शकाय.^३ कारण के वैराग उपजे के तुरत संन्यास लेवानो छे. जाबालोपनिषद्मनो मत ते पठीनी स्मृतिमां अने निबंधोमां स्वीकाराएलो छे अने तेया पहेला आश्रममांथी संन्यास लेवाय तो ते सशास्त्र गणाय छे. वेदनुं अध्यन करवानुं, लग्न करी प्रजा उत्पन्न करवानुं अने यज्ञ करवानुं ए त्रण प्रकारना शृण अदा कर्या पछी मोक्ष माटे संन्यास लहै शकाय एम मनुस्मृतिमां कहेलुं छे.^४ पण मिताक्षरा प्रमाणे त्रण शृण अदा करवानुं बंधन कोहै ब्रह्मचारी अवस्थामां संन्यास ले तेने लागु पडतुं नथी. कारण के ब्रह्मचारीनुं कर्तव्य तो मात्र वेदनुं अध्यन करवानुं छे.^५ संस्कार प्रकाशमां पण गृहस्थाश्रम वगेरेमां दाखल थया वगर एकदम संन्यास लेवानी ब्रह्मचारी माटे छूट राखेली छे.^६ नारद परित्रजक उपनिषद्मां जेमनाथी संन्यास लहै शकाय नहीं तेमनी यादी आपेली छे ते उपरथी जणाय छे के बाळकथी संन्यास लहै शकाय नहीं.^७ बाळक कोने कहेबुं ते विषे कंई ठरावेलुं जणानुं नथी. पण उपनयननो संस्कार ९ थी ८ वर्षनी उमरे करवा कहेलुं छे तेथी जेने उपनयन संस्कार न थयो होय अने जे ब्रह्मचर्याश्रममां दाखल थयो न होय तेने बाळक कही शकाय. पहेलां तो उपनयन थया पछी बाळक तेना गुरुने त्यां अभ्यास करवा जतो; दस बार वर्ष पछी परणवा लायक थाय त्यारे तेने गुरुने त्यांथी घेर तेडी लाववामां आवतो अने घेर पाढो आत्री परणे त्यां सुधी ब्रह्मचारी गणातो. हाल तो उपनयन आप्या पछी गुरुने त्यां जवा माटे जराक दोडी गया पछी तेने तुरत घेर लाववामां आवे छे. ब्रह्मचर्याश्रममां दाखल थया पठी अने वेदनो अभ्यास कर्या पछी ब्रह्मचारीने संन्यास लेवो होय तो ते प्रमाणे करवा छूट राखेली छे.

१९. हिन्दुधर्मना अनुयायीओमां हालना वखतमां मोटी उमरे पण संन्यास हिन्दुधर्ममां जुदा जुदा प्रका- लेनारा थोडाज होय छे. जे ग्रहस्थाश्रम पूरो करी निवृत्ति रना संन्यास.

पाम्या होय ते पैकी कोईकज—घणुं करीने मात्र ब्राह्मगो-

मांथी—जिंदगीना छेवटनां वर्षोमां संन्यास ले छे. एवो संन्यास घणी वखत तो मरण पहेलां थोडा वखत अगाऊ लेवामां आवे छे. संन्यासी यवानी इच्छावालानुं माथुं मुंडवामां आवे छे. तेने जनोई होय तो ते तोडी नांखवामा

१ याज्ञवल्क्यस्मृति पान १९९.

२ मनुस्मृति अध्याय ६ श्लोक ३३.

३ संन्यासोपनिषद्मां जाबालोपनिषद् पान ४३.

४ मनुस्मृति अध्याय ६ श्लोक ३५.

५ याज्ञवल्क्यस्मृति पान २००.

६ संस्कार प्रकाश पान ५७२.

७ संन्यासोपनिषद् पान ६२.

આવી તેને રુદ્રાક્ષની માલા પહેરાવવામાં આવે છે. ભગવાં કપડાં પહેરાવવામાં આવે છે, હાથમાં દંડ આપવામાં આવે છે, અને ગીરી, પુરી, વન, તીરય, આશ્રમ, સરસ્વતી વિગેરે જેને છેડે આવે તેવાં નવાં નામ આપવામાં આવે છે. પરંતુ આ શિવાય બીજા પણ સંન્યાસ લે છે અથવા સંન્યાસ લીધો હોય એવો ડોઢ કરે છે. અને જોગી, યોગી વિગેરે નામથી ઓલખાય છે. કોઈપણ ન્યાતનો ઇસમ જોગી કે યોગી થઈ શકે છે. યોગીઓમાં કેટલા સંપ્રદાયો પણ હોય છે તેમાં કાનફટી, અને ઓઘડ એ બે મુલ્ય છે. તેઓ રુદ્રાક્ષ પહેરે છે, લંગોટી વાલે છે અથવા ગેરુ રંગનાં કપડાં પહેરે છે, માથે જટા રાખે છે અને કપાઠમાં તથા શરીરે ભભૂત લગાડે છે. તેઓ કોઈ મઠમાં રહે છે અગર ફરતા ફરે છે. કાનફટીના કાનના નિચલા ભાગમાં લાકડાની ચરકી વાલેલી હોય છે અને તેમના નામને છેડે ‘નાથ’ શબ્દ લગાડેલો હોય છે. ઓઘડના નામને છેડે ‘દાસ’ લગાડે છે, અને કાલા દોરામાં પરોવેલી લાકડાની ભૂગળી તેમના ગઠા ઉપર લટકતી રાખે છે. આવા યોગીઓમાં કેટલાક સંસ્કારી અને ચારિત્રવાન હોય છે. પણ મોટો ભાગ અજ્ઞાન, દોંગી અને માત્ર પેટને માટે યોગી, જોગી કે સાધુ બનેલો હોય છે. આવા યોગી સંસારમાં પાછા આવેલા તે ઉપરથી ગોસાંઈ, જોગી, રાવલીયા, ભરથરી વિગેરે નવી ન્યાતો બનેલી છે.

૧૬. ગુજરાતમાં (૧) શૈવ અને (૨) વૈષ્ણવ એ બન્ને સંપ્રદાયમાં સાધુ હોય છે.

શૈવ સંપ્રદાયના સાધુ (૧) બ્રહ્મચારી (૨) સંન્યાસી (૩) સાધુ સંસ્થા.

દંડી અગર (૪) પરમહંસ તરીકે ઓલખાય છે. વૈષ્ણવોમાં (૧) રામાનુજ (૨) રામાનંદી (૩) રામસ્નેહી (૪) સ્વામીનારાયણ અને (૫) સંતરામ એ મુલ્ય સંપ્રદાયના સાધુ હોય છે. પુષ્ટિમાર્ગી વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં આચાર્ય ઘરબારી હોય છે અને સાધુ બિલકુલ હોતા નથી; પણ સ્વામીનારાયણ સંપ્રદાયમાં આચાર્ય ઘરબારી હોય છે પણ સાધુ બ્રહ્મચારી હોય છે. ઇતર સંપ્રદાય પૈકી ઘણામાં આચાર્ય અને સાધુ બન્ને બ્રહ્મચારી તરીકે રહે છે પણ તેમના મઠમાં ગૃહસ્થો તરંકેનો ઠાઠમાઠ હોય છે અને તેમની રહેણી કરણી પણ ગૃહસ્થોના જેવીજ હોય છે; ફેર માત્ર એટલો કે તેમનું માથું સુંડાવેલું હોય છે અને કપડાં ભગવાં હોય છે. કમાવાની કંઈ પણ તસ્દી લીધા વગર તેમના અનુયાયીઓ તરફથી મઠતી કિંમતી મેટ્રોથી તેમણે ભોગવત્વાના વૈમની સર્વ જરૂરિયાતો તેમને મળી રહે છે તેથી તેઓ સંસારીઓ કરતાં પગ વચ્ચા સુખચેન ભોગવે છે. તેમને જોઈતા ચેલા પણ સહેજમાં મળી આવે છે; કારણ કે તે પણ સંસારખાગની લાગણીથી નહીં પણ ગાદીપતિ, મઠવિપતિ વગેરે થવાના લોમથી અગર વગર મહેનતે મિદ્યાન મઠવાની લાલચથી દોરવાઈ સાધુ થવાને ઉમેદવાર થયા હોય છે. તેમના પૈકી કોઈક જગન્નિધ્યા ‘બ્રહ્મ સત્ય જગન્નિધ્યા’ ની ખરી ભાવનાથી સાધુ થયેલા હોય છે. ખરી સાધુ ભાવનાવાઠા સાધુ થોડાજ હોય છે અને તે પોતાના ગુરુની પાસે દીક્ષા લઈ તેમની સાથે કષ્ટ ભોગવતા ફરતા ફરે છે અગર તો જો ગુરુ મઠધારી કે મંદીરવાલો હોય તો તેના મઠ કે મંદીરમાં રહી ધર્મપ્રયાનો અભ્યાસ કરે છે અને કોઈ કોઈ તો ઉત્ત્ર તપ કરે છે.

१७. घणाखरा हिन्दु साधुमां तेमनां कपडां शिवाय बीजा कंई साधुगुण होती ढोंगी साधु.

जोवामां आवे छे तैम टोळाबंध के छूटा फरता जोवामां आवे छे; तै बधा हिन्दुधर्म शास्त्रानुसार थयेला खरैखरा संन्यासी नगी होता. भोळा, भाविक हिन्दुओ अने विज्ञेष करीने हिन्दु ख्वीओ साधुओने महाराज, बापजी, ए विगेरे नामथी संबोधी धर्मिक भावनाथी पवित्र माने छे अने तेमने माटे सदाब्रत स्थापन करीने अगर पोताने औंदर्ण मागवा आवे त्यारे अन्न विगेरे आपीने तेमने पोषे छे अने तेथी उदर निर्वाह माटे हजारो लोको साधुना वेषमां फरता जोवामां आवे छे. तेओ दुराचारी होय छे एटलुंज नहीं पण साधुनां कपडां पहेरेलां छतां उघाडी रीते साथे रामकीभो लईने फरतां पण शरमीता नयी. कोळी, वावरी विगेरे गुन्हा करनारी जातोना लोको पण साधुनो वेश करी चोरी करवानो के खातर पाडवानो लाग शोधता पण फरता जोवामां आवे छे. आवा लोकोनी भरती रङ्गळता, रखडता, रोगपीडित, भुखे मरता, अपंग आंधलां वगेरे अन्य प्रकारना लोकोयी थाय छे अने तेमनी साथे ख्वीओ अने छोकरां पण जोवामां आवे छे अने ते घणे भागे काढी आणेलां आगर तेमना जेवाज रखडता रङ्गळता मालमे पैडी आववाधी सार्थे लांधेलां होय छे. आखा हिन्दुस्थानमां लगभग साठ लाख जेटली आवा साधुओनी मोटी संख्या कंईपण महेनत कर्या वगर बीजाओनी कमाई उपर आ-जीविका चलावे छे तेथी अनुत्पादिक द्रव्यनां केटलो बत्रो व्यय थाय छे तेनो सहेज खाल करी शकाय छे.

जैनधर्म.

१८. हिन्दु अने जैनधर्म जूळा छे तोपण ए बनेमां केउलीक बाबतोमां घणी जैन धर्ममां संन्यास दीक्षा.

जैन हिन्दुमां संन्यास लेवो कहे छे तेने जैनोमां दीक्षा लेवी कहे छे. संसारनी घटमाळमायी छूटी निर्वाण पामवानी इच्छा एज संन्यास दीक्षा लेवाना तत्वज्ञानंतु बने धर्ममां मध्य विन्दु छे. परंतु संन्यास दीक्षा लेवानी लागणी हिन्दुओ करतां जैनोमां घणी तोब्र होय छे; अने जैनधर्म पण तेना अनुयायीओ जेओ आवक तरीके ओळखाय छे तेमने बनती त्वराए दोक्षा लई कर्मनां बंधनमायी सुक्त यई मोक्ष मेळववा आप्रहपूर्वक बोध करे छे.

१९. जैनधर्मना अनुयायीमां सुमारे बे हजार वर्ष उपर बे विभाग (संप्रदाय)

जैनधर्मना संप्रदाय—श्वेतांबर पड्या हताः—(१) श्वेतांबरी अने (२) दिगंबरी. ते अने दिगंबर. समययी ए बने संप्रदाय पोतपोताने मार्ग चाल्या गया छे; ए बे वच्चे विच्छेद पडी गया छतां एमनी वच्चेनो भेद कंई महत्त्वनो नयी. साधुना वस्त्रोमां ए भेद खास देखाई आवे छे. श्वेतांबरोना साधु कपडा पहेरे छे पण

दिगंबरी जैनना पहरता नथी, हाल तो ए भेद नामनोज छे कारण के आजे तो नग्न दिगंबर साधुओं तो गम्या गांठ्याज छे अने ते पण जंगल विगेरे एकांत स्यळमांज रहे छे. श्वेतांबर अने दिगंबर सामाजिक संप्रदायना बंधारणमां भेद छे खरो पण तेनु मूळ पण वस्त्रो संबंधेना मतभेदने लीघेज छे. ए भेदने लीघे तेमना मंतव्यो अने क्रियाकांडमां पण भेद पडी गयो छे. दिगंबरो माने छे के स्त्री निर्वाङ पामी शके नहीं; तेमनी भावना प्रमाणे तीर्थकरो नग्न होय तेथी तेओ तेमनी प्रतिमाने वस्त्र के आभूषण पहेरावता नथी पण श्वेतांबरो पहेरावे छे. जो के बन्ने संप्रदायना मंतव्यो अने भावनाओमां भेद छे अने बन्नेनी वच्चे कंहीं विरोधभाव पण छे तो पण ते विरोध कदापि ताळण रूप धारण करतो नथी, बन्ने संप्रदायोनां मूळ समान छे अने परस्परनो आध्यात्मिक संबंध ते कदापि भूल्या नथी. आम बनवानुं खास कारण ए छे के एक संप्रदायना लोको बीजा संप्रदायना आध्यात्मिक अने आधिमौतिक ग्रंथोनो उपयोग करे छे अने एक संप्रदायना विद्वानोए बीजा संप्रदायना ग्रंथो उपर टीकाओ पण लखी छे.^१

२०. श्वेतांबरी जैन धर्मनो एक नवो संप्रदाय सुमारे साडी चारसो वर्ष उपर स्थानकवासी संप्रदाय. उपस्थित यथो छे. जेम मुसलमानी राज्यकालमां तेमना मूर्तिपूजा विरोधीना वलणने लीघे हिंदुओमां नानक, दाढु ९ विंगेरे सुधारक उभा थ्या हता अने तेमणे मूर्तिपूजा विरुद्ध विरोध उभो करी पौतपोताना झूदा संप्रदाय स्थाप्या हता, तेम जैनोमां पण लोकाशा नामना अमदावादना श्वेतांबरो पंथना एक श्रावके मूर्तिपूजा विरुद्ध विरोध उभो कयों हतो. काळे करीने खवाई जता केटलाक ग्रंथोनो समूळगो नाश न थई जाय एटला माटे तेणे तेनी नकलो करावी लीधी अने ते वांचवाथी तेने एवुं जणायुं के ए ग्रंथोमां तो ते समये चालती मूर्तिपूजा हतीज नहों. आयी तेणे विशेष संशोधन करवा मांडयुं, ते उपरथी ते एवा निर्णय उपर आव्यो के सूत्रोमां मूर्तिपूजा स्वीकारेलीज नयी. ते उपरथी तेना मतने संमत थनाराए एक नवो संप्रदाय उभो कयों ते ढुंडीआ (शोधनार) नामे प्रसिद्ध यथो अने गुजरातना घणा श्रावकोने पोताना शिष्य बनावी शक्यो. ढुंडीआ पोताने स्थानकनासी श्वेतांबर कहे छे कारण के ते संप्रदायना सर्व व्यवहार मंदीरमां नहि पण 'स्थानक' मां उपाश्रयमां थाय छे. संख्यामां आजे स्थानकवासीओ अने दिगंबरो मठीने लगभग मूर्तिपूजक श्वेतांबरो जेटला छे अने तेथी जैनधर्मना त्रीजा संप्रदाय जेवो एमना संप्रदायने गणी शकाय एम छतां पण स्थानकवासी पोताने श्वेतांबरज माने छे; कारण के थोडा मतभेदने बाद करतां घणीखरी रीते ते श्वेतांबरोंने मळता छे.^२

१ (१) वडोदरा राज्यनो १९११ नो सेन्सस रिपोर्ट पान ९२. तथा (२) प्रांकेसर ग्लाझेनाथ कृत जैन धर्म पान ४०.

२ वडोदरा राज्यनो १९११ नो सेन्सस रिपोर्ट पृष्ठ ९३.

२१. श्वेतांबरोमां तथा दिगंबरोमां पेत्रा शाखाओं छे ते पकी एक तेरापंथी तेरापंथी। तरीके ओळखाय छे, कारण के ए पंथने पुष्टी अपनारी संख्या मूळमां १३ (तेरा) हती। तेरा पंथ साधु जीवन

अतिशय प्रबल भावे पालवानो आग्रह राखे छे। माबाप के वालीनी लेखी परवानगी वगर कोईने दीक्षा आपवा देतो नथी अने दीक्षानी क्रिया जाहेरमां खुल्डी रीते करावे छे।^९

२२. आगळ जणाव्युं छे तेम संन्यास दीक्षा लेवानो खरो उद्देश कर्मनो क्षय करी मोक्ष मेलववानो छे अने ते जैन धर्मना अनु-जैनधर्ममां दीक्षा।

यायीओ घणी सारी रीते समजेला छे। तेमना धर्मप्रयो उपरथी तथा तेमना आचार विचार उपरथी स्पष्ट जणाय छे के बीजी कोईनण त्यागी संस्था करतां सामान्य रीते जैन त्यागी संस्था (साधु साध्वी) वधारे त्यागवाळी अने चढीयाती छे।

२३. संसारना भौतिक प्रयासोने असार मानीने जेमणे तप करवा अने धार्मिक ध्यान करवा दीक्षा लीधी होय छे ते साधु अने साध्वी जैनसाधुए पालवानां पांच कहेवाय छे। जैन गृहस्थोए (श्रावकोए) पालवानां पांच व्रत साधुओए पण पालवानां छे पण तेमणे ते गृहस्थो करतां वधारे सख्त रीते अने तीव्र भावे पालवानां होय छे। एटला माटे गृह-स्थना ए व्रतने अणुव्रत कहां छे अने साधुना व्रतने महाव्रत कहां छे; ते नीचे प्रमाणे छेः—

(१) अहिंसा-कोई जीवनी हिंसा के हत्या अजाणे पण न थाय तेवो प्रयत्न करवो।

(२) असत्य त्याग-पोताना शब्दे शब्द एवी रीते तोली तोलीने बोलवा के अजाणे पण जुँदु बोली जवाय नहीं।

(३) अस्तेय-जे तेना मालिके आप्युं नथी ते लेवायज नहीं।

(४) ब्रह्मचर्य-मैथुननो त्याग करवो।

(५) अपरिप्रह-मिलकतनो त्याग करवो।

२४. यतिव्रत पालवुं ए घणुं कठण काम छे। संयमनो भार वहन करवो, ब्रह्मचर्य कोण दीक्षा लई शके, पालवुं, टाढ तडका सहन करवा, ज्ञाननो अभ्यास करवो अने तप आदरवुं ए विगेरे विषम कार्यो यतिने करवां पडे छे। माटे तेवा पदने लायक होय तेज ते पद ग्रहण करे एवा उद्देशयी

^९ संसस ऑफ इंडोआ रिपोर्ट, सन १९२१ अप्रैलिक्स ४ थुं.

દીક્ષા લેવાને કોણ લાયક છે એ જૈન શાસ્ત્રમાં વિગતવાર રીતે ઠાવેલું છે.^૧ દીક્ષા લેવાને યોગ્ય પુરુષનાં લક્ષણ નીચે પ્રમાણે ઠરાવેલાં છે:—

- (૧) આર્થ દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલો;
 - (૨) ઉચ્ચ જાતિ અને કુલનાલો;
 - (૩) જેના કર્મસલ ઘણે ભાગે ક્ષય થયેલાં છે એવો;
 - (૪) નિર્મલ બુદ્ધિનાલો;
 - (૫) મનુષ્યજન્મ દુર્લભ છે, જન્મ એ મરણનું નિમિત્ત છે, સંપત્તિઓ ચપલ છે, ઇંદ્રિયોના વિષય દુઃખના હેતુ રૂપ છે, સંયોગમાં વિયોગ રહેલો છે, ક્ષણે ક્ષણે મરણ થયાજ કરે છે અને કર્મના ફળ ભયંકર છે, એ પ્રમાણે સંસારની અસારતા જાણવાનાલો;
 - (૬) અને તેથી સંસાર તરફ વૈરાગ્યમાટ્ર ધારણ કરનાર;
 - (૭) ઓછા કષાયવાલો ;
 - (૮) થોડા હાસ્યાદિ કરનારો;
 - (૯) કૃતજ્ઞ (કરેલા ગુણને જાણનાર);
 - (૧૦) વિનયવન્ત;
 - (૧૧) દીક્ષા લીધા પહેલાં પણ રાજા, પ્રધાન અને પોતાના ગામના લોકોમાં પ્રતિષ્ઠા પામેલો;
 - (૧૨) કોઈનો દ્રોહ નહીં કરનારો;
 - (૧૩) કલ્યાણકારી અંગવાલો (પાંચે ઇંદ્રિયો સહિત તેમજ ભવ્ય મુખાકૃતિ-વાલો);
 - (૧૪) શ્રદ્ધાવન્ત;
 - (૧૫) સ્થિરતાવાલો (વિધન આવતાં આરંભેલું કાર્ય મૂકી ન દે એવો);
 - (૧૬) અને આત્મસર્પણ કરવા (દીક્ષા લેવા) ગુરુસમીપે આવેલો;
- એ પ્રમાણે સોલ ગુણવાલો હોય તેને દીક્ષા લેવાને યોગ્ય ગણેલો છે.

૨૯. દીક્ષા લેનારમાં કેવા ગુણ હોવા જોઈએ એ દર્શાવવા ઉપરાંત કોને દીક્ષા દીક્ષા સાટે નાલાયકી. આપી શકાય નહીં એ પણ કેટલાક પ્રશ્નોમાં બતાવ્યું છે, કે જેથી કોઈ નાલાયક પુરુષને દીક્ષા અપાઈ જાય નહીં. આચારદિનકરમાં જણાયું છે કે નીચેના અદાર પ્રકારના પુરુષોને દીક્ષા આપી શકાય નહીં:-

- (૧) બાળક-આઠ વર્ષથી નાનો;
- (૨) વૃદ્ધ-સાઠ વર્ષ ઉપરનો (બીજાના મત પ્રમાણે ૭૦ વર્ષ ઉપરનો);

^૧ હરિમદ્રસ્ત્રિકૃત ધર્મબિંદુ, અધ્યાય ૪, સૂત્ર ૬.

- (३) क्लीब (स्त्रीनां अंग जोई क्षमातुर थाय एवो);
 (४) नपुंसक;
 (५) जड (भाषाजड, शरीरजड अने करणजड);
 (६) व्याधित (भिक्षा विग्रे मार्गीने जे खाई शके नहीं एवो रोगी);
 (७) स्तेन (दरेक ज्ञातनी चोरी करनार);
 (८) राजापकारी (राजाना भंडार, अंतःपुर, शरीर, कुंवर विग्रेरेनो द्रोह करनार);
 (९) उन्मत्त (ममज गुमाववाथी शून्य चित्तवाळो);
 (१०) आंधलो;
 (११) दास (धनथी खरीदायलो, दासीथी उत्पन्न थयेलो, अथवा दुष्काळादिकमां द्रव्यवडे खरिदेलो अगर लेणा माटे रोकी राखेलो);
 (१२) दुष्ट (कषायथी अने इंद्रिय विडासथी निर्बल बनी गयेलो);
 (१३) तीर्थकरोनां नाम पण याद राखी शके नहीं, एवो निर्बुद्ध;
 (१४) ऋणी (राजा, व्यापारी आङ्गक नोकर—जे दास होय ते);
 (१५) जुंगित (वेश्यानो निंदायलो धंधावाळानो विग्रेरे नीच कुळमां उत्पन्न थएलो अथवा ब्रह्मधाती विग्रेरे नीच कर्म करनारो);
 (१६) अवबद्ध (धन लईने अथवा विद्या आदिक लेवा माटे जेणे अमुक काम अमुक मुदत माटे माथे लीधां छे अने जेनी दीक्षायै ए काम अटकी पडे लेवो);
 (१७) भूत्य (रोजनो अगर महिनानो पगार ठसवी जे कोई श्रीमन्तने घेर नोकर रहो होय ते) अने
 (१८) शिष्य निष्केटिका (जेने दीक्षा आपना माटे तेना माबापनी के वालीनी के वडीलोनी संमति न होय अने जेने वडीलोनी रजा विना चोरी संताडीने आण्यो होय).

उपर जे अढार प्रकारना पुह्सोने दीक्षा आपी शकाय नहीं एम जणाव्यु छे तेवाज दोषोवाळी अढार प्रकारनी स्त्रीओने पण दीक्षा आपी शकाय नहीं, अने ते उपरांत

(१९) गर्भवती अने

(२०) धावणा बाळकवाळी स्त्रीने पण आपी शकाय नहीं.^१

२६. हिंदु अने जैन वंने धर्म प्रमाणे संन्यास दीक्षा लीघेता साधुए सर्वे प्रकारनी धन संपत्तिनो त्याग करवो पडे छे अने धर्म सादुं जीवन गाळवुं पडे छे. पण हिंदु साधुओमां ए धोरणमां एटली बवी शिथीलता थई छे के तेमांना घणाखरा घणो वैभव राखे छे अने सुख-

^१ आचारस्थिकर पान ७४.

चेनमां दहाडा काढे छे, तोपण तेमना सामे कोई बोली शकतुं नथी. एमने मुकावले जैन साधु घणो सारो त्याग राखे छे. ते मात्र एक पहेरवानुं अने एक ओढवानुं ए प्रमाणे बे वस्त्रज राखे छे. साधारण साधु श्रेत अने संभेगी पीछास पडतां कपडां राखे छे. पोताना हंसेशना उपयोगना माटे लाकडाना (धातुनां नहीं) जळपात्र अने आहार-पात्र, पीतां पहेलां जळ गळवाने माटे जळगरणी, वायुनां जंतुना हिंसा न थाय एटला माटे मोठे बांधवानी मुखपट्ठो (स्थानकवासी साधु आ मुखपट्ठो कायमनी मोठे राखे छे), बेसतां जंतुनी हिंसा न थाय एटला माटे बेसतां पहेलां ते स्थान वाळीने स्वच्छ करवा माटे एक रजोहरण अने एक दंड एटली वस्तुओ साधु राखी शके छे. मूर्तिपूजक श्वेतांबर साधु ते उपरांत पांच 'अक्ष' (स्थापनाचार्य) ने चंदननी नानी लाकडीओ (ठवणी), एक पुस्तक, के एवी किंई वस्तु पोताना गुरुना स्मरणचिन्ह रूपे राखे छे. साधुए माधु ढांकवुं न जोईए अने हज़मत न करावतां वाळ पोताने हाथे खेची काढवा जोईए (पण आज काळ तो ए दुःखजनक विविने बदले कातरनो उपयोग पण करवामां आवे छे); तेणे सर्व प्रकारना विलासनो त्याग करवो जोईए; तेणे न तो न्हावुं के न तो दातण करवुं; तेणे खुल्ली जमीन उपर के वीजी कोई कठण पथारी उपर सूबुं; तेणे देवता सळगाववो नहीं अने रसोई रांघवी नहीं पण जैन गृहस्थयोने त्यारी भिक्षा मागी लावीने खावुं; जैनेतरने त्यां भिक्षा माटे जवुं नहीं; भिक्षा मागवा दिवसमां एकजवार जवुं अने जे घरनां वारणां उद्याडां होय तेज घेर जवुं; गृहस्थयो घेर जे अन्न वध्युं होय अने जेनो उपयोग ते करनार न होय तेज अन्न लेवुं अने खास राते साधु भिक्षाने माटे जे अन्न रंधायुं होय ते न लेवुं; साधारण रीते प्रत्येक साधु भिक्षा मागवा जता नथी, पण तेमना पैकी एक जाय छे, ते वीजा साधुओने माटे पण भिक्षा उपाश्रयमां लई आवे छे अने त्यां बधा ते वहेची खाय छे. कपडुं, रजोहरण के एवी वीजी साधु जीवनमां उपयोगी चीज स्वीकारी शकाय पण ते उपाश्रयमां आणीने पोताना गुरुने चरणे मुकवी जोईए. पछी गुरु ते वस्तु पैकी जेने जे आपे ते ते राखे. महावीरना सख्त नियम प्रमाणे तो साधुए एक गाममां एकज दिवस अने नगरमां पांचज दिवस रहेवुं जोईए. पछीना समयमां आ आज्ञाने जरा शिथील करी एक गाममां वधरेमां वधरे एक सप्ताह सुवी अने एक नगरमां वधरेमां वधरे एक मास सुधी रही शकाय एम ठारवुं छे. वरसादनी ऋतुमां-चातु-मासमां-तो सर्व साधुए विहार अटकावी दई एकज स्थाने चार मास रहो जवुं जाईए के जेयी जीव हिंसा थाय नहीं. वळी मुख्यवे करीने पगे चालीने फरवानुं होवायी तेने माटे पण चोमासा पछी अनुकूलता थाय. साधु साध्वीओए तेमने माटे श्रावकोप बांधेला जूदा जूश उपाश्रयमां रहेवुं जोईए. आ उपरांत साधु साध्वीना जीवनमां पळवाना बांजा घणा सख्त नियम जैन शास्त्रामां विगतवार विविरूपे बतावेला छे. अशुद्धतानुं अने सांसारिक भावोनुं निवारण करवाना अने दीक्षित जीवनने योग्य अभ्यासनी अने तपना अनुकूलता करवाना हेतुयी ए नियमे घडेला छे. साध्वीओ माटेना

नियमो साधु माटेना नियमो करतां कईक वधारे आकरा के कारण के तेमुं पतन थवानो वधारे संभव छे.^१ आवा सद्गत नियम राखवानुं कारण एम जणाय छे के खरेखरा त्यागी विचारथी जे दीक्षा लेवा इच्छतो होय तेज एवुं कष्टमय जीवन गाळवाने माटे आगळ आवे अने एवा नियम पळाय त्यारेज दीक्षा लेवानो खरो उद्देश पार पडे.

२७. जेवी रीते दीआ लेनारनी लायकी ठावी छे^२ तेवी रीते दीक्षा आपनार दीक्षा आपनार गुरुनी लायकात. गुरुनी पण ठावी छे. दीक्षा आपवाने योग्य एवा गुहनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे वर्णव्यु छे:--

- (१) जेणे विधि प्रमाणे दीक्षा अंगीकार कोली होय एवो;
- (२) गुरुकुलनी सारी रीते उपासना करनार;
- (३) असखलितपणे शील पाळनार;
- (४) आगमोनुं सारी रीते अध्ययन करनार;
- (५) तेथी निर्मल बोधने लीघे तत्त्वने जागनार;
- (६) उपशान्त एटले मन, वचन, कायाना त्रिकारोने रोकनार अने वश करनार;
- (७) साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध संब प्रत्ये वात्सल्यवालो;
- (८) प्राणी मात्रनुं कल्याण करवामां मशगुल;
- (९) जेनुं वचन सर्व मान्य राखे एवो;
- (१०) गुणी पुरुषोने अनुसरी वर्तनारो;
- (११) गंभीर;
- (१२) विषाद (शोक) रहित;
- (१३) उपशम लब्धीवालो;
- (१४) सिद्धांतना अर्थनो उपदेश करनार अने
- (१५) गुरु पासेशी गुरुपद मेळवनार.

ए प्रमाणे पंदर गुण दीक्षा आपनारमां होवा जोईए.

२८. दीक्षा आपतां पहेलां गुरुए दीक्षा लेवानी उमेदवाळामां परिच्छेद २४

दीक्षाना उमेवारनी परीक्षा मां कहेली लायकी होवा विषे तथा परिच्छेद २९ मां करवी. कहेली नालायकी नहि होवा विषे खात्रो करी लेवी जोईए. दीक्षा लेवाने पोताना समीप आवेला पुरुषने तेणे प्रथम प्रश्न पूछ्वो के हे वत्स ! तुं कोण छे अने श्या माटे दीक्षा ग्रहण करे छे ? ए

^१ ग्लावेनाथकृत Jainism तुं भावांतर, पान ३४४ थी ३४८.

^२ धर्मसंग्रह श्लोक ८१, ८४; धर्मबिंदु अध्याय ४ थो, सूत्र ७ मुं.

शिवाय बीजा प्रश्न पण पूछताना हो^१ अने जो ते उपरथी खात्री थाय के दीक्षानो उमेदवार दीक्षानु महत्व समजीने दीक्षा लेवा आव्यो हो तो पछी तेने दीक्षा आपत्ती। परीक्षा करवानो वखत सामान्य रीते ६ मासनो कद्यो हो पण पात्रनी योग्यता होय तो तेथी योडा वखतमां पण दीक्षा आपी शकाय हो अने उमेदवारने वधारे ज्ञन आपवानी तथा तेनी वधारे कसोटी करवानी जग्हर जग्गाय तो तेथी वधारे वधारे वखतपण लई शकाय हो.

२९. दीक्षा आपवाने प्रसंगे लग्नना जेवो समारंभ करवामां आवे हो; शुभ मुहूर्त जोवामां आवे हो अने सगांव्हालां अने स्नेहीओने जैन दीक्षानी किया,

रुब्रु कही अथवा कंकोत्री मोकली आमंत्रण करवामां आवे हो. जे खर्च करवानो होय ते जो स्थिति सारी होय तो दीक्षा लेनार के तेनां सगां संबंधी करे हो, अने तेम करवानु बनवा जेवुं न होय तो बीजा श्रावको फाझो करीने खर्च करे हो. श्रावको तथा श्राविकाओ सारां कपडां पहरी भेगां थाय हो अने दीक्षा लेनारने तेना बापने घेरेथी पालखो के घोडा उपर बेसाडीने वाजते गाजते वर-धोडो काढी दीक्षानी किया थवानी होय ते जग्योए लई जाय हो. त्यां आचार्य अने बीजा साधु वाट जोता वेठा होय हो. नगर वहार वाडी, शेरडीनो वाढ अथवा आसो-पालव के बीजा कोई पवित्र वृक्ष नीचे के गुहना स्थानकना चोकमां ए किया थाय हो. त्यां मंडप बांधेलो होय हो अने तेमां वेदी रचेली होय हो. भेगा थयेला श्रावक श्राविकानी मेदनी समक्ष त्यां जैन प्रतिमानी पूजा अने पछी प्रदक्षिणा करवामां आवे हो; स्तोत्रो गावामां आवे हो अने मंत्रो भणवामां आवे हो. त्यार पछी दीक्षा लेनार पोताने बक्षीस के चांडा तरिके मळेला रकम पोतानो मरजी प्रमाणे धर्मदामां आपी दे हो, अने पोतानां बस्तोनो अने आभूषणोनो त्याग करी साधुनां वस्त्र पहरे हो. त्यार पछी ते पोते पोताना वाढ उखेडी नांखे हो. अथवा आ दुःखजनक किया गुरु के बीजा पासे करावे हो. त्यार पछी मंत्रो अने सूत्रो भणीने सामायिक चारित्र पाठ्यवानु ब्रत ले हो अने नवुं नाम धारण करे हो. स्थानकवासी साधुओनां नाम घणे भागे तेमनां पूर्वावस्थानां नामने मळतां राखे हो. त्यार पछी माथां उपर ग्रासक्षेप करवामां आवे हो. पठी समवसरणनी प्रदक्षिणा करीने ते नवीन साधु गुरुने अने बीजा साधु-ओने नमन करे हो अने श्रावक श्राविकाओ ए नवीन साधुने नमन करे हो. साध्वीनी दीक्षाने प्रसंगे जे किया थाय हो ते उपर बताव्या प्रमाणेनी साधुने दीक्षा आपवानी कियाने मळती होय हो. तेशपंथीमां दीक्षा लेनारनो भाई के बीजो नजीकनो सगो दीक्षा लेनारनी पाठ्य उभो रहे हो अने दीक्षानी किया करता अगाउ दीक्षा लेवा विषे कुटुंबनी संमतिनो रखेठो एक कागळ आचार्यने आपे हो अने ते मळ्या पछीज आचार्य दांक्षानी किया करे हो.^२

१ हरिभद्रसूरि कृत धर्मविदु; अध्याय ४, सूत्र २४. पंचवस्तु सूत्र पान ७.

२ जैन धर्म, पान ४३४ थो ४३५.

३०. उपर प्रमाणे जेने दीक्षा आपवार्मा आवी होय ते साधु (यति) तरीके आचार्य.

ओळखाय छे. श्वेतांबरोमां दीक्षा थया पछी साधुने आध्यात्मिक क्रियाओं करवानी होय छे; ते द्वारा ते छेदोपस्थापनीय नामे चारित्रना बीजा पद उपर आवे छे. तप, कषाय शुद्धि अने भौतिक वासनामांथी मुक्ति द्वारा ए चारित्रनां बाकीनां त्रण पद उपर चढे छे. अटला माटे गुह जे बतावे ते धर्म साधुए पालवानो होय छे. ते उपरांत बीजा अनेक विधि पालवाना होय छे. ए धर्मनुं अने विधिनुं उल्लंघन थतां तेणे प्रतिक्रमण अने प्रायश्चित्त करवुं पडे छे. ए प्रमाणे अनेक प्रकारनी आध्यात्मिक क्रिया कर्या पछी यतिने लायक उपाध्याय के आचार्यने पदे लेवामां आवे छे. ए प्रसंगे अनेक प्रकारनी तैयारीओं थाय छे, समवसरणनी प्रदक्षणा थाय छे, स्तोत्रो अने मंत्रो भणाय छे अने अनेक प्रकारनी क्रियाओं थाय छे. आचार्य बनाववानी क्रिया महत्वनी छे. ते प्रसंगे आचार्य थनारने माटे पहेरवानां वस्त्रने राते अमुक क्रियाशी शुद्ध करवामां आवे छे. त्यार पछी वे आसन मुकाय छे, तेमांना एक उपर गुह बेसे छे अने बीजा उपर अक्षसमूह (स्थापनाचार्य) मूकाय छे. केठलीक क्रिया थया पछी गुह आचार्य थनार यतिना कानमां त्रणवार सूरिमेत्र भणे छे अने तेना हाथमां अक्षसमूह मुके छे. त्यार पछी तेनुं नवुं नाम पाडे छे ते घाँगु कराने तेना यति तरीकेना नामने उलटावीने पाडे छे अने तेने सूरि पद लगाडवामां आवे छे; जेम के इंद्रविजयनुं नवुं नाम विजय-ईंद्रसूरि पाडवामां आवे छे; त्यार पछी ए नवा आचार्य बेमाना एक आसन उपर बेसे छे अने गुह तथा हाजर होय ते बीजा बधा एमने नमस्कार करे छे.

३१. श्वेतांबर अने दिगंबर ए बे मोटा संप्रदायमां अनेक गण, गच्छ अने गच्छ.

संघ होय छे. सर्वसामान्य आचार्यी के विचारयी भिन्न यता गुरुओं पोतानो संप्रदाय जूदो करी बेसे छे तेने लीधे एवं अलग अलग मंडळ बनेलां होय छे. छेक प्राचीन काळमां भद्रवाहुना रचे श कल्पसूत्रमां पण एवी रीते जूदा पडेला गण, कुळ अने शाखानां नाम आपेलां छे. हालमां मूर्तिपूजक श्वेतांबरोमां जे गच्छो छे तेमां तपा, खरतर, पायचन्द अने अंचल ए मुख्य छे. समस्त गच्छना उपरी भट्टारक अथवा श्रीपूज्य कहेवाय छे. गच्छमां बीजा पण यतिमंडळ होय छे अने ते दरेकना उपरी आचार्य कहेवाय छे. आचार्यनो नीचे उपाध्याय, वाचक (पाठक) होय छे ते शास्त्रनी कथा करे छे. उपाध्ययनी नीचे पंन्यास होय छे ते यतिओए करवानी क्रिया उपर नजर राखे छे. पंन्यास नीचे गणी होय क्ले. तेमणे भगवती सुधारो अभ्यास करेलो होय छे अन ते बीजा मुनिओ उपर नजर राखे छे. उपरना बधा मुनि कहेवाय छे.

३२. हिंदु धर्मना त्यागीओ उपर संसारीओनो बिलकुल अंकुश नयी. हिंदु-ओमां सन्यासी साधु भष्ट थाय ता तेमना उपर नयी आचार्यनो अंकुश के नयी हिंदु धर्मना गृहस्थोनो अंकुश. परिणाम ए आव्युं छे के हिंदुओ आवा मिथ्याचारीने

आश्रय आपी अधर्मने अणघटतुं उत्तेजन आपे छे. हिंदु गृहस्थो पोताना॑ देवस्थान अने साधुओ उपर अंकुश राखे ए ईच्छत्रा जोग छे अने आ बाबतमां जैनोनी संघ-व्यवस्थामांथी तेमणे घणुं शीखवानुं छे. आवा मिथ्याचारी हिंदु त्यागीओने लीधे शंकराचार्यना पूर्वगामी कर्ममिमांसकोए त्यागाश्रमनो बळवान विरोध कर्यो हतो. त्यागनी महत्ता तेना वैराग्य अने तपोबळ उपर छे. आ वे अंशनो लोप थाय तो त्याग प्रजानो भारे अनर्थ करे छे. आथी त्यागनो पुनरुद्धार हिंदुओमां शंकराचार्ये कर्यो त्यारे मठामनाय व्यवस्था राखी हती अने वैदिक प्रजाए तेने टेको आप्यो हतो. हाल ते व्यवस्थानो लोप यथो ह्ये अने शृंगेरी मठ शिवाय अन्यत्र संन्यासीओ अने त्यागीओ उपर कई पण अंकुश राखी शके एवी व्यवस्था जोवामां आवती नथी. मात्र शंकराचार्यनी गादीना झगडा अने ताणाताण विना कई पण धर्मकार्य थतुं जोवामां आवतुं नथी; अने तेटलाज माटे थोडा लायक संन्यासीओने अपवोद तरीके बाद करतां एकंदर साधु संस्था उपर समजदार लोकोमां विशेष आस्था रही नथी.^३

३३. जैनोमां तेथी जूदी वस्तुस्थिति छे. तेमनामां श्रावक श्राविका, साधु अने साध्वी, ए चारेनो संघ बनेलो होय छे. संघनुं धार्मिक संघनी साधु उपर असर.

शासन साधुओना हाथमां होय छे अने एमनी मर्यादा नीचे वीजा सौ चाले छे. साधु अने साध्वीओनो जीवन निर्वाह धार्मिक श्रावकोना दानने आवारे चाले छे अने तेथी तेओ तेटले अंशे श्रावकोने आधीन छे. जैन धार्मिक साधुसंघ अने श्रावकसंघ वच्चे बहु निकटनो संबंध छे. छेल्डा तीर्थकर महावीर स्वामीए संघनी जे दृढ योजना बांधेली छे तेने अनुसरीने ते काळयी श्रावक संघ साधुसंघ उपर कई अंशे सत्ता भोगवतो आवे छे अने तेथी सत्ता मेलववाना के कोई सांसारिक बावतोमां माथां मारवाना प्रयत्नोदी साधुने दूर रहेवुं पडे छे; अने साधु जीवन उपर संयम राखीने तेमने पोतानी उच्चता जाळवी राखवी पडे छे. राजपूतानाना अने गुजरातना साधुसंघमां धीरे धीरे श्रावकोने एवी सत्ता मळी गई छे के तेओ साधुओनी दीक्षा, शिक्षा अने चारित्र उपर कईक सत्ता भोगवे छे. आना केटलाक दाखला प्रोफेसर हेल्मूट ग्लाझेनाथे पोताना जैन धर्मना पुस्तकमां आपेला छे. ते पैकी एक एवो छे के १९१३ ना अरसामां जीनसेन नामनो साधु श्रावको पासेयी भिक्षा लईने पोतानो उदर निर्वाह करतो हतो. केटलाक जैनोए ए साधुना पूर्वजीवन विषे तपास चलावी तेमां एवुं मालम पडयुं के ते साचो साधु नहोतो पण जेम तेम निर्वाह चलावी शकाय एटला माटे तेणे साधुनो स्वांग धारण करी लीनो हतो. ए मीथ्यामुनि सामे श्रावकोए पगलां भरवा विचार कर्यो, पण एटलामां ते मुनि झटपट नासी गयो अने सजामांथी वची गयो. बीजो एक दाखलो एवो छे के पालीताणामां एक साधु सोनानी फेमवालां चस्मा पेहरतो हतो. साधुओ कोईपण प्रकारनी धातु पोतानी पासे राखी

^३ दि. वा. नर्मदाशंकर देवशंकर महेतानुं भाषण पर्युषण पर्वनां व्याख्यानो. वर्ष २ अं. उत्तरार्ध पान ७७-७८,

शके नहीं तेथी श्रावकोए चस्मां जोया त्यारे तेमणे जाहेर कर्यु के संघनुं शासन तोड्याने कारणे तेने साचो साधु मानी शकाय नहीं. तेव्रीज रीते तपागच्छनो एक साधु पगे विहार करवाने बदले आगगाडीमां मुशाफरी करतो हतो तेथी जे श्रावको तेना संबंधमां आवता ते दने साधु लेखता नहीं. राजकोटमां एक स्थानकवासी साधुए पोताना गुरुने बचकुं भर्यु हतुं, तेथी तुरतज तेने संघ बहार काढवामां आव्यो हतो.^१

३४. श्रावकोनी सत्ता साधारण साधु उपरज चाले छे एम नथी. संघना उपरी श्रावकोनी साधु उपर सत्ता. **श्रीपूज्य उपर पण चाले छे.** अयोग्य पुरुषने गादी१ वेसा-

डवानी विधि प्रमाणे चूंटणी थई गई होय तोपण तेमने गादी१ वेसतां श्रावकोए अटकाव्या छे. श्रीपूज्य साथे संघने अणबनाव थयो होय अने ते कारणे तेमने संघ बहार कर्या होय एवा प्रसंगो पण पट्टवलीमांथी मळी आवे छे. श्रावकोनी आवा प्रकारनी सत्ता तेमना पोताना संघमां साधारण रीते चाले छे. साधुओना चरित्र उपर श्रावकोनो आटलो अंकुश होवा छतां पण कोई कोई वार तेमना औदासिन्यने अनेतु अज्ञानने लीधे यतिओ साधुवत बहु ओछां के नहीं जेवां पाळे छे अने तेमनामां पूरो सांसारिक भाव आवी जाय छे. आवा प्रकारना श्वेतांबर साधुओ मोटे भागे ‘ गोरजी ’ कहेवाय छे. तेओ साधुवत एवी शिथिलताथी पाळे छे के खरा जैन तेमने साचा साधु मानता नथी. हलकी वर्णना अने अनाथ बालकोने तेमनी बाल्यावस्थामां तेओ खरीदी ले छे अने तेमने साधु बनावे छे. तेमनामां बहु संस्कार होता नथी, तेम बहु शास्त्रज्ञान पण होतुं नयी. धर्मना विधि पाळवामां तेओ बहु शिथिल रहे छे अने ते मात्र बाह्याचार तरीके पाळे छे. निरंतर विहार करवाने बदले तेओ एकज स्याने पडी रहे छे, स्वादिष्ट भोजन जमे छे, पथारीमां सूर छे अने प्रसंगोपात ब्रह्मचर्यनो पण दोष करे छे. तेओ द्रव्य ईंवीकारे छे अने संघरे छे अने एवो बचाव करवाने शरमाता नथी के महावीरे धातुना शिक्षा राखवानो निषेध कर्यो छे पण नोटो राखवानो निषेध कर्यो नथी, तेओ मोटी मोटी संस्थाओनी व्यवस्था चलावे छे अने पोतानी पाळठ चेला कर्या होय तेमने सोंपे छे. तेओ साधनवाळा होवायी नोकरो बिगेरे राखी भभकाभेर रहे छे अने ज्योतीष अने जादू विद्या पण जाणवानो डोळ करे छे. अथी केटलाक श्रावको तेमनाथी डरे छे अने तेमना आचार विचार साधु योग्य नहीं होवा छतां पण तेमने दान आपे छे. आवा पतित साधुओनी सांसारिक भावनाने दूर करी साधुसंघने सुधारवा १७ मा सैकांमां श्रीमान् यशोविजय नामना मुनिए प्रयत्न करले अने तेना परिणामे साचो साधुर्वा अने गोरजी वर्ग ते वखतथी जूदो पडी गयो छे. नवा संप्रदायना साधु, अशुद्ध रहेला गोरजी यतिथी जूदा देखावाने माटे ते वखतथी श्वेतने बदले केसरीयां वस्त्रो पहेरे छे अने ते संवेगी कहेवाय छे.

^१ जैनधर्म पान ३३०-३४०.

३५. जेम श्रावकोनी साधु उपर सत्ता छे तेम साधुओनी श्रावक उपर पण छे. ए संबंधमां प्रोफेसर गलाहेनाथना जैन धर्ममां लख्युं छे तेम साधुओनी श्रावको उपर सत्ता। “धर्मज्ञ साधुओनी सत्ता श्रावकोना धार्मिक जीवन उपर धणी चालती अने हर्जाए धणी चाले छे. विश्वाळ जनसमाजना अने सारा धनवानोनां जीवन उपर असर करी होय अने ए जीवनने जैन धर्मनी भावनाने अनुसरतां बनाव्यां होय एवं अनेक हितैषों साधुओनां नाम आपणने इतिहासमांथी मळी आवे छे. समस्त जैन समाज उपर भारे धार्मिक असर करता होय एवा साधुओ आजेय छे. तेओ दुःख ने संकटने प्रसंगे श्रावकोनी साथे उभा रहे छे, एमने धार्मिक बोध आपे छे अने बीजा धर्मनी सामे शास्त्रार्थ करवानां साधनो आपी पोताना धर्मनुं रक्षण करे छे; अने एवी रीते चारे बाजुएशी बीजा संप्रदायोनी वच्चे आवेला जैन धर्मने साच्ची रखे छे. हमणांज (१९२२ मां) स्वर्गवासी थयेला श्री विजयधर्मसूरि जैवा सुविख्यात साधुओने वधा संप्रदायना जैनो बहु मान आपे छे, एज स्पष्ट रीते देखाई आपे छे के प्रबल व्यक्ति केटली भारे असरे करी शके छे. बीजी बाजुएशी पोतानी धर्मीपत्ताथी अने संघी साथे शत्रुभावे ने संकूचित वृत्तिए वर्ती रोज रोज कलह करा. वीने हल्की वृत्तना साधुओ खाब असर करे छे, एवी दार्घिदर्शी जैनोनी फरियाद पण छे. तेओ कहे छे के आगळ वधता विचारोमां तेमनी अतिशय धर्मीधता मार्गमां बाधा नांखे छे ने जैन धर्मनी अवनति आणे छे.”^१

३६. समाज अने त्यागनी संस्थाओ आपणे तपासींशुं तो मालम पडशो के समये समये सुधारो दाखल थवाने परिणामेज एवी संस्थाओ रसमाजमां अने त्यागी संस्थामां जीवती रही छे. “एकाद बुद्ध के महावीर, जीसस के सुधारानी आवश्यकता, महमद, शंकर के दग्धानंद समये समये जागे छे अने तेओ पोतानी प्रकृति, परिस्थिति अने समज प्रमाणे परापूर्वी चाल्या आवता अमक अमूक समाजोमां सुधारानो प्राण फूके छे अने ते समाजतुं अने त्यागी संस्थानुं चक्र आगळ चाले छे. वळी वखत जतां ए तत्का उपर तेमना अनुगामी तरीके अगर प्रतिस्पर्धीं तरीके बीजा पुरुषो आवे छे अने तेओ पण पोतानी दृष्टिए अमुक फेरफार करी एवी संस्थाओना कुंठित चक्रने वेगवालुं अने गतिशील बनावे छे. एटले सुधारो ए दरेक संस्थानुं जीवन टकाववा माटे अनिवार्य छे.”^२ विवि निषेध गमे तेठला बताव्या होय तोपण वखत जतां कोईपण धर्मता साधुसंगनी अवनति थया वगर रही नव्यी. एतो समय आवे छे के ज्यारे घणा विवि निषेधी मात्र बहारथीज पळाय छे अने प्राचीन व्यवस्था धारे धारे अव्यवस्थित थता जाय छे. जेने लंसारनो मोह उतरी गयो होय अने मुक्तिनी सावना सावरी होय तेमणेज साधु यवुं जाईए. साधु थवानी जेमने अंतरनी प्रवळ प्रेरणा यइ न होय एवा सखनोने दाक्षा अपाय तो तेओ ते दोक्षानुं व्रत

^१ जैन धर्म पान ३४००३४।

^२ पर्युवणपर्वत व्याख्यानो, वर्ष २ अंतुं (पूर्वी) पान ३.

પાછી શકે નહીં અને તેથી સાધુ વર્ગની અવનતિ થાય એ ઉઘડ છે. ટેટલા માટે જૈન સંઘ એવા લોકોને સાધુ સંઘમાંથી દૂર કરવા મૂળયીજ પ્રયત્ન કરતો આવ્યો છે. જેનો સુધારો નહીં તેનું પરિવર્તન નહીં; તેનો તો નાશજ, લોપજ સંભવે છે. એજ રીતે વિચાર વિનાનું સુધારક કાર્ય પણ પુરતું ફળદાયક થતું નથી. પરિચ્છેદ ૩૪ માં જણાવ્યા પ્રમાણે જૈનોમાં તે પ્રમાણે વખતોવખત સુધારો થતો આવ્યો છે. અને તેને લીધેજ તેમની ધર્મ ભાવના તથા સાધુવર્ગની શુદ્ધવૃત્તિ હિંદુર્ધર્મના અનુયાયીઓને મુકાબલે સારી રહી છે. લગ્ભગ પચીસો વર્ષ ઉપર થયેલા છેલ્ણા તીર્થીકર શ્રી મહાવીર સ્વામીના અનુયાયીઓ અને અહિંસા ધર્મ તથા ઉચ્ચ જ્ઞાનના વિસ્તારક જૈન શ્રમણોની સંસ્કૃતિમાં સમયને અનુસરી કદાચ કંઈ શિશ્યીલતા આવી હશે તો પણ હજુ સુધી તે બીજા ધર્મના મુકાબલે સારી રહેલી છે. સમય પ્રમાણે દરેક રાષ્ટ્ર, દરેક પ્રજા, દરેક સમાજ અને દરેક વસ્તુમાં ફેરફાર થતો રહે છે, તે છતાં પણ હિન્દુસ્થાનના સાધુઓમાં જૈન સાધુઓનું સ્થાન ઉંચું જે. આજ પણ તેમના ત્યાગને, તેમની કષ્ટચર્યાને, તેમના વિકટ નિયમોને દુનિયાની કોઈપણ સાધુ સંસ્થા પોહોંચી શકે તેમ નથી. કોડી જેટલું પણ અર્થ-સાધન નહીં રાખવાનું, કોઈને ત્યાં બેસીને નહીં જમવાનું, પીવાનું પણી પણ મારીને લેવાનું, માધ્યાના વાઢ હાથે ઉખેડો નાંખવાનું અને પોતાના ખપ પુરતો સામાન પોતાની ખાંધ ઉપર લાદીને પગે મુસાફરી કરવાનું આજે બીજા કોઈપણ સંપ્રદાયમાં નથી. એટલા માટે આવી ઉત્તમ સંસ્થા શુદ્ધ અને ઉચ્ચ ભાવનાવાળી રાખવાને સાધુ દીક્ષામાં છેલ્લાં કેટલાંક વર્ષથી દાખલ થયેલું હોવાનું કહેવામાં આત્મતું અયોગ્યપણું જાહેરમાં લાંઠી તેમાં સુધારો કરાવવા જૈન ધર્મના કેટલાંક કેળવાયેલા યુવકો તથા શુમેચ્છકો કંઈ સમયયો ઉહાપોહ કરી રહ્યા છે અને તેને પરિણામે અમારે જેની જરૂરિયાત કે બીનજરૂરિયાતનો વિચાર કરવાનો છે તે કાયદાનો ખરડો શ્રીમંતુ સરકાર મહારાજા સાહેબે તૈયાર કરાવી લાગતા વલગતા તરફથી સૂચનાઓ મંગાવી છે.

પ્રકરણ ઇ જું.

અયોગ્ય દીક્ષા અપાય છે કે ?

૩૭. વડોદરા રાજ્યમાં પ્રચલિત મુખ્ય ધર્મોમાં સંન્યાસ દીક્ષા સંબંધી શાસ્ત્રથી કેવી આયોગ્ય દીક્ષા.
રીતે ઠરેલું છે એ વિષે પાછલા પ્રકરણમાં દિગ્રદિશન કર્યા
પછી હવે કેટલાક તરફથી આક્ષેપ કરવામાં આવે છે તેમ દીક્ષા આપવામાં કંઈ અધિત્તિત કે અયોગ્ય થાય છે કે કેમ અને થતું હશે તો શું અને તે અટકાવવા શા ઉપાય લેવાની જરૂર છે તેનો વિચાર કરવાનો રહે છે. હિંદુ સંન્યાસની ઉત્તમ ભાવનામાં કાળે કર્યાને કેટલો અભમતા પેઠા છે અને યોડા અનાદ રૂપ સારા સંન્યાસી બાદ કરતાં બાકીનો મોટો ભાગ કેવો ઢોંગી અને કેવળ ઉપદ્રવકારક થઈ પડ્યો છે એ બીજા પ્રકરણમાં બતાવવામાં આવ્યું છે (પરિચ્છેદ ૧૭). એમ છતાં

हिन्दु धर्मना अनुयायीओ के जेमनी वस्ती अने साधु वर्गनो समुदाय जैनो करतां घणो मोटो छे तेमना तरफथी कोईपण प्रकारनी सूचना के हकीकत अमारा आगळ आवी नथी. सरकारे जे खरडो प्रसिद्ध कर्यो छे तेमां कंई पण फेरफार कर्या वगर तेने कायदानुं रूप अपवामां आवे तो हिन्दु धर्म समाजनो कंई वांधो होय एम जणातुं नथी. परंतु तेमां कंई अजायव जेबुं नथी. हिन्दु धर्मना त्यागीओ उपर संसारीओनो कंई अंकुश नथी अने एकंदर हिन्दु समाज एबो उदासीन छे के तेमनी त्यागी संस्थामां सुधारो करवानी कंई दरकार नथी. पोते शईने कंई तजवीज करतो नथी पण जो सरकार कंई करे तो तेमां तेने कंई वांधो नथी. आथी उलट जैनो के जेमना धर्ममां संन्यास दीक्षा खास महत्वनी गणेली छे तेमनामांना केटलाके एवी दलील रजू करी छे के शास्त्रमां ठारवेला सिद्धांतोनो भंग करी समजण वगरना नानां बालकोने नसाडी, भगाडी तेमनां मावाप, वाली विगेरेनी संमति वगर केटलाक जैन गुरुओ चेला वधारवाना लोभयी शास्त्र विरुद्ध दीक्षा आपी दे छे, तेने माटे जैन संघ मतभेदने लीधे कंई उपाय योजी शक्तो नथी, तेथी सरकारे तेमां दरम्यानगिरी करी कंई बंदोबस्त करवो जोईए. आ विरुद्ध बीजा केटलाक एवी दलील करे छे के आ आरोप खोटो छे. शास्त्र विरुद्ध कंई पण बनतुं नथी अने बनतुं होय तोपण ते अटकावानुं काम जैन संघनुं छे. सरकारे तेमां कोईपण रीते दरम्यानगिरी करवी जोईए नहीं. एक तरफथी सुधारको भाषणो, वर्तमानपत्रो, पुस्तको विगेरे द्वारा हकीकत प्रसिद्ध करी जणावे छे के शिष्य वधारवाना मोहयी धर्मसुं फरमान बाजुए मुकीने केटलाक साधुओ सगीरने (१) फोसलावी (२) नसाडी, भगाडी अने (३) मावाप विगेरेनी संमति लीधा वगर अने (४) संघने जणाव्या वगर छानी रीते दीक्षा आपीदे छे अने (५) कोई इसम लायक उमरनो होय अने परणेलो होय त्यारे तेना मावाप स्त्री विगेरे आवत वर्गनी संमति मेळववी जोईए ते मळी न होय तोपण दीक्षा आपी दे छे अने तेथी समाजमां क्लेश, कंकास थाय छे अने घणी वखत न्यायाधिशीमां फरियाद थवाना प्रसंगो पण आवे छे, आ विरुद्ध ज्ञाना विचारने वळगी रहेनारा अने दीक्षाना चुस्त हिमायतीओनुं कहेबुं एबुं छे के आ बधा आक्षेपो खोटा छे अने ते स्वधर्मने वखोडवाने अने साधुओ उपर खोटा आरोप मुकी तेमने हल्का पाडवाने माटे करेला होय छे, जैन धर्म प्रमाणे आठ वर्षनी उमर पछी दीक्षा लेवानी जेमनी पोतानी इच्छा यई होय-जे दीक्षा आपवाने शास्त्र प्रमाणे लायक होय, अने जो ते सोळ वर्षना अंद्रना होय तो तेमणे दीक्षा लेवामां मावाप संमत होय तेमनेज दीक्षा अपाय छे. पण १६ थी वधरे उमरनाने माटे मात्राप स्त्रा विगेरे कोईनी संमतिनी अपेक्षा शास्त्रमां रखाई नथी अने पोताना स्वार्थ तथा मोहनी खातर एवां सगां वहालां कोई कोई वार दीक्षा लेवा माटे विरुद्धता करे छे तोपण दीक्षा अपाय छे तेथी एवां सगां वहालां तथा तेमना संवंधीओ दीक्षा आपनार साधुने वगोवे छे अने क्वचित प्रसंगे तेमने न्यायाधिशीमां पण घसडी जाय छे; तोपण तेमणे आपेली दीक्षामां कांई

बांधो लेवा जेबुं के शस्त्र विरुद्ध होतुं नथी तेथी परिणामे दीक्षाना विरोधीओ आवी दीक्षा बंध करवानी धारणामां निष्फल नीवडे छे, तेथी सरकार आगळ खोटो उहापोह करी रहा छे.

३८. अमारी आगळ बन्ने पक्ष तरफथी जे लेखी हकीकतो आवी छे तथा निर्णय करवाना मुहा. रुबह जुबानीओ यई छे ते उपरथो अमारी मान्यता एवी यई छे के एक पक्ष तरफथी खरी वस्तुस्थितिनी कईक अतिशयोक्ति करवामा आवे छे, तोपण वास्तविक रीते तेना तरफथी मुकवामां आवता आक्षेप बीनपायादार नथी; परंतु एथी उलट सामा पक्ष तरफथी खरी हकी कत खुल्ला दीलथी कबूल न करतां ते छुपोववा अने अयोग्य रीते दीक्षा आपनारनो खोटो बचाव करवा प्रयत्न थाय छे. बन्ने पक्ष तरफथी कहेवामां आवती हकीकत उपरथी तकरारी बाबतोमां विचार करवाना मुहा नीचे प्रमाणे जणाय छे:-

- (१) दीक्षा आपवा माटे सगीरोने फोसलाववामां आवे छे के केम ?
 - (२) दीक्षा आपवा माटे सगीरोने नसाडवा भगाडवामां आवे छे के केम ?
 - (३) दीक्षानुं रहस्य न समजे एवाने दीक्षा आपवामां आवे छे के केम ?
 - (४) मावाप विगेरेनी संमति लीधा वगर सगीरोने छुपी रीते दीक्षा अपाय छे के केम ?
 - (५) सज्जान उमरनाने दीक्षा आपता पहेलां मावाप, स्त्री विगेरेनी संमति लेवाय छे के केम ?
 - (६) सोळ वर्ष उपरनाने माटे एवी संमितिनी जस्तर छे के केम ?
 - (७) संघनी संमति लेवानुं आवश्यक छे के केम ?
- आ मुहाओनो हवे पछीना परिच्छेदोमां अनुक्रमवार विचार करीशु.

३९. साधुओ पोते यईने सगीरोने दीक्षा लेवा फोसलावे छे ए आरोप अमने सगीरने फोसलाववानो आरोप. पुरवार थयेलो लागतो नथी. कोई साधुए कोई सगीरने फोसलाव्यानी हकीकत अमारा आगळ आवी नथी. ए वात खरी छे के साधुओ पोताना प्रवचन वखते तथा बोध आपवाना इतर प्रसंगे जैनो आगळ दीक्षाना महत्व उपर भार मुके छे अने जो कर्मनो क्षय करी मोक्ष मेळववो होय तो तेनुं सर्वथी उत्तम साधन दीक्षा छे एम आग्रहपूर्वक कहे छे. परंतु आ बोध सामान्य रीते प्रवचन वखते हाजर थयेला सर्व श्रेता जनोने एटले के तमाम श्रावक श्राविकाओने खुल्डी रीते करवामां आवे छे, मात्र सगीरोने छुपी रीते कई कहेवामां आवतुं होय अगर लालच आपवामां आवती होय तेम जणानुं नथी. दीक्षाना फळनुं महत्व बतावी दीक्षा लेवानो बोध करवामां आवतो होय तेटला उपरथी दीक्षा लेवाने फोसलाव्या एम कई कहेवाय नहीं. दीक्षा लेशो तो तमारा देहनो मोक्ष थशे

अने तमने सर्व कोई मान आपशे अने पूजशे एम कहेवातुं होय तोपण तेशी दीक्षा लेवा फोसलाववामां आवे छे एम काई कहेवाय नहीं. दीक्षितने मान आपवामां आवे छे ए वात खरी छे अने ते सर्व कोई जाणे छे अने प्रत्यक्ष जुए छे. ए वतुस्सियति काई खोटो नथी एट्ले ते आगळ धरवामां आवती होय तोपण तेनो समावेश फोसलाववामां करी शकाय नहीं. दीक्षाना लाभ तो बवा पक्षना जैनो कबूल करे छे. केटलाकनो जे विरोध छे ते दीक्षा सामे नहीं पण अयोग्य रीते अपाती दीक्षा सामे छे. सगीरने साधु तरफथी खोटी रीते भंभेरी अथवा खोटी लालच आपाने दीक्षा लेवातुं समजाववामां आवतुं होय एवी काई हकीकत अमारा आगळ आवी नथी. खरी वात तो ए छे के सगीर वयना बाळकोए प्रवचन वखते दीक्षानो महिमा सांभळ्यो होय अगर साधुने अपातुं मान जोयुं होय ते उपरथी तेओ पोते यईने दीक्षाना मोहवी ते लेवाने घेरवी छानामाना नासी जाय छे अने साधु पासे हाजर यई दीक्षा आपवा मागणी करे छे. आवे प्रसंगे तेमने दीक्षा आपवामां साधुओ जे अयोग्य करे छे ते घणेमागे तेमने ललचावीने पोतानी पासे लाववामां नहीं पण आगळ जणाववामां आवशे तेम पोतानी आगळ दीक्षा लेवाने माटे आवेला सगीरोने घेर पाडा मोकळो देवाने बदले अगर तेमना मावापने खबर आपी तेमनी संमति छे के नहीं ते जोवा माटे तेमने बोलाववाने बदले तेमने गुपचुप दीक्षा आपी देवामां रहेले छे; अने तेशीज मावाप विगेरे तरफथी तेमना उपर फोसलाववा विगेरेना आरोप मुकवानो प्रसंग आवे छे.

४०. उपरना मुदाने मळतो बीजो आक्षेप एवो करवामां आवे छे के साधुओ
साधुओ दीक्षा माटे नसाडे अज्ञान वयना बाळकने दीक्षा आपवा माटे नसाडी
भगाडी लई जाय छे. आ आक्षेप केंडक दरउजे खरो भगाडे छे के केम ?
जणाय छे. उपरना परिच्छेदमां जणायुं छे तेम साधुओ
सगीरने घेर अगर इतर ठेकाणे ते होय त्या जई तेने फोसलावाने नसाडी भगाडी जता नथी पण कोई सगीर पोतानी मेले तेमनी पासे दीक्षा लेवा आव्यो होय तो तेने घेर पाढो मोकळवाने बदले कोई जाणे नहीं एवी रीते तेने दीक्षा आपी देवाना इरादाथी तेने एक ठेकःगेयी बीजे ठेकाणे लई जाय छे अगर मोकळावी दे छे. कोई साधुए कोई सगीरने पोताना मावापना कबजामांथी पोते यईने नसाडी भगाडो लई जवानो दाखलो अमारी आगळ आव्यो नयी, पण एवा घणा दाखला आव्या छे के जेमां सगीर पोते यईने साधु पासे दीक्षा लेवा गया पाडी साधुर तेने एक गामथी बीजे गाम मोकळावी दीवो हतो अने तेम करवानो तेनो हेतु मावापने खबर पडे ते पहेलां छूपीं रीते दीक्षा आपी देवानो हतो. आवी रीते एक साधुए १३ वरसना कहेवाता एक छोकराने दीक्षा आपवा माटे अहींथी तर्ही फेरव्यो हता एम पाटणमां घयेली फरियाद उपरथी नीकळ्युं हतुं. जो के पाछळथी एम जणायुं हतुं के ते छोकरो तेर वरसनो नहीं पण सज्जान वयनो होई पोतानी खुशीथी दीक्षा लेवा गयो हतो; एम जणायाथी साधुने छोडी मुकवामां आव्यो हतो तोपण तेने दीक्षाना उमेदवार तरीके

एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे मोकलावी दीधानी हकीकत खरी जणाई हती अने तेम करवानो हेतु पण तेना सगांनो विरोध थशे एम जाणी तेमांथी छटकी जवानो होवानुं नीकळ्युं हतुं. सोळ वर्षनी अंदरनी सगीर वयनो एक छोकरो डमोईमां आवेला तेना घेरथी छानोमानो नासी गयो हतो; तेने दीक्षा आपनार साधुर ऊऱायी सिद्धपुर अने त्यांथी मेत्राणा अने तुंडाव लई जई एक ज्ञाड नीचे दीक्षा आपी दीधी हती. बीजे एक एवीज सगीर वयनो छोकरो चाणस्मानी निशाळमां भणतो हतो त्यांथी छानोमानो दीक्षा लेवा साधु पासे चाल्यो गयो. तेने घणे ठेकाणे रखडावी चितोड पासे एक गामडामां दीक्षा आपी देवामां आवी हती अने तेना बापे पोलिसमां मनुष्यनयननी फरियाद करी हती ते उपरथी घणी वखत तपास चाली हती अने तेने पांचसो सातसो रूपिया खर्च पण थयुं हतुं पण छोकरानो कंई पत्तो लाग्यो नहीं. आखरे केटलेक वर्षे छोकराए पोते थईने कागळ लख्यो त्यारे तेनो पत्तो लाग्यो अने तेने दीक्षा आपी दीघेली होवानुं जणायुं हतुं. एज प्रमाणे आमोदनी एक बाईना ११ वर्षना छोकराना संबंधमां तेना मामाने रु. १००० आपवाना ठरावी कोई दीक्षा घेलाए तेनी मानी संमति वगर दीक्षा आपवा तजवीज करी हती पण ते माना प्रयत्नयी ए तजवीज निष्फळ नीवडी हती. छाणीनो एक सगीर छोकरो माबापने कहावा वगर दीक्षा लेवा मुंबई तरफ जतो रह्यो हतो; तेना माबाप तरफथी तेने दीक्षा नहीं आपवा साधुने मनाई करेली हती छतां तेने छुपाववा अंधेरी अने घाटकुपर वच्चे अहोंथी तहीं फेरवी गुस राते दीक्षा आपी देवामां आवी हती अने बापने मुंबाई जई छोकरानो पत्तो पाडी घेर तेडी लाववो पडयो हतो. आवा दाखला बने छे त्यारे दीक्षाना हीमायती धर्मचुस्तो अहिंथी तहीं दोडी जई, लागवग चलावी माबाप उपर दबाण केर छे अने खरी हकीकत आगळ आवती अटकाववा प्रयत्न करे छे; एवा दबाणयी डरी जई केटलीक वखत माबाप फरियाद करतां अचकाय छे, अगर जाणे कंई बन्युंज न होय एवी खोटी हकीकत तेमने कहेवी पडे छे, एम केटलाक दाखला उपरथी अमने जणायुं छे. आवी तजवीजोयी पूरेपुरी हकीकत आगळ आवती नथी तो पण केटलाक निडर अने स्वधर्मना खरा हितेच्छुओए पोतानी विरुद्ध पक्षना पोताना धर्म बंधुओनी खफगी वहोरी लेवानुं जोखम खेडीने दीक्षामां चालती आवी गेरशीस्त रीतो उघाडी पाडवाने पुस्तको बहार पाडयां छे; अने तेनो विरोध करवाने सामा पक्ष तरफथी पण प्रसिद्ध थयां छे. अयोग्य दीक्षा अपाय छे अने दीक्षितो मेलववाने अधर्मी आचरण थाय छे एवो आक्षेप करनारां

- (१) अमृतसरिता,
- (२) वीर धर्मनो पुनरुद्धार,
- (३) पर्युषण पर्वनां व्याख्यानो भाग १-२,
- (४) जैन दीक्षा प्रथम खंड अने
- (५) समयने ओळखो.

ए पुस्तको छे. आ विरुद्ध किंवदं अयोग्य थतुं नथी एम कहेनारां ‘आत्माने ओळखो’ अने तेना जेवां पुस्तको छे. जैन वर्तमानपत्रोमां पण एक तरफ “जैन” अने एवां बीजां सुधारक पत्रो अने तेना विरुद्ध “जैन प्रवचन” “बीर शासन” पत्रो छे. जैन धर्मनी साधेना संबंध वगरनां पत्रोप पण पोतानी कॉलमो बने पक्षने माटे उघाडी राखी छे, अने आ रीते कागळ उपर बने पक्षनी वच्चे दृन्द्र युद्ध चाली रहेलुं छे एम तेमना तरफथी समिति तरफ मोक्षाती नक्लो उपरथी जणाई आवे छे. अमे आवां पुस्तको अने लेखो उपर किंवदं ध्यान आप्युं नथी पण अमारा आगळ आवेली पुरावा तरीकेनी हकीकत उपरथी अमारा खात्री थई छे के सोळ वर्षनी अंदरनी कुमळी वयना बाल्कोने तेमना मावापनी संस्मिति मेलवानानी दरकार राख्या वगर जैन धर्मना फरमान विरुद्ध केटलाक साधु दीक्षा आपी दे छे अने तेने लीधे जैन समाजमां पक्ष पडी गया छे.

४१. त्रीजो मुद्दो ए जोवानो छे के दीक्षानुं रहस्य न समजे एवा सगीरोने समज वगरनाने दीक्षा दीक्षा आपवामां आवे छे के केम ? आ आक्षेप पण अपाय छे?

खरो लागे छे. दीक्षा एटले शुं, ते लेवानो उद्देश शो, तेनुं परिणाम शुं यशो, ए कुमळी वयनां बाल्को समजी शके के केम ए बहु विचारमां लेवा जेवी बाबत छे. ए वात खरी छे के आठ वर्षनी उमरनाने दीक्षा आपवानी शास्त्रमां छूट राखेली छे पण दीक्षा आपवाना काममां मात्र उमर नहीं पण समज पण जोवानी होय छे. मनुष्यपणुं दुर्लभ छे, जन्म ए मरणनुं नीमीत छे, संपत्ति चंचल छे, इन्द्रियोना विषयो दुःखना कारणभूत छे, संयोगमां वियोग रहेलो छे अने मरण क्षणे क्षणे थयाज करे छे एवुं जे समजो शके तेने दीक्षा आपी शकाय. पण आ तत्वज्ञान कुमळी वयनां बाल्क समजी शके नहीं; एवी समज लायक उमरवालामां पण योडानेज होय तो पछी सगीर वयनामां तो क्यांयी होय ? आवी समज होवानी खात्री करी दीक्षा अपाती होय तो सोळनी अंदरनी वयनाने तो कदी पण आपवामां न आवे; पण एवी वयनाने दीक्षा आपवामां आवे छे एज देखाडे छे के शास्त्रमां दीक्षा आपतां पहेडां जेवी परीक्षा करवानुं कहुं छे तेवी परीक्षा कर्या वगर जे कोई हाथमां आवे तेने मुंडी दे एवा साधु पण होय छे. यतिवत पालवाना संबंधमां एवुं कहेवामां आव्युं छे के ते असिधारा जेवा दुर्गम मार्गपर चालवा बरोबर छे. वली कहयुं छे के संयमनो भार वहन करवो, त्रक्षर्य पालवुं, बीजाने उपदेश आपवो, देशोदेश विचरवुं टाढ तडका सहन करवा, परीश्रम खमता, ज्ञाननो अभ्यास करवो अने तप आदरवुं, ए विगेर अनेक विषम कार्यो यतिने करवानां होय छे. माटे जे एवा पदने लायक होय तेनेज यति बनाववो जोईए; एवो माणसज साधुपणने शोभावे छे अने पोताना आत्मानुं कल्पण करे छे. एटला माटेज जेनामां परिच्छेद २४ मां बतावेला १६ गुण होय तेनेज दीक्षा आपवा शास्त्रमां फरमावेलुं छे. आ १६ गुणोमां केटलाक एवा छे के माणस

लायक उमरनो थई संसारनो अनुभव ले नहीं त्यां सुधी तेनामां ते आवे नहीं; जेम के मोह विगेरे कर्म क्षय पामेलो होवानो त्रीजो गुण; राग द्रेष विगेरे कमी थई ज्ञान बुद्धि निर्मल थयेली होवानो चोथो गुण; संसारनी असारता अनुभवेली होवानो पांचमो गुण; वैराग्य उत्पन्न थयेलो होवानो छडी गुण; क्रोध, मान, माया, अने लोभ कमी थयेलो होवानो सातमो गुण; करेलो उपकार नहीं भूलवानो कृतज्ञपणानो नवमो गुण; विनयवंत होवानो दसमो गुण; उत्तम चारित्रिवाळो होवानो अगियारमो गुण; कोईनो द्रोह नहीं करवानो बारमो गुण; अने आरंभेलुं कार्य गमे तेवां विघ्न आवे तोपण मुकी नहीं देवानो स्थिरतानो पंदरमो गुण; आवा गुण होवानी बधी लायकी तपासीने दीक्षा अपाती होय तो भाग्येज कोई नानी उमरनाने ते प्रसंग आवे. श्री प्रभावक चरित्रमां^१ वर्णवेला वज्रस्वामी जेवा कोई विरल पुरुषने त्रण वर्ष जेटली बाळ वये दीक्षा लेवानी समज आवी हशे एम घडी भर मानी लईए तोपण एवा विरला हालना वखतमां होवानुं बनवा जोग लागतुं नथी. बाळ अवस्थामां दीक्षा लेवा जेवो वैराग्य भाग्येज कोईमां आवे. घणीवार एम बने छे के माणसने संसारमां बनता केटलाक संजोगोने लीधे तात्कालिक वैराग्य आवे छे पण ते वैराग्य क्षणिक होय छे अने योडा वखतमां जे संजोगोमां ते उत्पन्न थयो होय ते संजोगो नाश पासतां ते वैराग्य पण अदृश्य थई जाय छे. मात्र एवी स्थितिमां दीक्षा लीधी होय तो पाछळ पस्तावा जेवुं थाय छे. संयम वेडीरूप भासे छे अने ते छोडी धेर पाढा आववा मन थाय तोपण शरम अयवा बीजाओना दबाणने लीधे तेवी दुःखमय स्थितिमां जारी रहेवुं पडे छे. एवुं परिणाम नानी उमरना दीक्षा लेवा आवनारना संबंधमां न आवे एटला माटे तेनो वैराग्य क्षणिक छे के स्थिर छे ते बाबतनी दीक्षा आपनारे तपास करवी जोईए. पण हालमां घणे भागे तेमानुं कांइ थतुं होय एम लागतुं नथी. जो थतुं होय तो दीक्षा लेवा माटे आवेला पैकी घणाने धेर पाढा मोक्ष्या होय. पण दीक्षा लेवा आवेलाने कोई साधुए तेम कर्यानुं जाणवामां आव्युं नथी. पण एवी उलट उतावळमां दीक्षा लीधेला पैकी पोतानी मेळे कंटाळीने संसारमां पाढा आवेलाना दाखला तो मळी आवे छे.

४२. चोथो मुद्दो ए जोवानो छे के माबाप विगेरे नजीकना सगा संबंधीनी संमति लीधा वगर सगीरोने छूपी रीते दीक्षा आपी अपाय छे.

संमति लीधा वगर सगीरोने देवामा आवे छे के केम ? आ मुद्दो पण अमारा आगळ पुरवार थयेलो छे. १६ वर्ष उपरनी उमरनाने दीक्षा आपती वखते माबाप विगेरेनी संमति लेवी जोईए के नहीं ए एक तकरारी प्रश्न छे पण १६ वर्षनी अंदरनाने माटे तो संमति जोईए ए निर्विवाद छे (जुओ परिच्छेद २९, ३७.) एम छतां एवी संमति लेवाने स्पष्ट आज्ञानो अनादर करी दीक्षा आपी देवामां आवे छे अने जाण थशे तो माबाप विरोध करी अटकावशे एवी बोकथी ते गुप रीते

^१ पान १५, संवत् १९८७ नी आवृत्ति.

आपी देवामां आवे छे. अदत्तदान नहीं लेवाने पोताना महाव्रतथी बंधायेला आचार्योए माबापनी संमति वगर अज्ञान उमरना छोकराने दीक्षा आप्या बदलना अमारी आगळ आवेला घणा दाखला पैकी मात्र छाणो, डभोई अने चाणस्मावाळाज लक्ष्मां लहैए तो तेटलाज उपरथी स्पष्ट थाय छे के एज छोकराओने दीक्षा आपनार आचार्य शास्त्र विश्व वर्तन करी शिष्य चोरी अथवा निष्कटिकानो अपराध कर्यो हतो. जो जैनसंघ पढेलाना जेवो बुद्ध अने सारो रहो होत तो आवा चोरी करनार आचार्यना कपडां तूर्त उत्तरावी लेत अगर निदान तेने ठपको आपी फरीथी एवुं नहीं करवाने ताकीद आपत; तेज प्रमाणे बीजा आचार्यों पण तेमनो फीटकार करत. परंतु ते पैकी कोईए कंई कर्यु नयी; एटलुंज नहीं पण उलट खरी हकीकत छुपावी ए छोकरानी उमर तो १६ वर्षनी यई गयेलो हती एटले कोईनी संमति लेवानी कंई जखर नहोती एम कही शास्त्र विश्व वर्तनार साधुनो खोटी रीते बचाव करवामां आवे छे; एटलुंज नहीं पण तेमनो बचाव करवाने केटलाक तरफथी खरी हकीकत आगळ लावनारनो वर्त-मानपत्र विगेरे द्वारा धर्मविरोधी तरीके फीटकार करवानी तजवीज यई छे, ए अमने घणुं शोचनीय लागे छे. जो खरी रीते चालवानुं होय तो दीक्षा आपवाना काममां छुपवट शा माटे जोइए ? जो खरी रीते चालवानुं होय तो जे आचार्य पासे सगीर छोकरा तेमना माबाप के सगां साथे लीधा वगर दीक्षा लेवा आवे तेमने केइपण तपास कर्या वगर गमे त्यां लई जई दीक्षा आपी देवाने बदले तेमना माबापने खबर आपाने तेढावे, तेमने पूछीने उमर विगेरे विषे खात्री करे, तेमनी संमतिनी जखर होय तो ते मेळवे, दोक्षा आपवा माटे सगीरमां खरा वैराग्य विगेरेनी लायको छे के नहीं ते पण ज्ञुए अने दीक्षा आपवी योग्य जणाय तो तेने माटे मुहूर्त नको करे, संधने खबर कहे, वरघोडो कढावे अने जाहेर अने उघाडी रीते सर्व कार्य करे. एम न करतां दृपी रीते अने तूर्तातूर्त दीक्षा आपी देवामां आवे छे, एज देखाडे छे के दीक्षा आपी दीक्षितोनी संख्या वधारवानी इन्तेजारीमां हाल घणुं अणवटतुं थाय छे एम सुधारक जैनो तरफथी जे आक्षेप करवामां आवे छे ते आधार वगरनो छे एम कही शकानुं नयी. दीक्षा आपी देवानी उतावळ करवाने बदले महात्मा गांधीजीना नीचेना उतारामां जणावेलो बोध ध्यान राखवामां आवे तो साधु संस्थानी केटली बधी उन्नति थाय तेनो ख्याल करवो घटे छे, तारीख २८ ऑगस्ट १९२७ ना नवजीवनना पान ४२१ उपर एवी हकीकत छगाई छे के ज्ञावरा स्टेटनी एक ओस्वाल बाईनो धणी नानी वयनो छतां दीक्षा लेवानो इगदो करी घर छोटी गयो हतो अने जती वरखते पोतानी च्छी उपर एक पत्र लखी गयो हतो के मारे दीक्षा लेत्री छे अने वे वरसयी हुं परवानगी माणुं छुं पण कोई आपतुं नयी माटे हवे में पोतेज दीक्षा लेवानो विचार कया छे. आ हकीकतना संवंधमां महात्मा गांधीजीए लखुं छे के “ मारी उमेद छे के आ नवयुवकने कोई दीक्षा न आपे, एटलुंज नहीं पण ते पोतेज पोतानो धर्म समजशे. नानी वये बुद्ध के शंकराचार्य जेवा ज्ञानी दीक्षा ले ए शोभी शके छे पण हरेक जुवा-

नीया एवा महान पुरुषोनुं अनुकरण करवा वेसे तो ए धर्मने अने पोताने शोभाववानै बदले लजवे. आज काल लेवाती दीक्षामां कायरता शिवाप कांई जोवामां आवतुं नथी अने तेथीज साधुओ पण तेजस्वी होवाने बदले घणा खरा आपणा जेवा दीन अने ज्ञानहीन होय छे. दीक्षा लेवी ए पराक्रमनुं काम छे अने तेनी पाठळ पूर्वजन्मना महा संस्कार अथवा तो आ जन्ममां मेळवेलुं अनुभव ज्ञान होवुं जोईए. वृद्ध माता अने तरुण स्त्रीनो कांईपण विचार कर्या विना दीक्षा लेनारने एटलो बधो वैराग्य होवो जोईए के आसपासनो समाज ते समज्या बगर रहे नहीं. आ दीक्षा लेनार जुवानने ते होय एम जोवामां नथी आवतुं.”

४३. आ तो सोळ वरसनी अंदरना सगीरना संबंधमां यवुं; परंतु १६

वरसनी उपरनाने दीक्षा सोळ वरसनी उपरनाने दीक्षा लेती वखते माबाप विगेरेनी सं- माबाप हयात होय अगर ते परणेलो होय तो माबाप अने पत्नीनी संमति लेवी जोईए के केम ए तकरारी प्रश्न छे. मूर्तिपूजक शेताबिरोनो एक पक्ष जेनी आगेवानी

अमदावादना ‘यंगमेन्स जैन एसोसिएशन’ ना चालको करे छे तेगनुं कहेवुं एवुं छे के १६ वरसनी उपरांतना माणसोने दीक्षा आपवामां कोईनी संमतिनी जखर नथी. ए विहृद्ध बीजो पक्ष के जेनी आगेवानी जूदे जूदे स्थले स्थापन थयेला युवक संघ करे छे तेमनुं कहेवुं एवुं छे के एवे प्रसंगे पण संमति लेवानी अपेक्षा रहे छे; कारण जे अढार प्रकारना पुरुषोने अने वीस प्रकारनी स्त्रीओने दीक्षा आपवाने शास्त्रमां अयोग्य जणावयां छे तेमां अढारमी नालायकी माबाप विगेरेनी संमतिनो अभाव छे अने एवी संमति मेळव्या बगर आपेली दीक्षाने ‘निष्फटिका’ एटले के चोरीनी दीक्षा गणेली छे; तेमां कंई एवो भेद राख्यो नथी के संमति १६ वरसनी अंदरनाने माटेज जोईए अने ते उपरना माटे न जोईए; सामान्य रीते बधी उमरनाने माटे संमतिनी अपेक्षा राखेली छे. बंने पक्ष तरफथी बतावेली दलीलो विचारमां लेतां अमने लगे छे के १६ वर्ष तथा ते उपरनी उमरनो इसम पोतानी स्वेच्छायी दीक्षा लेतो होय तो तेम करवामां कायदा प्रमाणे बीजा कोईनी संमतिनी जखर रहेती नथी. पाल्यपालक निबंध (Guardian and Wards Act) मां ठावेली १८ के २१ वर्षनी उमरनी यत्ता, लग्न अने धर्म कार्यना संबंधमां लागू पडती नथी. १६ वर्षनी उमर थया पछी लग्न अने धर्म संबंधी कार्यमां जे ते सखसे आपेली संमति कायदेसर छे अने तेथी माबाप ना कहेतां होय तोपण १६ वर्षनी उमरनो पुरुष पोतानी इच्छा होय ते प्रमाणे वर्ती शके छे ए वात खरी छे; पण दीक्षा लेवा जेवुं धर्म कार्य, जेणे अत्यार सुधी पाली पोषी मोटा कर्यां होय एवां माबाप अगर शास्त्र विधि प्रमाणे जेनी साथे लग्ननो संस्कार कर्यां होय तेमने रडावी, कक्कलावी अगर तेमने आधार बगरना करी पोतानी स्वेच्छा प्रमाणे संसारमांथी चात्या जवुं ए नीतिधर्म प्रमाणे कंई धर्म कार्य गणाय नहीं; माटे तेमनी संमतिनी कायदा

प्रमाणे जरूर न होय तोपण तेमना मननुं समाधान करी अर्थात् तेमनुं अनुमोदन लई, संसारत्याग जेवुं आखरनुं पगलुं लेवाने प्राचीन वलतयी शास्त्रमां राखेलुं छे. हिंदु-धर्मना अनुयायीओना संवंधमां संन्यासोपनिषद्‌मां तेमनुं “अनुमोदन” लेवा कहेलुं छे तेम जैन धर्मना अनुयायीओना संवंधमां पण कहेलुं छे. उदाहरण तरीके श्रोहरि-मद्रसूरिनां^१ धर्मविंदुमां कहेलुं छे के “तथा गुरुजनाद्यनुज्ञेति” अने तेनी टीकामां श्रोमुनिचंद्रसूरिए कहुं छे के “गुरुजन” एटले माता पिता विगेरे; अहीं आदि (विगेरे) शब्दयी बहेन, स्त्री वर्गेरे बाकीना संवंधी लोको समजवाना छे. तेमनी “अनुज्ञा” एटले ‘तुं दीक्षा ले’ एवी संमतिस्त्रप आज्ञा समजवानी छे. ज्यारे ए संवंधीओ आज्ञा मागतां छतां न आपे तो मूळ ग्रंथमां कहुं छे के संवंधीवर्ग आज्ञा आपे एवी युक्ति करवी; अर्थात् तेमने समजावी अनुमोदन लेवुं. एज ग्रंथकारे रचेला अष्ट कमां मातृ पितृ भक्तिना अष्टकमां कहुं छे के “दीक्षा सर्व प्राणने हितकारी गणवामां आवेली छे माटे जे दीक्षा माता पिताने उद्देग करावनारी होय ते न्याययुक्त गणाय नहीं. माटे मातृपितृ तथा स्वजननी अनुमति मेलवीनेज दीक्षा लेवी.” जैनोना परमपूज्य चोबीसमा तीर्थ्यकर महावीर स्वामीए दीक्षा लेवाथी मातापिताने दुःख थशे एत्रा भयथी ज्यां सुवी ते जीवता रह्या त्यां सुधी दीक्षा लेवानो एक शब्द पण उच्चार्यो न हतो; अने मातापिताना मरण पछी पोताना भाईंनी आज्ञा मागी अने ज्यारे भाईंए कहुं के मातापितानो वियोग ताजोज छे ने तेयी हुं दुःखी छुं, तो ते दुःखमां तमारा वियोगथी उमेरो थशे, माटे हालमां दीक्षा लेवानो विचार एटलो मजबूत हतो के, महावीर स्वामी पछी सुमरे छ सेंकडा पछी यथेऽग्नि आर्यरक्षित नामना २२ वर्षना युवकने तोषलीपुत्र नामना मुनिए दीक्षा आपी हती तेमां तेनी मातुश्रीनी संमति हती पण तेना पितानी संमति लीवी न होती अने बापने तथा नगरना राजा, नागरिको विगेरेने खबर न पडे एटला माटे कई दूर लई जई दीक्षा आपवामां आवी हती; एटला उपरथी ए दीक्षाने “शिष्य निष्केटिका” एटले असंमत अथवा चोरीनी दीक्षा कहेवामां आवी हती. एवी “चोरीनी” दीक्षानो आ पहेलवहेलो दाखलो हतो. आर्यरक्षित २२ वर्षनो तसुण उमरना हता अने चार वेद अने चौद विद्या भणी उत्तर्या पछी गुरुकुळमांथी घेर आव्या त्यारे तेमना मानमां तेमना गामना राजाए अने प्रजाए तेमने हाथी पर बेसाडी मोटो वरघोडो काढ्यो हतो. आठलुं छतां पण तेमनी मातुश्रीने पूर्ण संतोष थयो नहीं. राजमान अने प्रजामान मेलवी पंडित आर्यरक्षित उयारे पोताना माताजीना पगे पड्या त्यारे तेमणे तेमने एत्रो उपदेश कर्यो के तारे हजी “दृष्टिवाद” नुं अध्य-

^१ धर्मविंदु, अध्याय ४, सत्र २५.

यन करवानुं बाकी छे माटे ते तोषलीपुत्राचार्य पासे जई शीखी ले.” ए उपरथी आर्यरक्षित ते आचार्य पासे गया अने पोताने दृष्टिवादनुं अध्ययन कराववाने विनंति करी; ते उपरथी तेमणे तेने कहुं के जैन दीक्षा लीधा शिवाय ए शास्त्र तने शीखवी शकाय नहीं. ते उपरथी आर्यरक्षिते तूत दीक्षा लीधी अने ते शास्त्रनो अभ्यास कयों. आर्यरक्षितने आपेली दीक्षामां नसाडवा भगाडवानो के फोसलाववानो काँई प्रकार बन्यो नहोतो, तोपण पिता हयात छतां एकली मातानी संमतिशी तोषलीपुत्राचार्ये दीक्षा आपी अने ते पण जाहेर रीते न आपी ते उपरथी ए दीक्षा “निष्केटिका” एटले चोरीनी दीक्षा गणाई हती. आ दृष्टांतनुं महत्व घटाडवाने माटे यंग मेन्स जैन एसोशिएशनना केटलाक सभ्यो तथा बीजाओ तरफथी एवी दलील करवामां आवी छे के दीक्षा वखते आर्यरक्षितनी उमर ११ वर्षनी एटले के सोळ वर्षनी अंदरनी हती अने तेथी तेमां बापनी संमति लीधी न होवायी ते “निष्केटिका दीक्षा” गणाई छे ते बरोबर छे; कारण के १६ वर्षनी अंदरनाने माता पिता विगेरेनी संमति विना दीक्षा आपवानी नथी. आ दलीलना टेकामां युगप्रधान गंडिका नामना पुस्तकमां दीक्षा लेती वखते आर्यरक्षितनी उमर ११ वर्षनी लखी छे एम कहेवामां आव्युं छे अने एवी रीते आर्यरक्षित अज्ञान वयना छतां लागतावलगता बधानी संमति वगर दीक्षा आप्याने कारणे तेने निष्केटिका कही छे; परंतु आ दृष्टांतनुं महत्व घटाडवाने अने दृष्टांत मात्र सगीरना संबंधमांज लागु पडे छे एवुं बताववाने आर्यरक्षितनी उमर युगप्रधान गंडीकामा २२ ने बदले ११ वर्षनी उमर बतावी हशे एवो शक लेवा व्याजबी कारण जणाय छे. जे कोष्टकमां उमर दाखल करेली छे ते कोष्टक युगप्रधान गंडिकानो मूळ विषय नयी. ए कोष्टक पाछलथी दाखल थयेलुं होवुं जोईए; कारण के श्रीसुधमांस्वामी, आर्यरक्षित, आर्यसुहस्ती अने एक चोथा आचार्यनी उमर तेमां दशाविली छे. तेमां पण फरक होवायी बीजा आचार्यों ते ग्राह्य करता नथी. वळी वडोदरामां युगप्रधान गंडिकानी एक बीजी प्रत छे के जेनुं बीजुं नाम ‘दुष्माकालस्तोत्र’ छे तेमां उमर ते प्रमाणे नयी. विशेषमां आर्यरक्षितनुं जीवनचरित्र के जे परिशिष्ट पर्वमां हेमचंद्राचार्ये लखेलुं छे ते जोवायी खात्री थाय छे के आर्यरक्षितनी उमर दीक्षा लेती वखते ११ वर्षनी होवानो बिलकुल संभव नयी कारण के जेटलुं तेमना पिता जाणता हता तेटलुं दीक्षा लेतां पहेलां ते तेमनी पासे भण्या हता अने त्यार पछी विशेष भणवाने माटे पाठलीपुत्र गया हता. त्यां अंगो, चार वेद, मीमांसा, न्यायपुराण अने धर्मशास्त्र भण्या पछी पोताना घेर आव्या हता. आर्यरक्षिते दीक्षा बावीस वर्षनी उमरे लीधी हती एम श्री सुमतिगणीरचित गणधरसार्धशतक, बृहद्वृत्ति, सर्वगजगणीकृत गणधरसार्धशतक लघुवृत्ति अने श्री विजयानंदसूरि आत्मारामजी महाराज कृत अज्ञानतिमिरभास्करमांथी पण आधार मळी आवे छे. एटले दीक्षा लेती वखते आर्यरक्षितनी उमर ११ वर्षनी होवानो बिलकुल संभव नयी. सोळ वर्ष उपरनी उम्मरना इसमो दीक्षा ले त्यारे तेमनां माबापनी संमति मेळवत्री जोईए एम श्री हेमचंद्राचार्य कृत

विषष्टीशलाकापुरुषचरित्रमांथी पण दाखलो मळे छे. विनयनंदन नामना सूरिनो बोध सांभळी पुरुषसिंहकुमार नामना राजपुत्रने दीक्षा लेवाना इच्छा यवायो दीक्षा आपवाने तेगे तेमने विनंति करी त्यारे ते सांभळी सूरि बोल्याः—“हे राजकुमार तमारो आ मनोरथ घणो श्रेष्ठ अने पुण्य संपत्तिने साधनारो छे माटे ते अमे पूर्ण करीशुं पण प्रथम तमे नगरमां जई तमारा मातापितानी रजा लङ्घने आवो. कारण के जगतमां प्राणीने पहेला गुरु माता पिता छे. ” मुनिना ए बचन सांभळी पुरुषसिंह नगरमां गयो अने मावाप पासे जई दीक्षा लेवानी परवानगी आपवा विनंति करी; अने तेमणे ज्यारे खुशी थईने संमति आपी त्यारेज सूरिए तेने दीक्षा आपी हती. (पर्व ३ ऊं सर्ग ३ जो.)

४४. संमति बाबत धर्मबिंदुनो जे आधार बताव्यो छे ते प्रमाणे संमति मेलववा माता पिता विगेरेनी संमतिनी धर्मबिंदुना टिकाकारे जे युक्ति करवा लङ्घयुं छे ते युक्तिना संबंधमां तेणे एवो खुलासो कर्यो छे के संबंधी वर्ग अनुमति आपे नहीं तो तेमने नठारा स्वप्न कहेवां, मृत्यु समीप आवेला जेवा पुरुषानां चिन्ह देखाउवां अने जोशी विगेरे लोकोनी पासे मातापितादिकने एवुं कहेवडाववुं के आनु योडा वाखतमां मृत्यु यशो माटे तेना कल्पाण माटे दीक्षा लेवा यो. मा बाप विगेरेनी संमतिनी एटली बधी आवश्यकता राखी छे के ते न अपे तो आ प्रमाणे युक्ति कर्नाने पण ते मेलववा कहुं छे. वली एज प्रमाणे जेनी जेटली शक्ति होय तेटली शक्ति प्रमाणे मातापिता विगेरे प्रमुख गुरुजनना चिच्चनु समाधान करवा माटे तेमना निर्वाहना सावन माटे पोतानी शक्ति प्रमाणे आजीविकानो वंदोवस्त कर्या पछी दीक्षा लेवानुं पण कहुं छे; के जेथी पाछलथी पोताना माता पितादिकने निर्वाहना कारण माटे हेरानगति भोगवती न पडे,^१ एम करवाशी पोते कृतज्ञता करेली कहेवाय छे जैन धर्मना उद्योतनुं बीज करुणा अने दया छे, तेथीज माता पिता ख्री विगेरेने खुशी करी तेतुं अनुमोदन मेलवी दीक्षा लेवानुं कहुं छे. ज्यां ए प्रमाणे थतुं नयी त्यां पाछल क्लेश अने मारामारी यवाना अने हालमां तो न्यायाधिशीमां फरियादो यवाना प्रसंग पण बने छे. उदाहरण तरीके योडा समय उपर खंभातना एक दुवानने तेना मा वापनी संमति वगर दीक्षा आपनार मुनिने मारमारीने युवानने घेर लङ्घ जवानो दाखलो वासद आगळ बन्यो हतो; वली अमदावादमां कांतीलाल नामना युवाने परणेलो छतां पोतानी ख्रीनी संमति वगर तेम तेना भरणपोषण माटे कैईपण तजवीज कर्या वगर दीक्षा लीधी हती ते उपरथी तेनी ख्रीए खोराकी माटे फोजदारी न्यायाधिशीमां फरियाद करी हती; न्यायाधिशीए दरमासे रु. २९ तेणीने आपवानो हुकम कर्यो हतो, परंतु ते ठराव उपर हायकॉर्टमां विवाद थतां एवुं ठर्युं हतुं के दीक्षा लीधेला जैन सामे तेनी ख्रीनो खोराकी पोशाकनो दाखो चाली शके नहीं; कारण के दीक्षा लीधा पछी तेनी कैईपण मिलकत रहेती

^१ धर्मबिन्दु, अध्याय ४, सूत्र ३२.

नथी तेथी नीचली न्यायाधिशीनो ठराव रह करवामां आव्यो हतो. ए प्रमाणे पोतानुं श्रेय करवा दीक्षा लीघेला कांतीलालनी स्त्री निसासा नांखती अने रङ्गळती रही छे.

४५. दीक्षा आपवानी इंतेजारीमां जैन जेवा जीव दयावाला धर्मना आचार्यो केवा प्रकारे भरण पोषणनी जवाबदारी संबंधी एक जैन मुनिना विचारो. वचन उच्चारे छे अने दीक्षा लेवानो केवो बोध करै छे तेनो दाखलो हमारा जोवामां आव्यो छे ते अत्रे टांकीए छीए. एक प्रद्यत जैन मुनिने जूदे जूदे प्रसंगे पूछायला वर्तमान वातावरण उपर प्रकाश पाडता प्रश्नोना उत्तरमां तेमणे जे कहुं हतुं ते तारीख १ जुलाई १९६२ ना 'वीर शासन' पत्रमां प्रसिद्ध थयेलुं छे. तेमां एक सत्राल एवो हतो के "परणेतर बाईंनुं भरणपोषण ए दीक्षितनुं वास्तविक देवुं खरूं के नहीं" ? तेना जवावमां मुनिश्री तरफथी एवुं कहेवामां आव्युं के "धर्मशास्त्रना फरमान मुजब संसारना माणसो ज्यारे दीक्षित थाय त्यारे व्यवहार दृष्टिए ते माणसो मरण तरीकेनी स्थितिमां मुकाय छे अने तेमनां स्नान सुतक सरखुं पण तेमना सांसारिक कुटुंबीओने लागतुं नथी. वळी वेपारमां मनुष्य ज्यारे सर्व गुमावी दे छे त्यारे स्त्री पण पतिने पगले चाली पतिना दुःखे दुःखी बनी सुको रोठलो खाई पोतानुं जीवन नभावे छे. देवालुं काढनारनी स्थावर जंगम मिलकतनी कोटमां नोंध थाय छे तेमां पण एक बाजु देवानी नोंध अने बीजी बाजु लहेणानी नोंध लेवाय छे, पण आज दिन सुधीमां इन्सेल्वन्सी नोंधावनारा-देवालुं काढनारा—पैकी कोईपण देवानी नोंधमां पोतानी स्त्रीनुं भरणपोषण नोंधाव्युं होय एवुं सामल्युं नथी. आर्यवर्तनी आर्यपत्नीने धणीना सुखे सुखी अने धणीनां दुःखे दुःखी ए अचळ नियम जाठवावानो होय छे. जेथी सारी या नबळी स्थितिने आनंदनाज दिवसो मानी एकांते सुखमांज मग्न रहेनारी आर्यने माटे धणी जे पंथे वळे ते पंथे वळवुं ए स्त्री मात्रनी फरज छे. धणी हृदयपूर्वक जे काई आपे ते लेवामां वांधो नहीं पण हक्क करीने मागवुं ते अस्थाने छे. वास्तविक रीते लेशभर पण मागी शकेज नहीं."

४६. विजयधर्मसूरिकृत "धर्मदेशना" ना ग्रंथमां कहुं छे के दीक्षा लीघेलाने अथवा दीक्षा लेनारने मातापितादिक परिवार वीटीने रुदन मातापिता अने पत्नीने निराधार मुकवां ए योग्य नथी. करतां कहे छे के "भाई बाल्यावस्थायी आज सुधी अमोए तारुं पोषण करेलुं छे छतां ज्यारे अत्यारे तुं अमने पोषवा लायक थयो त्यारे घर छोडी चाल्यो जाय छे. हवे अमने कोण पाळशे ? तारा विना कोई पाळनार नथी. हे पुत्र, तारा पितादेव घरडा थया छे; थोडा दिवसना मेमान छे; तारी बेन हजी कुंतारी छे; आ तारा भाईओ सर्वथा पाळवा लायक छे; आ तारी माता विग्रे वर्गनुं पोषण कर, जेथी आ तारो लोक कीर्तिवाळो थाय अने परलोक पण सुधेरे. हे पुत्र, तारां बाल्को नानां नानां छे; तारी स्त्री नवयोवना छे; कदाच तुं तेनो त्याग करीश अने तेनाथीं कुळनी मर्यादा न बनी शकी, तो लोकमां तारी अने अमारी हेलना थशे, अर्थात् लोकापवादरूप दूषण लागशे."^१

^१ धर्मदेशना, भावनगर आवृत्ति, पान २०.

जोके आ प्रमाणे आवा मुनि महाराजोए बोध कर्यो छे तोपण वहालां मातापितानी विनंतिनो अस्वीकार करी तेमने रडतां ककळतां मूकीने अगर पोतानी पत्नीने निराधार मुकीने दीक्षा लई लेवी ए भले आवा मुनि महाराजो पोतानी संख्यामां बधारो करवा इष्ट गणता होय पण आध्यात्मिक तेम सांसारिक दृष्टिशी तो ते अनिष्ट अने निंद्यज गणाय; अने तेथीज श्री महावीर स्वामीए पोताना आचारयी लोकोने दृष्टांत आप्यु हतुं के मातापिता अने स्वजननी अनुमतिशीज दीक्षा लेवी जोईए अने तेज लागतावळगता सर्वना भला अने शांतिने माटे उत्तम मार्ग छे. खी मावाप विगेरेने रडावी कफळावी दीक्षा लेवा करतां महात्मा गांधीजीए कहुं छे तेम “घरबेठां दीक्षा जेवुं जीवन गाळजामां काई थोडुं पराक्रम नथी जोईतुं अने खरी कसोटी तो तेमांज याय छे. संतोषपूर्वक पवित्र रहीने, सत्यने जाळवीने, गरीब घरसंसार चलावत्रो, परस्वीने मावेन समान जाणवी, पोतानी खी साथे पण मर्यादामां रहीने भोगो भेगववा, शास्त्रार्थीनो अभ्यास करवो अने यशाशक्ति देशनी सेवा करवी ए काई नानी-सूनी दीक्षा नथी. दीक्षानो अर्थ आत्मसमर्पण छे. आत्मसमर्पण बाह्याढंबरथी नथी यतुं. ए मानविक वस्तु छे अने तेने अंगे केटलाक बाह्याचार आवश्यक यई पडे छे. पण ते ज्यारे आंतराद्विनुं अने आंतर त्यागतुं खस्तुं चिन्ह होय त्यारेज शोभी शके. ते विना ते केवळ निर्जीव पदार्थ छे.” १

४७. आ एकंदर हकीकत विचारमां लेतां अमने लागे छे के १६ वर्षनी उमरनो

१६ वर्षनी उमरनो
दीक्षा लेनार इसमनी तेनी
सा प्रत्येनी फरज.

इसम पोतानी इच्छायी दीक्षा लेवा जेवुं धर्म कार्य करे तेमां वीजा कोईनी संमतिनी अपेक्षा कायदा प्रमाणे रहेती नथी. एवा कार्यने माटे ते पोतेज संमति आपवाने कायदा

प्रमाणे लायक गणाय छे; तोपण नैतिक दृष्टिशी तो मावाप विगेरेनी संमति आवश्यक छे अने तेटलाज माटे ते लेवाने धर्मशास्त्रमां फरमाव्युं छे. मावाप करतां परणेतर खीनी स्थिति तो जूदाज प्रकारनी छे. मावापना संवंधमां तो एटलुंज के जेमणे जन्म आपी पाळी पोषी मोटा कर्या तेमनुं मन दुभावीने चाल्या जवुं ए व्याजवी नथी. पांतु मावाप करतां परणेतर खी तरफ तो विशेष प्रकारनी फरज छे. तेने पालवा तो लग्नथी धणी बंधायेलो छे; एठले तेने रजळती मूकीने तेनी परवानगी वगर अने तेनी खोणकी पोषाकीने माटे बंदोबस्त कर्या वगर तेनायी चाली जवायज नहीं.

४८. छेल्लो प्रश्न संघनी संमति लेवा बदल छे. संघनी संमति लेवी ए इष्ट छे संघनी संमति.

शकायज नहीं, एम काई शास्त्रार्थी ठरेलुं नथी. संघनी संमति लेवानुं केटलाक एवा कारणयी इष्ट गणे छे के तेम करवायी कोई नालायकने दोक्षा अपाई न जाय अगर सगीरना पोताना धार्मिक हित शिवाय मावाप के वीजा कोईना स्वार्थना के वीजा कोई अयोग्य कारणयी दीक्षा अगाती नथी ए जोवाय. परिच्छेद २४ मां वतावेला लायकीओ पैकी धार्मिक दृष्टिए जोवानी लायकी दीक्षाना

१ नवजीवन, तारीख २८ ऑगस्ट सन १९२७, पान ४२१.

उमेदवारमां छे के नहीं एनी तो दीक्षा आपनार गुरु पोते प्रश्न पुछी खात्री करी शके। परंतु ए शिवायनी बीजी लायकीओ के जेनो आधार स्थानिक माहिती उपर रहे छे ते बीजा कोईने पूछ्या वगर दीक्षा आपनार जाणी शके नहीं। एटलाज माटे संघनी संमति लेवानो वहिवट पडेलो होय एम लगे छे। हीरसौभाग्य काव्यमां तो दीक्षा संबंधी अमल बजावणी (execution power) श्रावक संघने होवानुं पण लख्युं छे। वळी माबाप विगेरेनी संमति वगरनी चोरीनी दीक्षाओ अपातां जे कलह उत्पन्न यवानो संमत रहे छे ते यवा न पामे अने बधुं कार्य खुशालीथी उघाडी रीते यई शके, एटला माटे संघनी संमति लेवानी वात केटलेक ठेकाणे संघे पोते यईने दाखल करेली जणाय छे। संवत् १९६८ सन १९१२ मां वडोदरा शहेरमां श्रीमंत विजयनन्दसूरीश्वरजी (आत्मारामजी महाराज) ना संघाडाना मुनिओनुं संमेलन भरायुं हतुं तेमां यथेला ठरावोमां २० मो ठराव एवो हतो के जेने दीक्षा आपवी होय तेनी ओछामां ओछी एक महिनानी मुदत सुधी यथाशक्ति परीक्षा करी तेना संबंधी माता, पिता, भाई, स्त्री विगेरेने रजिस्टर कागळथी खबर आपवानो रिवाज आपणा साधुओए राखवो, तेमज दीक्षा निमित्ते आपणी पासे जे वखते आवे तेज वखते तेनी पासे तेना संबंधीओने रजिस्टर कागळथी खबर आपवानो उपयोग राखवो। पण संघनी संमति लेवा संबंधी कांई ठराव यथो नहोतो। आ साधु संमेलनमां यथेला २० मा ठराव उपरथी एम अनुमान यई शके छे के अयोग्य रीते दीक्षाओ अपाती होवी जोईए अने ते बंध करवा ते ठराव यथेलो होवो जोईए। आबुं अनुमान नहीं यवा देवाने अमारा आगळ अयोग्य प्रकारनी दीक्षा अपाती नथी एम कहेनार पक्षे एवी दलील बतावी हती के ए ठराव यथोज नथी अने यथो हहो तो पाछळथी रद्द यई गयो छे। परंतु आ दलील वजनदार जणाती नथी। आ ठराव तेमज तेनी साथे यथेला एकंदर ठरावनुं पुस्तक प्रसिद्ध यथेलुं हतुं अने तेमां मुनिसंमेलनमां हाजर रहेला ९० मुनिओनां नाम आपेलां हतां; एटलुंज नहीं पण ते १९१२ ना जुनमां वडोदराना सयाजी विजय तारीख २०-६-१२, अमदावादना प्रजाबंधु तारीख २६-६-१२, मुंबई सांजवर्तमान तारीख २७-६-१२, अने मुंबई समाचार तारीख २४-६-१२ अने जैन, भावनगर तारीख २३-६-१२ मां प्रसिद्ध यथेलो हतो अने तेज प्रमाणे हजी सुधी कायम छे।

४९. श्री जैन श्वेतांबर मुर्तिपूजक जैनोनी कॉन्फरन्सना १३ मा अधिवेशनमां जैन कॉन्फरन्सोना ठरावो। जे ठराव यथा हता तेमां २१ मो ठराव नीचे प्रमाणे यथो हतो:—

“ दीक्षा संबंधी आ कॉन्फरन्सनो एवो अभिप्राय छे के दीक्षा लेनारने तेना माता पिता आदि अंगत सगां तथा जे स्थळे दीक्षा आपवानी होय त्यांना श्री संघनी संमतिथी जाहेरात पछी दीक्षा आपवी। ”

स्थानकवासी श्वेतांबरोना साधुओनुं संमेलन संवत् १९८८ महा वदी ९ ने रोज राजकोट मुकामे मळयुं हतुं तेमां यथेला ठरावोमां दीक्षा बाबत एक ठराव नीचे प्रमाणे यथो हतो:—

“ २१. दीक्षा लेनार उमेदवारने तेना वालीओथी आनी रीते नसाडवो भगाडवो नहीं। उमेदवारनी शारीरिक संपत्ति तपासवी, कोईपण खोडवाळो न होय, करजदार के गुन्हेगार न होय, प्रकृति सारी होय, वैराग्यवान होय, तेना वर्तनमां कोई एब न होय तेवानी पसंदगी करवी। उमेदवारने एकाद वर्ष साथे राखी प्रकृति अने वैराग्यनो पाको परिचय कर्या पछी ज्यारे तेनी योग्यतानो निर्णय याय त्यारे तेना वालीनी लेखीत आज्ञा मेळवी श्रीसंघ तथा संप्रदायना अग्रेसरनी संमति मेळव्या पछी दीक्षा आपवी। उमेदवार भाई के बाझेनी उमर अति न्हानी नहीं अने अति मोटी नहीं किंतु योग्य उमर होवी जोईए। अयोग्य दीक्षा उपर समितिनो अंकुश रहेशे।”^१

पाठणमां थांना जैन संघे संवत १९८९ ना भाद्रवा वद ११ ने रविवारना रोज एवो ठराव करलो हतो के “ हालनी परिस्थिति जोतां पाठणमां जेओने दीक्षा लेवी होय तेओए एक मास पहेलां जाहेर छापामां जाहेरात कर्या पछी तेनी योग्यतानी खात्री थतां संघनी संमति मेळवी दीक्षा आपी शकाशे। आनी विरुद्ध वर्तन करनार अथवा तेमां भाग लेनार संघना गुन्हेगार गणाशे। ”

सन १९३२ ना एप्रिल मासमां भोयणीमां आचार्य श्री विजयलब्धसूरिना अध्यक्षपणा नीचे श्रीश्रमण संघनो मेळावडो थयो हतो तेमां पसार थयेला छ ठावो पैकी बीजा नंबरनो ठाव एवो हतो के, “ पाठणमां दीक्षा माटे संघनी रजा विषे करवामां आवेलो ठाव शास्त्र विरुद्ध छे अने तेवो जिनाज्ञा विरुद्ध ठाव श्रीसंघनो नहीं पण केटलाक धर्म विरोधी अज्ञान युवानोनोज छे। आवो कोईपण ठाव श्री जैन संघ करी शके नहीं अने करे तो ते जैन संघ कहेवाय नहीं। ”^२ संघनी संमतिनी आवश्यकता संबंधे आ प्रमाणे भिन्न मत छे एटले दीक्षा आपतां पहेलां संघनी संमति लेवानी आवश्यकता छे एम कही शकातुं नथी।

९०. एकदर हकीकत विचारमां लेतां अमने लागे छे के दीक्षा आपतां पहेलां जे संघनी संमतिनी आवश्यकता गामनो उमेदवार होय ते गामना अगर जे गामे दीक्षा आपवानी होय ते गामना संघनी संमति लेवी जोईए एम आधारभूत अने सर्वसामान्य सिद्धांत तरीके गणाय एम कोई ठेकाणे ठरेलुं जणातुं नथी। संघनी संमतिने माटे केटलाक ठेकाणे अपेक्षा रखाय छे ते चोरी छुपकीथी सगीरोने दीक्षा न अपाय एटला माटेज रखाय छे। तेथी जेमने पोताना संघ पुरतो तेवो बंदोबस्त राखवो योग्य जणाय ते भले राखे पण हालनी परिस्थिति प्रमाणे ते कायदा रूपे सर्व ठेकाणे फरजियात रीते रखावी शकाय एम नथी।

१ जैनप्रकाश, तारीख २४-४-३२, पान २७१.

२ वरिष्ठासन, तारीख २२-४-३२, पृष्ठ ४४४.

प्रकरण ४ थुं.

अयोग्य दीक्षा अटकाववा शुं करवुं.

९१. बीजा प्रकरणमां जणाव्या प्रमाणे मुस्लीम धर्ममां संन्यास लेवानुं कहेलुं नसी छतां निर्वाहना साधन माटे फकीर बनी घणां जण भीख मागता फरे छे अने पोतानी साथे पोताना अगर बीजाना (तेमना माचापनी संमतिथी अगर संमतिविना काढो आणेला) छोकरां लँडीने फरता फरे छे अने धर्मने बहाने भीख मागी खाय छे अने भीख नहीं आपनारने सतावे छे. एज प्रमाणे हिंदुओगां जो के अमुक संयोगोमां संन्यास दीक्षा लेवानी छूट छे तोपण केटलीक धर्म संस्थाने अंगे मुंडेला अगर खरा वैराग्यथी पोते यईने योग्य रीते दीक्षित थयेला थोडा अपवाद शिवाय साधु वेषमां फरता घणाखरा मात्र वेषधारीज होय छे अने तेओ दीक्षा आप्या वगरना अगर गमे त्यांयी गमे ते प्रकारे काढी आणेला सगीरो अने बीजानी टोळी जमावी साधुने वेषे भीख मागता फरता फरे छे. आ बनेथी जनसमाजने घणो उपद्रव थाय छे तेथी एवा कहेवाता संन्यासी साधुओ अने फकीरनी संख्या कोई रीते कमी थाय अने निरुद्यमी जीवन गाळनारथी थतुं आर्थिक नुकसान अटके ए इच्छा जोग छे. पण फोजदारी कायदामां मनुष्यनयन अने जीव खाई जाय एवी रीते भीख मांगवाना गुन्हा ठरावेला छे तेनो सखत रीते अमल थाय अगर खास कायदो करी भीख मागवानुं बंध करवामां आवे त्यांसुधो तेनो अटकाव थत्रो अशक्य छे. मात्र अयोग्य दीक्षा प्रतिबंधनो कायदो करवायी तेमना संबंधमां कंडई सुवारो यई शक्षे एम आगतुं नथो.

९२. परंतु जैन धर्मनी साधु संस्था तेथी जुदाज प्रकारनी अने खरेखरी धर्मनी भावनाथी बनेली होय छे. कोई पण जैन साधु जैन साधु रखडतो रक्षळतो जोवामां आवतो नसी. ते तेना धर्मथी ठरेला धोरणे मात्र आजीविका चलावत्रा जेटलुं मागी लावी पोतानो वखत अध्ययन करवामां अने उपदेश आपवामां गाळे छे अने घणुं करी कर्मनो क्षय करी मोक्ष मेळवानी धारणाथी साधु बनेलो होय छे. प्रकरण ३ मां बताव्या प्रमाणे ए धर्ममां पण केटलाक समयथी साधु संख्या वधारवाने अयोग्य प्रयत्न थवा लाग्या छे अने तेमां मुख्य ए छे के दीक्षाना सगीर उमेदवाराना माबाप विगेरे सगां अगर वाळीनी संमति मेळवी दीक्षा आपवाने बदले एवी संमतिनी परवा राह्या वगर दीक्षा आपी देवामां आवे छे अने तेथी दीक्षा जेवा महत्वना धर्म कार्यने अंगे जैन संघमां पक्षो पडी तेमना वच्चे उघाडी रीते कजिया, कंकास अने वैमनस्य उत्पन्न थयां छे.

९३. आवी स्थिति सुधारवाने माटे वास्तविक रीते जे ते धर्मना अनुयायीओए जे ते धर्मना अनुयायीओनी कजियानुं मूळ दूर करी अर्थात पोताना संघमां पेठेलो सडो दूर करवा योग्य ते तजवीज करी पोताना धर्मनी शुद्धता जाळवी राखवी जोईए. हिंदु के मुस्लीम धर्म

प्रमाणे जे खरो साधु के फकीर नथी पण मात्र पेट भरवाने माटे साधु के फकीरनो वेष लई फरतो होय तेने पोषवामां धर्म नथी, पण उलट आळसने उत्तेजन आपवानुं पाप थाय छे, एम समजी ए धर्मना अनुयायीओ तेमने काई न आपे तेमज जेमणे अज्ञान उमरना छोकराने नसाडवा भगाडवानो गुन्हो कर्यो होय तेमने शिक्षाए पहोचाडवानी तजवीज करे तो आवा दोंगी साधु अने फकीरोनी संख्या कमी थई जे खरेखरा अने पवित्र होय अने धर्मो देश करवानुं भल्लु काम करता होय तेवाज टकी रही साधु संस्थाने माटे मानभक्तिमां वधारो थाय. एज प्रमाणे जे जैन आचार्यों सगीरोना मावाप विगेरेनी संमति मेलव्या वगर छुपी रीते दीक्षा आपता होय तेमने माटे पण जैन संघ तरफथी योग्य विचार थई घटीत पगलां लेवातां रहे तो तेमना नमूनेदार साधु वर्गमां हाल शास्त्र विरुद्ध वर्तन चलावी दीक्षा आपी देवानी जे अनिष्ट रीत दाखल थई छे ते बंध थई साधु वर्गनुं गौरव अने महत्व हाल छे तेना करतां पण तेमां विशेष वधारो थाय. परंतु दोलगीरीनी वात छे के कोईना तरफथी ते प्रमाणे यतुं नथी अने तेयीज ते संबंधे शुं करवुं ए सरकारे विचार करवानो एक अगत्यनो प्रश्न उपस्थित थयो छे.

५४. सन १९२३ ना जान्युआरीनी २० मी तारीखे दील्हीमां भरायेली कौन्सील लाला सुखबीरसिंहनो खरडो. ऑफ स्टेटनी बेठकमां लाला सुखबीरसिंह नामना युनाइ-

टेड प्रोवीन्सीज तरफना सभासदे एक एवी मतलबनुं बील रजू कर्यु हतुं के फकीर अने बीजा धर्मने बहाने भीख मागता लोको सगीर वयना छोकराने अयोग्य रीते पोताना चेला तरीके तेमना मावाना वालीपणामांथी लई जाय छे अने भीख मागवानो अने बीजो अनीतिनो धंधो करे छे; तेना अटकात्र माटे कायदायी एम ठारववुं जोईए के एवा साधु अने फकीरो जे सगीरने “ चेला ” के “ मुरीद ” तरीके लेवा मागता होय तेमना बाप के वाली साथे डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट रुबरू हाजर करी एवो दाखलो मेलवो जोईए के ते साधु अगर फकीर जेमा चेला के मुरीद रखाता होय एवी कोई जाणीती धार्मिक संस्थानो सम्भ छे अने एवा सगीर चेला के मुरीदने तेना पिता के वालीनी रजामंदीथी ते चेलो करवा मागे छे. जो आवो दाखलो न मेलव्यो होय तो ज्यारे एवा दाखला वगरनो कोई सगीर चेलो के मुरीद साधु के फकीर पासे मठी आवे अने जो एम साबीत न थाय के तेना मावाप के वालीए एवो सगीर गुम यथानुं जणातांज पोलिस के मैजिस्ट्रेटने फरियाद करी हती तो ते बाप अगर वालोने रु. ९० सुधीनो दंड अगर १ मास सुधीनी आसान केदनी शिक्षा करवी जोईए. आवो कायदो करवो के नहीं ए विषे देशमां अप्रेसर गणाता केटलाक गृहस्थोनो अने संस्थाओनो अने स्थानिक सरकारोनो अभिप्राय पुछतां केटलाकनो लाभमां अने केटलाकनो विरुद्धमां थयो हतो. विरुद्धतानो भाग मोटो हतो अने प्रजानी सामाजिक अने धार्मिक बाबतोमां दरम्यानगिरी नहीं करवानी सरकारनी नीति विरुद्धनी ए बाबत छे एम गणा सरकार तरफथी तेनी विरुद्धता करवामां आवी हती; अने तेथी ए कायदानी दरखास्त करनारे पोतानो खरडो पाढो खेच्ची लीधो हतो. ए

प्रसंगे कायदाना ए खरडानी स्हामे विरोध करतां इन्डिया सरकारना होम मेम्बर ऑनरे-बल मि.जे.क्रेरर एम बोल्या हता के जे उद्देश्यी मि.सुखबीरसिंहनो खरडो रजू थयो छे ते उद्देश स्तुत्य छे परंतु तेनी कलमो अमलमां मुकतां घणी मुश्केलीओ उभी थाय तेम छे. वली ए खरडानो विषय साधु फकीर वगेरे धार्मिक गणाती बाबतने लगतो होवाथी प्रजाना धार्मिक काममां सरकार दरम्यानगिरी करे छे एवी प्रजामां गेरसमजूत थवानो पण संभव रहे छे; सगीर उमरना बाल्कोने माबापनी के वालीनी संमति वगर साधु अने फकीरो काढी जता हव्हो तो तेने माटे शिक्षा कराववा चालु कायदा प्रमाणे सगीरना बाप के वाली उपाय लई शके छे माटे आवो कायदो करवामां सामेल थवाने सरकार योग्य धारती नथी. परंतु आ जवाब कंई संतोषकारक गणी शकाय नहीं; कारण के तेमां धर्मनो कंई प्रश्न नहोतो पण पोताना सगीर संताननुं कोई हरण करी गयुं छे एम जाण्या छतां जे माबाप उदासीन थईने बेसी रहे तेने शिक्षा करवानो प्रश्न हतो.

९९. फोजदारी निबंधनी कलम ३४९, ३४६ (इंडियन पीनल कोड संन्यास दीक्षामां मात्र नसाड्या ३६१, ३६२) प्रमाणे १४ वर्षीयी ओळी उमरना छोकराने भगाड्यानो सवाल नथी.

अथवा १६ वर्षीयी ओळी उमरनी छोकरीने तेना कायदेसर बालीना हवालामांथी ते वालीनी रजामंदी शिवाय जे सखस लई जाय अथवा फोसलावीने तेडी जाय तेवा मनुष्यहरणना गुन्हा माटे शासन ठरावेलुं छे. एटले जो मात्र नसाडी भगाडी के फोसलावी जवानोज प्रसंग होय तो तेने माटे बीजा कंई विशेष कायदानी जखर नथी; कारण के एवा कृत्य करनारने फोजदारी निबंध प्रमाणे नशियते पहोचाडी शकाय छे एम केटलाक इसमोए अमारा आगळ दलील करी छे, पण अमने ते बरोबर लागती नथी. जो मात्र नसाडवा भगाडवानोज प्रसंग होत तो कायदामां ठरावेला मनुष्यहरण के मनुष्यनयननां गुन्हा प्रमाणे शिक्षा थई शके. पण अहीं तो ते उपरांत दीक्षा आपी देवानो एटले के संसारी कारण माटे तेने मुवेला जेवो बनावतानो, कुटुम्बनी मिलकत उपर तेनो हक्क नष्ट करवानो महत्वनो बीजो प्रश्न पण छे. मनुष्यनयनना काममां १४ वर्षनो छोकरो के १६ वर्षनी छोकरी संमति आपे तेथी जे कृत्य थाय ते गुन्हो न बने ए बीजां कारणो माटे बरोबर होय तोपण साधु तरीके मुँडी नांखवानी अने संसारमांथी नीकळी जवानी संमति आपवाने ए उमर योग्य गणाय के केम ए पण विचारवा जेवुं छे. वली जो सगीरने मात्र नसाड्या भगाड्यानो सवाल होय तो बीजो कांई खास कायदो करवानी आवश्यकता रहे नहीं एम मानीने चालीए तो पण संन्यास दीक्षा लेवी अने ते पाल्नी ए एवुं कठण काम छे के काची समजवाला अने दीक्षामां शुं रहस्य समायलुं छे तेनो पूरा ख्याल वगरना बाल्को के बाल्कीओ साधु पासे दोडी जाय अने ते एवा सगीरने मुँडी नांखे ए एधी कांई जूदोज प्रश्न छे अने तेने मात्र उपर जणावेली फोजदारी निबंधनी कलमोमां बतावेली उमरनी यत्ता बरोबर लागती नथी.

९६. त्यारे हवे करवुं शु ? धर्म संबंधी बाबतोमां दरम्यानगिरी करवानी भलामण

समाजने नुकसान थाय तेवी बाबतो समाज अटकावी शके नहीं तो ते अटकाववानी राज्यनी करज.

करवाने अमे खुशी नहोता अने तेथी पोताना धर्ममां अपाती दीक्षामां पेठेलो सडो पोते यईनेज दूर करवा अमे अमारी आगळ रजू थयेला तेम बीजा जैन गृह-स्थोने सूचना करी हती. पण तेमनामां वे पक्ष पडी गयेला होवाथी अने सुधारकोनुं कहेवुं कोई रीते माने एत्रा

जूना विचारवाळा नहीं होवाथी तेम संघ पण पहेलां जेवो योग्य नियमन करवानी सत्तावाळो नहीं रहेलो होवाथी आ बाबतमां सरकारे योग्य ते दरम्यानगिरी करवानी भलामण अमरे न छुटके करवी पडे छे. श्रीमंत सरकार पण धर्म संबंधी बाबतोमां दरम्यानगिरी साधारण रीते करता नथी पण न छुटके समाज अने धर्मना संरक्षण माटे जखर होय त्यरेज तेमने ते प्रजाना एकंदर हितने माटे ते नाईंठाजे करवी पडे छे ए वात जाणीती छे. बाळलग्न विगेरे सामाजिक सुधारानी बाबतमां ज्यारे प्रजार पोते यईने काई न कर्युं अने एत्रो अनिष्ट रिवाज चालतो रहेवाथी प्रजानी शारीरिक, मानसिक अने नैतिक स्थिति बगडती जती जणाई त्यरे न छुटके सरकारे प्रजाना हितने माटे बाळलग्ननी बदी बंध करवा कायदाथी दरम्यानगिरी करवानी पोतानी फरज स्वीकारी हती. बाळलग्ननी अटकायत कायदाथी करवानी पहेल श्रीमंत गायकवाड सरकारे करी त्यरे तेना सामे घणो विरोध कायामां अव्यो हतो; पण हवे तो ते आशीर्वाद समान देवाय छे अने तेनुं अनुकरण बीजां राज्योमां पण थयेलुं छे. इंडिया सरकारे पण बाळलग्ननी अटकायत माटे शारदा अँक्टने नामे ओळखाय छे ते कायदो हालमां कर्यो छे अने १४ वर्षयी कमी उमरनी कन्याओ अने १८ वर्षयी कमी उमरना वरना लग्न करवानुं कृत्य गुन्हो गणी तेने माटे शिक्षा ठरावी छे. एत्रीज रीते आ दीक्षानी बाबत जो के धार्मिक छे तो पण तेनुं योग्य नियमन न रहेवाथी बाळको तेमां होमाई समाजनी नैतिक, धार्मिक अने आर्थिक स्थितिने नुकसान थवानो संभव रहे ह्ये तेथी जो प्रजा योग्य नियमन न करी शके तो सरकारे ते करवानी सरकारनी फरज छे. संन्यास एटले दुनियाना कामकाज छोडी दई मात्र धर्म कामामां निमग्न रहेवुं; जेवी लायकी अने इच्छा होय ते भले ते प्रमाणे करे; पण ए काम शु छे ए समजे नहीं एवा बाळकोने पण तेमां तेमना संबंधीनो संमति वगर दाखल करी लेवामां आवे तेथी समाजने उघाडी रीते नुकसान छे अने ते जो समाज पोते यईने न अटकावी शकती होय तो ते अटकाववानी राज्यनी फरज छे.

९७. श्रीमंत सरकारे प्रसिद्ध करेला खरडानो विरोध करनारा तरफयी एत्री दलील करवामां आवे छे के सरकारयी दीक्षा जेवा धार्मिक दीक्षाना विरोधीओनी दलील. कार्यमां काई दरम्यानगिरी यई शके नहीं; १६ वरसनी अंदरना दोक्षाना उमेश्वारो माटे ज्यां मावाप विगेरेनी संमतिनी अपेक्षा राखेली छे त्यां ते लेवाय छे अने १६ वरसनी उराना माटे कोई बीजानी संमतिनी आवश्यकता

शास्त्रमां राखेली नथी. तेथी जो ते नवीन दाखल करवामां आवे तो तेथी दीक्षा लेवानुं मुशिबत यशे अने परिणामे साधुवर्गिनो लोपज यशे; कारण के सांसारिक मोह अने लालचने लीधे मावाप छ्या विगेरे सगां संबंधी पोताना पुत्र, पुत्री के पतिने दीक्षा लई संसारमांथी नीकळी जवानी संमति आपेज नहीं अने तेथी दीक्षा लेवानुं अशक्यज थई जाय; वळी शास्त्रमां आठ अने ते उपरनी उमरनाने दीक्षा आपवानी जे छूट राखेली छे तेमां दरम्यानगिरी करी खरडामां ठराव्या प्रमाणे १८ वर्ष सुधी दीक्षा अपायज नहीं एम ठराववामां आवे तो तेथी शास्त्री ठेरेला सिद्धान्तमां पण फेरफार थाय अने तेवो फेरफार करवानो प्रजा के सरकार पैकी कोईने हक नथी. आ विरुद्ध सुधारापक्षनुं कहेवुं एवुं छे के दीक्षा लेवानी तथा आपवानी शास्त्रमां जे आज्ञा छे तेमां मात्र उमरनी लायकीमां वधारो करवाथी दीक्षा काई बंध थती नथी पण उलट दीक्षा लेवाने माटे जे खरेखरा समजदार अने लायक होय अने दीक्षा लेवानी जेमनी पोतानी खरेखरी इच्छा होय तेज दीक्षा लेशे अने सारी रीते पाळशे तेथी दीक्षाना महत्वमां घटाडो थवाने बदले उलट वधारो थशे; अने हाल सगां संबंधीनां अनुमति वगर पण बाळवयनाने दीक्षा अपाय छे तेथी जे सांसारिक क्लेश, तकरारो, झगडा अने संताप थाय छे ते संमति लेवानुं शास्त्रमां फरजियत छे तेनुं कायदायी पालन करवाथी आपो-आप बंध थई जशे; माटे संमति मेठववानुं अवश्य राखवुं जोईए अने संमति आपेली हती के नहीं ए बाबत पाळळथी कंई तकरार पडे नहीं पटळा माटे विश्वसनीय गणाय एवो लेखी दाखले रखाववानुं ठराववुं जोईए.

७८. अमारा आगळ आवेली तमाम दलीलोनो विचार करतां अमने एम लागे

जे ते धर्मना अनुयायीओ सुधारा करे छे ते इच्छवा जोग छे.

छे के धर्म संबंधी बाबतोमां जे सुधारा करवा जेवा होय ते जे ते धर्मना अनुयायीजे तरफयीज थाय अने सरकारे

तेमां दरम्यानगिरी करवानो प्रसंग न आवे ए इच्छवा जोग छे. पण हालनी स्थिति जोतां हिन्दु के जैन धर्मना अनुयायीओ पोते थईने ए बाबत काई बंदोबस्त करी शके एम लागतुं नथी. गेर रीते दीक्षा अपायाना प्रकार ज्यां ज्यां बन्या छे त्या त्या गेररीते वर्तनार साधु प्रत्ये नापसंदगी बतावी तेने संघ तरफयी ठपको आपवामां आव्यो होत अथवा जो ते पोतानी गेररीत छोडी न दे तो तेनां कपडां लेई लई तेनो बहिष्कार करवामां आव्यो होत तो जे गेररीत हाल चाली रहो छे अने जेना दाखला अमारी समिति तरफयी तपास चालती हती ते दरम्यान पण बन्या छे (जेम के छाणीना छोकगानो) ते बनवा पामतज नहीं. अंदर अंदरना कुसंपने लीधे जैन संघ पहेलां हसो (जुओ परिच्छेद ३३, ३४) तेवो मजबूत हवे रह्यो नथी पण उलट एवो निर्बंध यथेलो छे के पहेलांनी येठे अयोग्य वर्तन करनार साधुओ उपर ते काई अंकूश राखी शकतो नथी एटलुंज नहीं पण जे थोडा श्रावको अने साधुओ तेम करवाने प्रयत्न करे छे तेमने धर्मविरोधी भष्ट यथेला विगेरे दूषण आपी हेरान करवाने पण अचकातो नथी एम पण जोवामां आव्युं छे.

५९. आठ वर्षयो नानो बालक दीक्षा लई शके नहीं एम जैन धर्ममां ठराव्युं

बाल दीक्षा मात्र अपवाद रूप छे ते उपरथी एटलुंज निष्पत्र थोय छे के एथी वधारे हही। उमरनो बालक जो बीजी रीते लायक होय तो दीक्षा

लई शके। हिंदु धर्ममां ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वान-

प्रस्थाश्रम अने ते पछी संन्यासाश्रमनी परापूर्वयो चालती आवती जूनी पद्धति जैन धर्मनी पद्धति करतां सारी छे तोपण ए धर्ममां कोईने बहेलो वैराग्य आवे तो ब्रह्मचर्याश्रममांथीज संन्यास लई शके छे। परंतु आवा प्रसंगो क्रचितज अने ते पण शंकराचार्य के हेमचंद्र जेवा प्रभावशाली अने विशेष प्रकारनी बुद्धि अने वैराग्यवाळा मात्र योडानांज संबंधमां बनेला छे। सामान्य रीते घणाखरा तीर्थिकरो, गणकरो, आचार्यो, साधुओ अने महात्माओए सगीर वयने ओळंगीने अने लग्न संस्थामां पसार यईने संन्यास लीधो हतो। श्रीहेमचंद्रसुरिकृत त्रिष्णितशलाकापुरुषचरित्रमां आवा घणा दाखला छे। पोते बालपणमां दीक्षा लीघेलो छतां अने घणा विद्वान अने नामांकित थयेला छतां बालदीक्षानी तेमणे हिमायत करी नथी। ब्रह्मचर्याश्रममांथी एकदम संन्यास आश्रममां जनारा हंसेशा बहु विरलज होय छे। जैन टष्टिए त्रीजो अने चोयो आरो सतयुग गणाय छे। ए सतयुगमां पण जे जे दीक्षितो थया छे तेमांनां घणाखरा लग्न संस्थामां पसार थया पछी दीक्षित थया छे। ब्रह्मचर्याश्रममांथी सीधा लग्नसंस्थामां आव्या वगर दीक्षित थयेला पुरुषो नेमीनाथ जेवा विरलज छे अने बाल दीक्षित तो एथीए वधारे विरलज छे। अयिमुत्ता जेवा कोईकज नीकल्छो; चोयो आरा जेवा सतयुगना वखतमां पण ज्यारे बालदीक्षित कोईकज नीकल्या छे त्यारे एथी एस्पष्ट याय छे के बालदीक्षा ते वखतमां पण एक अपवाद रूप गणी शकाय एता प्रकारनी हती। हाल चालता पांचमा आरामां (कर्लीयुगमां) तो ते बालदीक्षा एथी पण वधारे मुश्केल गणाय ए सहेज समजी शकाय तेम छे। एम छतां शिष्य वधारवाना मोहने लीधे हालना कठण काळमां प्राचीन वखतना करतां वधारे प्रमाणमां नानी उमरनो दीक्षाओ केटलाक साधु महाराजो तरफयी, केटलाक धर्मघेला श्रावकोनी सहाययी अपाय छे अने ते पण घणीवार माबाप आदिनी संमतिनी अपेक्षा वगर अपाय छे। बालके पोते हा पाडी होय तेनी किंई किंमत नथी। दीक्षानुं महत्व समजवा जेवी तेनामां समज होती नथी। पांच महान्नतो शुं छे ए पण ते समजतो न होय एम छतां तेना उपर ते पालवानो भार लादवो ए एक प्रकारनुं भारे घातकीपणु छे। बालकने दीक्षा आपवा माटे तेना भोळपणनो, तेनी काची बुद्धिनो अने तेनी अज्ञानदशानो लाभ लेवामां बहु खोटुं याय छे। खरी दीक्षा बहु आकरी छे अने ते जिंशगी पर्यंत पालवानी होय छे। छोकराने निशाले बेसाडवानो होय त्यारे आपणे जोबुं पडे छे के तेनामां ग्रहणशक्ति आवी छे के नहीं। परपावतो होय त्यारे जोबुं पडे छे के तेनां शरीर, मन, इंद्रियो विगेरे विकास पाम्या छे के नहीं। निशाले बेसवानी अने लग्न करवानी योग्यता करतां दीक्षा लेवानी योग्यता तो जरूर वधारे होवी जोईए। दीक्षा काहि एवी स्थूल वस्तु नथी के ते अमुक उमरे

वेष बदलवानी साथे ज आवी जाय. दीक्षा ए एक भावना छे, दीक्षा ए विवेकपरि-
पाकनुं परिणाम छे. ए परिपाक थतां सुधी दीक्षा उमेदवारे धीरज राखवी जोईए.
हरिभद्रसूरिकृत धर्मबिंदुमां कहुं छे तेम “जेम कोई बुद्धिमान पुहष पगले
करी सारी रीते पर्वत उपर चढा। जाय छे तेम वीर पुरुष नियमोए करी चारित्र रूपी
पर्वत उपर चढ़ो जाय छे.”^१ बाल्कने केळवणी केवा प्रकारनी आपवी ए तेना माबापनी
मरजीनी वात छे. बाल्कनुं वलण जोई तेने धर्म संबंधी केळवणी आपवी योग्य जणाय
तो ते आपवाने कोइथी हरकत लेवाय नहीं, अने तेथी लायक वये ते दीक्षा लेवा मागतो
होय तो तेमां पण योग्य कारण वगर हरकत लेवाय नहीं. पण दीक्षाने माटे तेने
लायक करवाने धर्म संबंधी प्रायमिक केळवणी तो आपवी जोईए. जे बाल्कना माबाप
पोतानो छोकरो के छोकरी साधु जीवन जोवे एम इच्छता होय तेमणे ते छोकरा के
छोकरीने १६ वर्षनी उमर सुधी कोई धर्म संबंधी शिक्षण आपती शाळामां के एवा
कोइ आश्रममां दाखल करवो के जेमां साधु जीवनने अनुख्य दररोज दिनचर्या नक्की
थई होय अने व्यवहारिक केळवणी साथे संस्कृत, मागधी तेमज जैन साहित्यनुं ज्ञान
अपानुं होय तेवी संस्थामां तेमने मोकलवानो जैन समाजे प्रचार करवो जोईए.

**६०. दीक्षा ए कंई रमवानुं रमकडुं नथी पण घणी तपश्चर्या छे. दीक्षाने मार्गे
कमीमां कमी १६ वर्षनी अंदर जवानी इच्छावाळा मुसाफरे क्रमे क्रमे पोतानो अभ्यास
दीक्षा आपवी योग्य नथी. वधारवो जोईए अने पोतानुं चारित्र खीलवबुं जोईए.**

केवळ दीक्षानो वेष पहेरी लेवाथी अने ओघो पकडी
लेवाथी दीक्षा आवी जती नथी. जेने संसारना स्वख्यनुं बराबर भान थयुं होय, तेम
जेने संसार उपरथी वैराग प्रगट थयो होय अने जेनामां मोक्ष दशाने प्राप्त करवानी
पोतानी आंतरिक अभिलाषा प्रबळ रीते जागृत थई होय तेज दीक्षा लेवाने
याग्य छे. साधुपणानी योग्यता प्राप्त करवाने माटे जैन धर्ममां प्रतिमावहन
विधिनी सुंदर योजना करवामां आवी छे. आ प्रतिमावहन विधिना मार्गे क्रमे क्रमे
दीक्षानो अभिलाषी साधु जीवननी योग्यता प्राप्त करतो दीक्षित जीवन सन्मुख
आवतो जाय छे. आ प्रतिमाओ अगीयार छे अने ते शीखवानो वखत पांच वरस अने
छ मासनो कह्यो छे. ए प्रतिमाओमां धर्म अधर्मनुं ज्ञान, तपश्चर्या, शांतवृत्ति, ब्रह्मचर्य,
साधुजीवन, पोताने माटे तैयार करवामां आवेली वस्तुओनो त्याग, विग्रे बाबतोनो
अभ्यास आवी जाय छे. पहेली प्रतिमानो अभ्यास एक मास सुधी, बीजीनो बे मास,
त्रीजीनो त्रण मास, ए प्रमाणे उत्तरोत्तर प्रतिमाओना अभ्यासमां एकेक मास वधारे
लागे छे; कारण के नवीन आदरली प्रतिमाना अभ्यास साथे पाठ्यनी प्रतिमाओनो
अभ्यास चालू राखवानो होय छे. हिंदु धर्मशास्त्र प्रमाणे पण पांचथी आठ वर्ष सुधीमां
उपनयन संस्कार थाय छे अने त्यारपछी ब्रह्मचारी तरीके अध्ययन करवानुं होय छे.
हालना वखतमां प्रायमिक निशाळमां दाखल करवानी उमर पण ७ वरसनी ठरेली छे.

१ अन्याय त्रीजो सूत्र ८५,

आ बधी वातो विचारमां लेतां एवी कल्पना यई शके छे के कमीमां कमी सोळ वरस पहेलां जोईए तेवी साधारण समज बाठकमां आवी शके नहीं तो पछी संसारनी वस्तुओ संबंधां वैराग आवी दीक्षा लेवानां भावना तो भाग्येज यई शके, वली दीक्षा आपवामां आवे तो पण तेने अंगे जे कष सहन करवानां छे ते सोटथी नानी उमरे भाग्येज सहन यई शके, आ उपरथी एम अनुमान यई शके के प्राचीन काळमां धर्म-शास्त्रमां जो के आठ वर्ष पछी दीक्षा लई शकाय एम लखेलुं छे तोपण तेमां दीक्षाना उमेदवारनी उमर शिवायनी बीजी लायकी संबंधे जे शरतो राखेली छे तेनो विचार करतां पण एम लागे छे के, उमरनी यत्ता करतां बीजी लायकी उपर बधारे लक्ष अपायलुं छे; अने तेने लीधेज साधारण रीते आठ वर्षनी उमरे भाग्येज कोईने दीक्षा अपाय छे. घाणु करीने चौद, पंदर के सोळ वर्षनी उमरे दीक्षा अपायेली जोवामां आवे छे पण एटली उमरे अपाती दीक्षाओ करतां तेथी मोटी उमरे बधारे दीक्षाओ अपाय छे. एटले जो दीक्षा माटे कमीमां कमी उमर सोळ वर्षनी टराववामां आवे अने तेथी नानी उमरनाने दीक्षा आपवानुं बंध करवामां आवे तो हालनो समय जोतां कोईपण रीते अयोग्य अगर सस्ताई भरेलुं यशो एम अमने लागतुं नयी. केटलाक सुधारकोनो अभिप्राय एवो छे के, सज्जान वयनी उमर कायदा प्रमाणे १८ वर्षनी वये थाय छे, तेथी ते उमर पूरी यथा वगर दीक्षा आपवानुं बंध यवुं जोईए. तेमनी दलील एवी छे के १८ थी कमी उमरनो सखस कई करवाने नालायक गणाय छे तो पछी संसार त्याग करवाना अने मिलकत परनो पोतानो हक उठाववाना दीक्षा लेवा जेवा महत्वना काममां १८ वर्ष उमरनी पहेलां तेण दीक्षा लेवा माटे आपेली संमति निरर्थक गणवी जोईए. आ दलील जो के ठीक छे तोपण ते स्वीकागतां पहेलां बीजा चालू कायदानो पण विचार करवो जोईए. सज्जानपणानी उमर अने पात्य-पालक संबंधां निबंधमां सज्जान वय १८ नी ठरावी छे तोपण तेज निवंधनी कलम ६ थी एवुं ठराव्युं छे के ए निवंधयी ठरावेली उमरनी यत्तायी कोईपण सख-सना धर्मने, धर्म संबंधीना कृत्यने तथा संप्रदायने बाध आवशो नहीं. अर्थात् १८ वर्षनी उमरनी यत्ता कायदायी धर्म जेवी बाबतने लागू करेली नयी. माटे दीक्षा लेवाना काममां पण कायदेसर संमति आपवानी यत्ता १६ वर्षनी राखवामां आवे तो ते काई कायदा विरुद्ध गणी शकाय नहीं.

६१. केटलाक जूना विचारने वलगी रहेनारा गृहस्थो तरफथी एम कहेवामां आवे छे के आठ वर्ष पछी दीक्षा आपी शकाय एम जैन दीक्षा लेवानी उमरमां फेर-करवायी धर्मना मूल सिद्धां-तोमां फेरकार यतो नयी.

शास्त्रमां ठरावेलुं छे तेने बदले १६ (के १८) वर्षनी पछोज दीक्षा आपी शकाय एम ठराववायी धर्मशास्त्रमां ठरेला सिद्धांतोमां फेरफार याय अने तेथी तेम करवुं ए धर्म विरुद्ध याय. पण आ दलील बरोबर लागती नयी. कमीमां कमी केढली उमरे दीक्षा आपी शकाय ए विषे प्राचीन काळमां जे ठरावेलुं हतुं तेनी मात्र यत्तामां फेरफार कर-

वाथी दीक्षा आपवाना सिद्धांतमां कई फेर थतो नथी. सिद्धांत तो वास्तविक रीते जेनै खरेखर वैराग्य उत्पन्न थयो होय तेनेज दीक्षा आपवानो अने तेणेज ते लेवानो छे. वैराग्य एटले शुं ते समजी शके नहीं एवा १२ के १४ वर्षना बालकक्ने तेना माबाप के बालीनी संमति लई दीक्षा आपवाथी एवा बालकमां खरेखर वैराग्य उत्पन्न थयो छे एम कहीं शकाय नहीं; अने एवी रीते आणेली दीक्षा सशास्त्र पण गणी शकाय नहीं वैराग्य उत्पन्न थयो छे के नहीं ए तो दीक्षा लेनार पोते सोळ वर्षनी उमर पछी पोतानी मेळे संमति आपवा लायक थाय त्यारे ते पोते जे कहे ते उपरथीज जाणी शकाय. दीक्षा कई उमरे लई शकाय ते बाबतमां समयने अनुसरीने फेरफार करवाथी धर्म संबंधी मूळ सिद्धांतमां काई फेरफार थतो नथी.

६२. आवी गौण बाबतमां शास्त्रमां ठरावेली यत्तामां फेरफार कर्यान। आज सुधीमां गौण बाबतमां करेला फेर- जैन धर्ममां पण घणा दाखला बनेला छे ते पैकी थोडा अत्रे उदाहरण तरीके जणावीए छीए. (१) महावीर फारोना उदाहरण,

स्वामीना पहेलां थयेला तीर्थकर श्री पार्थनाथ जेमनी साधु यवानी इच्छा होय तेमने चार महावतोनी प्रतिज्ञा साथे दीक्षा आपता; पण तेमनी पछीना महावीर स्वामीए चारने बदले पांच महावतोनी प्रतिज्ञा साथे दीक्षा आपवानो फेरफार कयों हतो. पहेलां अपरिग्रहमां ब्रह्मचर्यनो समावेश थतो हतो पण महावीर स्वामीए तेमांयी ब्रह्मचर्यने झूँडुं पाडी पांचमुं ब्रत ठराव्यु हतुं. (२) पार्थनाथ स्वामीना बखतमां साधुओ गमे तेवा रंग बेरंगवाळा वस्त्रो पहेरता हता तेमां फेरफार करीने महावीरे सफेद वस्त्र पहेरवानुं ठराव्यु हतुं. (३) पण सफेद कपडांवाळा गोरजी विगेरे हलका गणाता यतिओथी शुद्ध यतिओने भिन्न देखाडवाने सत्तरमा सैकामां संवेगी साधुओए पीळां कपडां पहेरवानुं दाखल कर्युं हतुं. (४) प्रथमथी चालता आवेला सरूप नियमोमां केटलाक फेरफार करी १४ मा सैकामां साधु साध्वीओ माटे केटलीक विशेष सवलतो करी आपी हती, जेमके साधु वस्त्रनी पोट-लीओ राखी शके, धी दुध विगेरे खाई शके, कपडां धोई शके, कज अने शाक लई शके, साध्वीए आणेलो खोराक साधु वापरी शके अने श्रावकोने खुशी करवा तेमनी साथे बेसीने प्रतिक्रमण पण करी शके. एज प्रमाणे साध्वीओए आणेलो आहार साधुए वापरवानी प्रथम छूट थई हती ते पाढळथी रद थई हती अने हवे साध्वीओए आणेलो आहार साधु वापरता नथी. (५) वीर संवत १९१४ सुधी साधुओ जंगल-मांज रहेता अने त्यार पछी वस्तीमां आवी मंदीरमां वसवाट करवा लाग्या, अने धीरे धीरे मंदीरोना वहिवटनी जंजाळमां पडवाथी चारित्रमां शिथिल थवा लाग्या त्यारे मंदीरोमां रहेवानुं तेमणे बंध करी अपाश्चरामांज रहेवानुं ठराववामां आव्युं. (६) तेवीसमा तीर्थकरना साधुओ ज्यारे पाप लाग्युं होय त्यारेज प्रतिक्रमण करता तेमां सुधारो करीने ते पडीना तीर्थकर श्री महावीरे एम ठराव्युं हतुं के साधुने पाप लाग्युं होय के न लाग्युं होय तो पण तेमणे सवार सांज नियमित प्रतिक्रमण करवुं जोईर. (७) प्रथम साधुओ अने श्रावको अलग प्रतिक्रमण करता तेमां पाढळथी

विजयचंद्रसूरिए फेरफार कर्ने श्रावकोने साधुओंनी साथे प्रतिक्रमण करवानो सुधारो कर्यो हतो ते आज सुधी चालू छे. प्रतिक्रमण ए जैन धर्ममां एक अगत्यनी अने आवश्यक क्रिया छे. आखा दिवसमां इरादापूर्वक थयेला पापनी आलोचना संध्या समये ‘देवसी’ प्रतिक्रमणथी कराय छे. एज प्रमाणे रात्रिना पापनी आलोचना प्रातःकालनी ‘राई’ प्रतिक्रमणथी कराय छे. अने एज प्रमाणे पाक्षिक प्रतिक्रमण, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण तेना माठे ठारवेला दिवसोए थाय छे. (८) प्रथम वार्षिक प्रतिक्रमण भाद्रवा सुद ९ ना रोज करवामां आवतुं हतुं अने ए रीत महावीर स्वाधी पछी ४९७ वर्षे थयेला कालकासूरि नामना आचार्यना समय सुवी कायम हती, पण कालकासूरिए ते रीतमां फेरफार करीने भाद्रवा सुद ४ ना दिवसे संवत्सरिक पर्व उजववानुं नक्की कर्यु त्यारथी ते प्रमाणे थाय छे. (९) प्रतिक्रमणनी क्रियामां पण अनेक नवां सूत्रो दाखल थयां छे. प्रतिक्रमण जेवी जैन धर्मनी आवश्यक क्रियामां घणां नवां सूत्रो दाखल करवानो फेरफार यदो हतो ते साधुओ अने श्रावकोए खुशीथी स्वीकार्यो हतो. (१०) चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमां पूनेमने बदले चौदसनो फेरफार करवामां आव्यो छे. (११) कल्पसूत्र नामनो आगमग्रंथ जेनी रचना महावीर स्वामीना निर्वाण पछी १७० वर्षे भद्रबाहु नामना साधुए करेली हती ते सांभलवानो पहेलां श्रावकोने अधिकार न हतो. जेम हिंदुओमां मात्र ब्राह्मणज वेद भणी शके अने सांभली शके तेम जैनोमां पण कल्पसूत्र फल्क साधुओज वांचता. पण महावीर स्वामीना निर्वाण पछी ४४७ वर्षे कालकासूरि आचार्यो ते ग्रंथ सौयो पहेलां प्रतिष्ठानपूर नगरमां संघ समक्ष पर्युषण पर्वमां वांच्यो हतो अने त्यारथी ए ग्रंथ सांभलवानो अधिकार श्रावकोने थयो छे अने पर्युषण पर्वना पांच दिवसमां साधुओ संघ समक्ष ए ग्रंथ वांचे छे. (१२) जैन धर्ममां नवकार मंत्र अगत्यनुं स्थान भोगवे छे. आ नवकार मंत्रनो पाठ प्रथम उपाधाननी तपश्चर्या अने क्रिया शिवाय भणी शकातो नहीं, तेम छतां आजे पांच वर्षनां जैन बालकोपण उपाधाननी क्रिया कर्या शिवाय ते मंत्रनो पाठ भणी शके छे. (१३) शहेनशाह जहांगीरना वस्तमां आचार्य श्री हरिविजयश्रीना पट्टधर शिष्य विजयसेन-सूत्रिने घणां गामोना संघोप जूदा जूदा प्रश्नो पूछ्या हता अने तेना तेमणे जे उत्तर आप्या हता ते सेनप्रश्न नामयी एक ग्रंथ तरीके प्रसिद्ध थया छे. ते ग्रंथ उपरथी जणाय छे के नवकारमंत्रना संबंधमां कोई गामना संघे प्रश्न पूछ्यो हतो तेना जवाबमां आचार्यो कहुं हतुं के डाह्या पुरुषोए शरु करेली होय अने बीजा आचार्योए जेनो निषेध कर्यो न होय एवी आचरणने आगम प्रमाणे मानवी. (१४) संवत् १६७७ मा आचार्य विजयदेवसूरिए साधुमयदापटक बनावेलो हतो. तेमां देशकाल जोइने फेरफार कर्या हता अने ३३ मी कलममां ३५ वरसनी अंद्रनी उमरनी छोओने दीक्षा न आप्वानी यत्ता ठारवी हती पण हवे ते उमरनी यत्ता पण फरी गई छे. एठले उमरनी यत्तामां देशकाळने अनुसरीने फेरफार करवामां आवे तेमां किंई शास्त्र विरुद्ध थतुं नथी एम आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे. उपर जगावेला दाखला उपरथी

स्पष्ट जणाय छे के एक विवर शास्त्रमां जे कार्यनो निषेध कर्यो हतो तेज कार्यने पछलना आचार्योंए देशकाळ जोईने अनुमति आपी हती अने तेने आगम प्रमाण लेवा मानी ते प्रमाणे चालवामां आवतुं हतुं. एटले हालनो देशकाळ जोतां दीक्षानी कमीमां कमी उमरनी हद जे ८ वर्षनी छे तेने बदले १६ के तेथी पण ऊचे वधार-वामां आवे तो तेमां शास्त्रना आधारे काई बाध आवतो होय एम लागतुं नयी. दीक्षा लेवानो जे सुख्य उद्देश तेमां आवा फेरफारथी कई सिद्धांतमां फेरफार यतो नयी पण उलट तेनो उद्देश सारी रीते पर पाडवाने मदद मळे छे.

६३. शास्त्रना ग्रंथोमां तो घणे ठेकाणे मोटी उमरनाने दीक्षा आपवा कहेलुं छे
 मोटी उमरे दीक्षावाळा माटे कहुं छे के जुवान, प्रौढ अने शुद्ध ए त्रणमांयी मध्यम शास्त्रना आधारो.
 ते पैकीना थोडा अत्रे रजू करीए छीए. आशारंगसूत्रमां वयवाळो पाकट बुद्धिनो होवायी वधारे लायक छे.^१
 हरिभद्रसूरिए पंचाशक सूत्रमां कहुं छे के आ दुष्माकाळ अशुभ परिणामवाळो छे अने तेथी आ अशुभ काळमां चारित्रनुं पालन मुश्केली भरेलुं छे माटे दीक्षा लेवानी इच्छावाळाओए प्रतिमाओनो अभ्यास कर्या पछी दीक्षा लेवी जोईए.^२ श्री सुधर्मास्वामीए बारे अंगनी रचना करो छे तेमा त्रीजा ठाणांग सूत्रना दसमां ठाणांगमां कहुं छे के दस प्रकारना मुंडित होय छे. कान, नाक, आंख, जीभ अने त्वक् स्पर्शन ए पांच इन्द्रीयथी मुंडित एटले तेना विषयोने जीतनार; क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कषायथी मुंड; अर्थात् कषायोने फेंकी देनारो; अने दसमो शीर मुंड एटले लोच आदिथी मस्तकना बाळने दूर करनार. दीक्षा आपनारे दीक्षा लेवा आवेला पुरुषने प्रश्न, आचार, कथन अने परीक्षा विग्रेरे करवानो विधि छे^३ ते जोतां पण लायक उमरनोज ते प्रश्नो विग्रेरे समजी शके अने उत्तर दई शके एम जणाय छे. श्री वर्धमानसूरिकृत आचारदिनकरमां कहुं छे के शुद्ध रीते सम्यकत्व अने बार व्रतने पाळनार, भोगनी इच्छाओयी शांत यथेल, वैराग्यनी भावनावाळो, गृहवासने लगता जेना मनोरथो पूरां थयां छे अने पुत्र, पत्नी, स्वामी आदिथी अनुज्ञात (संमति पामेल) एवो श्रावक ब्रह्मचर्य (चोथा व्रत) ने माटे लायक बने छे. ब्रह्मचर्यनुं^४ व्रत लीधा पछी ते ब्रह्मचारीए शुं करवातुं छे ए विषे ते लखे छे के, चोटली, लंगोट आदि धारीने मौनपणे अने शुद्ध शुभ ध्यान तत्पर त्रण वर्ष रहेवुं जोईए. त्रण वर्ष मन, वचन अने कायायी शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळ्या पछी प्रवृज्या एटले दीक्षा स्वीकारे अने व्रतने (ब्रह्मचर्यने) खंडन करनार फरी गृहवासमां जाय. हरिभद्रसूरिए पोताना षोडशक

१ अध्यन ८ उद्देश ३ पत्रक २७४.

२ गाथा ४९ तथा ५०.

३ धर्मबिन्दु, अध्या ४, सूत्र २४.

४ आचारदिनकर पृष्ठ ७१.

प्रकरणमां कहुँ^१ छे के मनुष्य चारित्रयवान होय तोज त्यागरूप दीक्षानो अधिकारी कही शकाय; मारी परिषदा संपूर्ण थशे, पाणी विगेरे लावत्रा माटे चेलो काम आवशे, इत्यादि आलोक संबंधी कार्यनी इच्छाओयी रहितपणे मात्र शिष्यना कल्याणनी खातर अने कर्मनी निर्जरा माटेज दीक्षा आपवी जोईए. वली बीजे एक ठेकाणे कहुँ छे के पहेलां शिष्यपणुं कर्या शिवाय अर्थात् गुरुकुलवास, शास्त्राभ्यास विगेरे कर्या शिवाय आचार्यपणा माटे उतावलो थयेलो आचार्य पदवी मेळवीने मत्त हायीनी पेठे निरकुश फरे छे. शिष्यो पण आचार्यपद लेवा माटे उतावला थाय छे अने आचार्यों पण जलदी आचार्यपद आपवा मेहेरबान थाय छे तेथी अल्पशिक्षित आचार्य-पिशाचोयी लोक भराई जाय छे. आ बधां वचनो तथा उद्धारो एज देखाडे छे के समज-वगरना बालकोने दीक्षा आपवी ए सर्वरीते हानिकारक छे अने तेथी ते बंध थवी प्र इष्ट छे.

६४. बालदीक्षाना केठलाक हिमायती तरफथी एवुं कहेवामां आवे छे के,
बालपणमां दीक्षा आपवामां न आवे तो साधु विद्वान बालदीक्षितज विद्वान यई थाय नहीं; पण बालपणमां दीक्षा लीधेला पैकी भाग्येज शके एम काई नथी.
 कोई श्री शंकराचार्य के श्री हेमचंद्रसूरि जेवा विद्वान थया होय छे, तेमना जेवुं ज्ञान थोडानेज थाय छे. जैन धर्म प्रमाणेना चोथा आरामां अतिमुक्तक जेवा कोईक शिवाय बालदीक्षाना दाखला वनेला नथा. पांचमा आरामां जंबुक स्त्रामीए यौवन अवस्थामां दीक्षा लीधी हती. स्त्रयंभव, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, सिद्धसेन, हरिभद्र ए विगेरेए पण यौवनावस्थामां दीक्षा लीधी हती. वर्तमान काळमां थयेला मोटा मोटा वैज्ञानिको, दार्शनिको अने नैयायिकोए कंई बालदीक्षा लीधी नहोती. श्री बुद्धिसागरजीए के जेमना नामनुं वडोदरा राज्यमां अने ते बहार जैनो एक मोटा मुनि तर्के स्मरण करे छे अने जे थोडांज वर्ष उपर देवलोक पाम्या हता ते जातना पाटीदार हता अने १६ वर्षनी उमर पहेलां दीक्षित थया न हता. हिंदमां अने हिंद बहार जर्मनी, फ्रान्स विगेरे पाश्चिमात्य देशोमां महाविद्वान जैन आचार्य तरीके जाणीता थयेला, काशी जेवा हिन्दु धर्मना किल्डामां प्रवेश करी जैन भाव तरफ ब्रह्मभाव प्रेरावनार, हिन्दु पंडितोने हाथे शास्त्रविश्वारद जैनाचार्यनुं पद मेळवनार अने बारेक वर्ष उपर देवलोक थयेला श्री विजयधर्मसूरि जे मूळमां भावनगर तावाना महुवाना वाणीया हता अने दीक्षा लेतां पहेलां घणुं थोडुं भणेला हता, तेमणे १९ वर्षनी उमरे दीक्षा लीधी हती. पोते १९ वर्षना छतां दीक्षा लेवा मावापनी संमति मेळव्या वगर भावनगर गया हता, त्यारे तूर्त दीक्षा न आपी देतां तेमना गुरुए तेमने मावापनी संमति लेवा घेर पाढा मोकल्या हता. एम छतां पण ते भारे विद्वान पडशाख्वेत्ता अने शास्त्रनुं अहर्निश चिंतन करी तेनी उन्नति करनार थया हता. जैनोमां

प्रतिष्ठित गणाना श्रीविजयनेमीसूरि, सागरानन्दसूरि अने मूळमां आपणा बडोदरा ग्रहेरना रहीश श्री विजयवल्लभसूरिजी श्रीहंसविजयजी, श्रीकांतिविजय, विगेरेए पण १६ वर्ष पहेलां दीक्षा लीधी नहोती; छतां जैन समाजमां विद्वान, प्रतिभाशाली व्यक्तिओ तरीके पे बधा पूजाय छे. दीक्षा आपवामां उतावळ करवानुं कंई कारण नयी, होय तो ते एटलुंज के कोई छोकरो छोकरी घेरयी रिसाई त्यागी थवा आव्यो छे तेने तूर्त मुँडी नांखवामां नहीं आवे तो शान्त थतां पाढो जतो रहेशे अने फरी हाथ नहीं आवे. “उपायतः कार्य-पाठनं” अने “भाव वृद्धिकरणं” ए सूत्रो दीक्षा लेवा आवेलाने पण एकदम न आपतां काई समय सुधी तेनी पासे दीक्षाना गुणोनो अभ्यास करावायी मुमुक्षुने खरेखर काई नुकसान थतुं नयी पण उलट लाभ थाय छे. दीक्षा लेतां पहेलांनी अभ्यासनी अवस्था काई ओळी पवित्र नयी. जे जैन दीक्षा लेवाने तत्पर थयो होय ते छ कायाना जीवोनी रक्षा करवा आतुर होवो जोईए. माटे पृथगी, पाणी, तेज, वायु, वनस्पति अने त्रस कायाना जीवोनी ते रक्षा करे तेवो अभ्यास तेने करावतो जोईए के दीक्षा लीधा पछी तेने ते बाबत सुगम थाय अने दीक्षा लीधा पछी ते पाळी शकरो के नहीं तेनी खात्री पण आ रीते थई शके. कहेवत छे के “सोळे सान” सोळ वर्ष पहेलां साधारण रीते खरुं खोदुं समजवानी पाकी समज आवती नयी. गुन्हाइत कृत्यने माटे ७ यी १२ वर्षनी उमरे एवां कृत्योनां परिणाम समजवानी समज होवानुं कायदामां मान्य राखवामां आवे एटला उपरथी दीक्षा लेवा जेवा संसार वैराग्यना काममां पण तेवी समज आवे एम कही शकाय नहीं. दीक्षा जेवा पवित्र कार्यने गुन्हाना कार्य साथे सरखावबुं एज उचित नयी. दीक्षा तो पोतानामां समज आवे त्यारे मात्र पोतानी संमतिथी—नहीं के मा बापनी संमतिथी—लीधी होय त्यारेज ते सफळ थवानो संभव रहे छे. माबाप के स्त्री विगेरेना अनुगोदननो (संमतिनो) प्रश्न दीक्षानो उमेदवार पोतानी समजथी दीक्षा लेवा तत्पर थाय त्यार पछोज उत्पन्न थाय छे. एवी समज साधारण रीते योग्य वय थवा वगर आवती नयी अने समजणा थयेला मात्र पोतानी समजथी दीक्षा ले त्यारेज ते फतेहमंद निवडे छे. दीक्षा लीधेला पैकी एवाज आगळ तरी आवे छे; अने अज्ञानपणामां माबापनी शिख-वणीथी के संमतिथी दीक्षा लेनारे कदाच नालायकी मेळवी घेर पाऊ न आव्या होय तोपण घायुं करीने जे पडमां दाखळ थया होय त्यांज पडी रही साधु संख्यामां नकामो वधारो करे छे.

प्रकरण ५ मुं.

कायदो.

६९. पाढला प्रकरणमां जे विवेचन करवामां आव्युं छे ते उपरथी एम नीकले बंदोबस्त करवानी बाबतो. छे के संन्यास दीक्षा लेवानी बे बाबतोमां कंई बंदोबस्त थवानी जखर छे: (१) दीक्षा लेवानो कमीमां कमीं उमर केटली जोईए ते अने (२) दीक्षा लेनारे दीक्षा लेतां पहेलां माबाप विगेरेनी संमति लेवी जोईए के केम? त्रीजी वात जोवानी ए छे के ए बंदोबस्त माटे कायदो करवो के केम?

६६. प्रथम हेल्ती बाबत एटले के कायदों करवो के केम ए जोईए. परिच्छेद ९६ मा
बतावेलुं छे के हाल दीक्षा आपवामां जे खामीओ
कायदो करवानी आवश्यकता.

जनाय छे ते दूर करवानो कंहि बंदोबस्त सरकार दर-
म्यानगिरी वगर थई शके तेम नथी. हिंदुओने तो कंहि पण करवानी परवाज नथी, अने
जोके जैनोए पोतानी दीक्षा संस्थामां सुधारो करवानो प्रश्न उठाव्यो छे खरो पण तेम-
नामां तेथी वे पक्ष पडी गया छे अने ए वे पक्ष वच्चे एटलुं बधुं वैमनस्य उत्पन्न थयुं
छे के तेओ भेगा थई आपसआपसमां समजी पोतानी मेळे कंहि करी शके एम
लागतुं नथी. सरकार वच्चे नहीं पडे तो जुना विचारना अने नवा विचारना वच्चे जे
विरोध जागी गयो छे ते बंध पडे एम नथी अने हाल वर्तमानपत्रद्वारा तेम इतर रीते
जे झगडा चाली रहा छे ते बंध थानो कंहि पण संभव नथी. बाबत जो के धर्म
संबंधी छे तोपण तेमां जे अयोग्य पद्धति चाले छे तेथी प्रजानी मानसिक, नैतिक
अने आर्थिक उन्नति उपर खराब असर थाय छे. बाललग्ननो प्रतिबंध करवानो
सुधारो जे ते कोमना अने धर्मना लोको बाललग्नयी थता गेरफायदा समजीने करवा
धारत तो करी शकत, परंतु तेमनायी ते थई शक्युं नहीं त्यारे सरकारने तेमां दरम्या-
नगिरी करवी पडी हती. आपणे अहीं शहुआतमां कन्यानी उमर बार वर्ष अने वरनी
उमर सोळ वर्ष यतां पहेलां लग्न नहीं करवा ठारववामां आवयुं हतुं. ते वखते एटली
कमी यत्ता सामे पण प्रजाना मोटा भाग तरफथी सख्त विरोध बताववामां आव्यो
हतो. पण श्रीमंत सरकारे मक्कमपणुं राखी प्रजाहित समजीने बाललग्न प्रतिबंधक
कायदो कर्यो तेथी लगभग बीस के बाबीस वर्षना समय पडी हवे वग्वत एवो आव्यो छे के सर-
कारे ठारवेली कन्यानी चौद अने वरनी उमर अढारनी सामे काईपण विरोध बताववामां
आवतो नथी; एटलुंज नहीं पण हवे चौदने बदले सोळ, अढार अने बीस वर्षनी
कन्याओ अने अढारने बदले बीस के बाबीस वर्षना छोकरा पोतानी स्वेच्छायी अवि-
वाहित रहे छे. एज प्रमाणे अमुक उमर सुधीनाने दीक्षा नहीं आपवानो कायदो सरकार
करे तो कदाच केटलाक जुना विचारना लोकोने शहुआतमां ते सख्त लागशे अने
सरकारे धर्मना काममां हाथ घाल्यो एवो कक्काट पण ते करशे तोपण जनसमा-
जना मोटा भागने ते व्याजबीज लागशे अने थोडाज वग्वतमां एवो समय पण आवशे
के ज्यारे कायदानो काईपण अमल करवानी जहर न रहेतां बधा लोको पोतानी
मेळेज ते प्रमाणे वर्तता थर्शे अने कायदो मात्र कागळ उपर रहेशे. पूर्व काळमां पण
दीक्षाप्रणाली पर राजशासननां अकुश मुकायानी हकीकत इतिहास उपरथी मळी आवे
छे. इ. स. पूर्वे चोथा सैकामां कौटिल्यना समयमां दीक्षा संबंधी प्रश्ने राज्यमां मोटी
व्यग्रता उपजावी हती अने एटला माटे कौटिल्ये स्पष्टपणे राजाओने साधुदीक्षाना
मामलामां दखलगिरी करवानी सलाह आपी हती. कौटिल्य कहे छे के प्रवर्ज्यानी बाबतमां
अनुचित आचरणनी तमाम रीतो दंडथी राजाए अटकाववी जोईए. केम के धर्म ज्यारे
अधर्मयी घेराय छे, उपहत थाय छे, त्यारे जो बेदरकारी राखवामां आवे तो राजाने,

शासकने नष्टभ्रष्ट करी मूके छे. वळी कौटिल्ये कहुं छे के “ जे माणस पोतानी पत्नी अने बाळबच्चां माटे योग्य बंदोबस्त कर्या वगर घर छोडे अर्थात् संन्यास अखत्यार करे तेने “ साहस दंड ” नी सजा थवी जोईए; अने जे कोई स्त्रीने प्रव्रज्या लेवडावे तेने पण तेटलीज सजा करवी जोईए. जे माणसे पोतानी ताकाद गुमावी दीधी होय ते न्यायाधिशीनी परवानगीथी प्रव्रज्या लई शके, पण तेम करवानुं (परवानगी लेवानुं) जो चूकी जाय तो तेने केद करवो जोईए.^१”

६७. वडोदरा राज्ये एकलाए कायदो करवानी विरुद्ध एक दलील एवी करवामां कायदानो अमल केवो अशे. आवी छे के आखा हिंदुस्थानमां जैनोनी वस्ती

१२,९२,१०९ छे ते पैकी २,००,०१९ मुम्बाई इला-

कामां छे अने वडोदरा राज्यमां मात्र ४८,४०८ छे. तेथी आखा हिंदने माटे कायदो थया वगर मात्र वडोदरा राज्यमां करवामां आवे तेथी काँई धारेलो सुधारो यई शके नहीं; कारण के वडोदरा राज्य बहार ज्यां एवो कायदो न होय त्यां जईने वडोदरा-वासीओने दीक्षा आपवामां आवे तो तेओ कायदाना अमलमांथी सहेलाईथी छटकी जई शके. बाळलग्न प्रतिबंधक निबंधना संबंधमां पण आवीज दलील करवामां आवी हती, परंतु ते परिणामे निरर्थक जणाई हती; तेम दीक्षाना कायदाना संबंधमां आ दलील निरर्थक छे. फोजदारी काम चलाववानी रीतना निबंधनी कलम १८९ प्रमाणे आ राज्यनी रैयत पैकी कोई सखसे आ राज्यनी बहार करेलुं कृत्य आ राज्यना कायदा प्रमाणे गुन्हो थतुं होय पण जे ठेकाणे ते कृत्य करवामां आव्युं होय त्यांना कायदा प्रमाणे गुन्हो थतुं न होय त्यांरे एवा कोईपण गुन्हा बाबत हळूरना अथवा हळूरे आ बाबत जेने अधिकार आप्यो होय ते अमलदारना हुकम्थी एवा कृत्य बद्दल आ राज्यमां काम चलावी शिक्षा थई शके छे. वळी जेम शरूआतमां बाळलग्न प्रतिबंधक निबंधनो कायदो प्रथम आ राज्यमां अने म्हैसूरमां ययो हतो अने पाळळथी तेतुं अनुकरण करी बीजा घणाखरा राज्योमां अने ब्रिटिश इंडियामां पण ययो छे अने लग्न करवानी उमर पण प्रथम करतां घणी वधारवामां आवी छे ते प्रमाणे संन्यास दीक्षाना नियमन संबंधी कायदानी पण बीजा राज्योमां जरूर जणाशे तो ते प्रमाणे त्यां पण कायदो थशेज. एवे प्रसंगे त्यां दीक्षा लेवानी उमरनी यत्ता अहिना करतां पण उंची राखवामां आवे ए बनवा जोग छे. वडोदरा राज्यना जैन लोकोनो मोटो भाग कायदो करवानी तरफेणमां छे. कायदा सामे जेमना तरफथी बधारे विरोध ययो छे ते वडोदरा राज्य बहारनानो छे. तेमनो ए विरोध मुख्यत्वे करीने एवी धास्तीथी थयेलो छे के आवो कायदो करवानी वडोदरा राज्य पहेल कर तो बीजा राज्यमां पण आवो कायदो थई जाय. परंतु जो जरूर होय तो बीजे ठेकाणे पण कायदो थाय तेथी कोईए बीवानुं काँई कारण नयी. वास्तविक प्रश्न ए जोवानो छे के आवी बाबतमां कायदो करवानी आवश्यकता छे के नहीं. अमे आ निवेदनमां जणावेली एकंदर हकीकत उपरथी अमारो अभिप्राय एवो ययोछे के

^१ कौटिल्य अर्थशास्त्र. १०-११.

कायदो करवानी जरूर छे. कायदो यथाथी हाल दीक्षा संबंधे चालता झगडा, साधुओ उपर मूकाता अपवादो अने कुटुंबमां यथो क्लेश पण बंध यशे अने जेओ समजयी अने लागतावलगतानी संमतिशी दीक्षा लेवा योग्य हशे तेज दीक्षा लई शक्षे. आथी दीक्षानुं महत्व घटवाने बदले उलटुं वधशे; साधु संस्था काई बंध नहीं थई जाय पण तेमां दाखल यथा लायक हशे तेज दाखल थई शक्षे अने तेथी साधु संस्था प्रत्ये जैन समाजनी हाल जे भावना छे तेमां घटाडो यथाने बदले उलटो वधारो यशे.

६८. हवे सरकार तरफथी कायदानो जे खरडो प्रसिद्ध थयो छे तेमां कई फेर-प्रसिद्ध थयेला खरडानो केवो फार करवा जेवो छे के केम अने हशे तो शो तेनो फेरफार करवो ते बाबत. विचार करीयु. कायदा (निंबंध) ने “ संन्यास दीक्षा प्रतिबंधक निंबंध ” एवुं नाम आपेलुं छे ते उपरथी केटलाकनी एवी समज थयेली छे के आ कायदानो हेतु संन्यास दीक्षा बंध करवानो छे. परंतु ते समज्जुत बरोबर नयी. कायदो करवानो हेतु दीक्षा समूळगी बंध करवानो नहीं पण कुमठी वयनां बाळकोने अपाती अयोग्य दीक्षा बंध करवानो छे. कोइपण प्रकारनी गेरसमज रहे नहीं अने कायदाना नाम उपरथी तेनो हेतु समजी शक्य एटला माटे अमारी सूचना एवी छे के सरकारे करवा धरेला आ कायदानुं नाम “ संन्यास दीक्षा प्रतिबंधक निंबंध ” एवुं राखवाने बदले “ संन्यास दीक्षा नियामक निंबंध ” एवुं राखवुं; अने ते वात हेतु अने कारणोमां स्पष्ट करवी.

६९. परिशिष्ट १ ना मुसद्दानी कलम ३ नी पेटाकलम (१) सज्जानपणानी उमर अने १६ वर्षीयी कमी उमरना माटे पात्यपालक संबंधी निंबंधनी कलम ४ मां सज्जान वयनी यत्ता अटार वर्षनी ठाराववामां आवी छे ते धोरणे राखवामां आवी छे. संन्यास दीक्षा लेवाने ए उमर कई वधारे नयी. परिच्छेद ४१ मां अमे जे विवचन कर्युं छे ते प्रमाणे संन्यास दीक्षानो हेतु बरोबर समजी मोटी उमरे संन्यास लेवाय तेज सारुं छे; अने तेटला माटे १८ के २० वर्षनी यत्ता कई वधारे नयी. परंतु अमे आगळ बताव्युं छे तेम पाल्य पालक निंबंधमां अज्ञान वयनी जे यत्ता ठारवी छे, ते एज कायदानी कलम ६ थी धर्म अथवा धर्म संबंधी कृत्योना संबंधमां लागू थती नयी. मनुष्यहरण गुन्हामां अने हिंदु धर्मशास्त्र अने सरेह प्रमाणे लग्न माटे संमति आपवानी वय सोळ करतां वधारे राखेली नयी. फोजदारी कायदा प्रमाणे १४ वर्षना छोकराने अगर १६ वर्षनी छोकरीने तेनी संमतिशी कोई लई जाय तो ते मनुष्यहरणनो गुन्हो थतो नयी. बळी दीक्षा नियामक कायदो करवानो हेतु ए छे के सारी वयनां छोकरां जे उमरे पोतानी मेळे संमति आपवाने नालायक होय तेमने मात्र तेमनी संमति उपरथी अगर तेमनां मावापनी संमति लइने अगर लीधा वगर छानीमानी रीते दीक्षा आपी देवाय ते अटकाववानो छे. तेर्थी कमीमां कमी जे उमरे छोकरो के छोकरा पोतानी जाते कायदा प्रमाणे संमति आपो शक्तां होय ते उमर लक्षमां राखाने विचार करतां एम लागे छे के १८

वर्ष जेटली नहीं पण १६ वर्षथी कमी उमरनाने दीक्षा आपवानुं बंध करवामां आवे तेज योग्य थशे. बाळलग्न प्रतिबंधक निबंधमां पण शस्त्रआतमां कमी उमर राखी लोको समजता थया पछी पाछलथी क्रमे क्रमे उमर वधारवामां आवी हती. एज प्रमाणे दीक्षाना काममां हाल तूर्त १६ वर्षनी उमर सुधी प्रतिबंध राखवामां आवे तो आगळ उपर लोकमत केळवाशे, ते प्रमाणे तेमां वधारो करी प्रतिबंधनी यत्ता १८ के तेथी वधारे उमर सुधी राखवानुं योग्य जणाशे तो ते बाबत घटीत तजवीज थई शकशे. माटे हाल तूर्तने माटे अमारो अभिप्राय एवो छे के कलम ३ एवी रीते सुधारवी के तेथी सोळ वर्षनी अंदरनी दीक्षानोज प्रतिबंध थाय.

७०. अमारा आगळ एक सूचना एवी करवामां आवी हती के सरकारनो हेतु

सोळ वर्षनी उमरना विशेष मात्र संमति वगरनी अने अयोग्य रीते छुपी रीते अपाती प्रकारनी बुद्धिवाळा बाळको माटे दीक्षाज बंध करवानो छे; बधी दीक्षा बंध करी नांखवानो अपवाद करवनी जरूर नयी.

नयी, तेथी आ सामान्य धोरणने एक एवो अपवाद राखवो के, ८ थी उपर अने १६ थी कमी वयना कोई विशेष प्रकारनी बुद्धिवाळा बाळकने खरेखर पोतानी समज शक्तिथी खरेखरो वितराग आववाथी दीक्षा लेवानी तीव्र इच्छा थई होय अने तेमां तेना माबाप पण शुद्धबुद्धिथी मात्र तेना धार्मिक लाभने माटे सम्मत छे एवी प्रांत फोजदारी न्यायाधीश वर्ग १ (सुबा) अगर सरकार ठारवे एवा बीजा कोई अमलदारे करेली तपास उपरथी तेमनी खात्री थाय तो तेमनो दाखलो मेळवीने तेवी विशेष प्रकारनी व्यक्तिने दीक्षा लेवानी छूट आपवी; आवो अपवाद राखवाथी धर्मथी ठरेली उमरनी यत्तामां हाथ घालवामां आवे छे एम कहेवाने कोईने कंई कारण रहेशे नहीं. तेम कोई बाळकने खरेखरो वितराग थयो हशे तो तेने अपवाद तरीके दीक्षा आपवानी छूट पण रहेशे. परंतु आ सूचना स्वीकारवी ए योग्य थाय एम अमने लागतुं नयी. अमे आगळ जणाव्युं छे तेम दीक्षा लेवानी उमरनी यत्तामां फेरफार करवाथी दीक्षा लेवाना शास्त्रनां सिद्धांतमां कंई फेरफार थतो नयी अने थतो होय तोपण देशकाळने अनुसरी ते करवो जोईए. कोई बाळक पोतानी इच्छा प्रमाणे गमे त्यां लग्न करवाने सोळ वर्ष पहेलां लायक गणातुं नयी. तेम संसार छोडी दीक्षा लेवाना धर्म काममां पण १६ वर्ष पहेलां ते पोतानी इच्छा प्रमाणे वर्ती शकतुं नयो. तेनी पोतानी संमति पुरती नयी तेथीज तेना माबाप के वाळीनी संमतिनी अपेक्षा सोळ वर्षनी अंदरनां बाळको माटे शास्त्रमां पण राखेली छे. माबाप के वाळी संमति आपता होय तोपण ते केवळ शुद्धबुद्धिथी बाळकना हितने माटे आपे छे के केम ते बाळक पोते पण आवे प्रसंगे पोताना कृत्यनुं परिणाम पोताना सांसारिक हक्क उपर केंद्र थशे ते बरोबर समजीने तथा संसार उपर खरेखरी रीते भाव उठी जवाने लीवे आवे छे के केम ए नक्की करबुं मुश्केल छे. वळी एवी छूट राखवाथी हालमां शिष्यलोभने लीधे नसाडवा, भगाडवाना, लालच आपवाना, दबाण कर्याना, टंटा थवाना, अने पाछलथी खरी हकीकत समजाय त्यारे बाळके पोते साधुनो वेष छोडी संसारमां पाछा आव्याना

दाखला अमारी समितिनी तपास चालतां पेहेलां तेम ते दरभ्यान बनवा लाग्या छे ते बंध थशे नहीं ताजो दाखलो पाटणना कुसुमविजयना संबंधमां नवेबर १९३२ मांज बनेलो छे अने तेने माटे वर्तमानपत्रोमां उहापोह चाली रह्यो छे. माटे सारासार विचार करतां सोळ वर्षयी कमी उमरना बाळको माटे कोई प्रकारनो अपवाद करवानी सूचना अमे योग्य धारता नयी.

७१. सोळ वर्ष तथा ते उपरनी उमरना शखस माटे पोतानी इच्छाथी दीक्षा लेवानी सोळ वर्ष तथा ते उपरनी उमरना सखसो माटे दीक्षा लेवानी छूट. छूट रहे तो पछी तेमां माबापनी संमतिनो प्रश्न रहेतो नयी; कारण के एवी संमति वगर पण पोतानी कायदेसर लाय-कीने लीधे ते पोतानी मरजी प्रमाणे करी शके छे. परंतु जो के आवे प्रसंगे कायदा प्रमाणे माबापनी संमतिनी जरूर रहेती नयी तो पण नैतिक धोरणे रहे छे. जेमणे नानपणथो पाठी पोषीने मोटा कर्या तेमने तेमनी रजा वगर छोडीने चाल्या जरुं ए निय छे; अने जे खरो धर्माचरणी होई दीक्षा लेवा धर्मलाभ माटेज इच्छातो होय तो ते पोताना माबापनी लागणीनी अवगणना करे नहीं पण तेमने समजावीने पण तेमनी अनुमति लेज; अने सुझ माबाप पण पोताना ऐहिक स्वार्थनो विचार करवाने बदले पोताना पुत्र के पुत्रीना परलौकिक हितनो विचार करी घणुं कीने संमति आपवानाज; पण कदाच न आपे तोपण सोळ वर्षनी उमरनो तेमनी संमति वगर पण दीक्षा लई शके. कदाच जेनी पासे दीक्षा लेवानी होय ते आचार्य, माबापनी संमति न होय तो दीक्षा न आपे तो ते तेना अधिकारनी अने मरजीनी वात छे. पण जो एवी संमति न होवा छतां पण जो दीक्षा आपत्री तेने योग्य जणाय तो तेम करवाने कायदानी कंई मनाई न होवी जोईए.

७२. परंतु ख्री के धणीनी संमतिनी आवश्यकता जूदाज कारणसर रहे छे. ख्री के धणीनी संमतिनां पोताना धणीनी संमात वगर अगर तेनाथी छेडोछूटको कारणो. लीधा वगर तेने मुकीने चाली जई शकती नयी. तेम धणी पण पोतानी ख्रीनी संमति लीधा वगर अने तेना भरणपोषणने माटे बंदोबस्त कर्या वगर तेने छोडी दईने चाल्यो जई शकतो नया. जो एम करे तो तेने मोटी हानि करे छे अने पोताना लग्ननी प्रतिज्ञा तोडे छे; माटे दीक्षा लेवानी इच्छा करनार पुरुष के ख्रीए लग्न करेलुं होय अने ख्री के धणी हयात होय तो पोतानी ख्री के धणीनी संमति वगर दीक्षा लेवाने तेने प्रतिबंध करवो ए व्याजबी अने तेटला माटे जो के १६ वर्ष तथा ते उपरनी उमरनो सखस दीक्षा लेवा लायक गणाय छे तो पण जो तेनी ख्री के धणीनी संमति न होय तो दीक्षा लेवानो तेने प्रतिबंध थाय एवी कलम कायदामां दाखल करवी जोईए.

७३. संघनी संमतिनी अपेक्षा कांई एवी नयी, के तेना वगर दीक्षा लई शकायज नहीं. वठी अमारी भलासण प्रमाणे कायदो थाय तो दीक्षामां अयोग्यपणुं थतुं अटकाववाने कायदानी कलमोज पुरती छे अने तेमां संघनी संमतिनो ववारो करवानी

कंई खास आवश्यकता रहेती नथी। हालनी स्थितिमां संघ अव्यवस्थित अने निर्बल थई पड्यो छे अने तेनी संमतिनी अपेक्षा राखवामां आवे तो ते कोनी पासे मागवी, कोण केवी रीते आपी शके; ए पण ठरावी आपवुंज जोईए अने जो न ठरावो आपवामां आवे तो योग्य प्रसंगे पण संमति मळवी मुझेक्ल थई पडे, वळी संघनी संमतिनो उद्देश कायदामां अयोग्य दीक्षा अपाती बंध थवायी पूरो पण पडे छे. एटले तेने माटे कंई आवश्यकता होय एम अमने लागतुं नथी।

७४. कायदामां ठावेली संमतिनो पुरावो केवो होवो जोईए ए विषे हवे विचार करवानो रहे छे. केटलाक जणे एवी सूचना करी हती संमति माटे पुरावो केवो होवो के दीक्षाना उमेदवारे प्रांतना सुबा पासे अरजी करवी जोईए? अने तपास करी ते जे काममां दाखलो आपे ते काममां ते दाखलो संमतिना पुरावा तर्के गणवो जोईए. बीजा केटलाकनुं कहेबुं एबुं हतुं के दीक्षाना उमेदवारे दिवानी न्यायाधिशीमां अरजी करवी जोईए अने न्यायाधीशे एवी अरजी आव्या पछी तेनी प्रसिद्ध रीते जाहेरात आपवी अने अरजीमां जणावेला सगां संबंधीने सूचना आपी तेमनी कंई हरकत न होय तोज दीक्षा लेवानो दाखलो आपवो जोईए. परंतु आ बन्ने प्रकारोथी घणो विलंब, खर्च तथा अयडामण थवानो संभव रहे छे. वळी आवा दाखला माटे न्यायाधिशीमां एक मुकदमो चलाववा जेवी योजना करवातुं काँई कारण नथी. दीक्षानो उमेदवार एक एवो लेख तैयार करे के जेमां तेनु नाम, ठाम, ठेकाणु अने उमर बतावी होय, तेना मावाप अने लग्न थयुं होय तो धणी के स्त्री हयात छे के नहीं ते जणाब्यु होय, अने स्त्री के धणी हयात होय तो तेमनी संमति बद्दल तेमनी सही लीधेली होय अने तेवो लेख हुक्मतवाळी नोंधणी कचेरीमां रजू करी नोंधणीना कायदा प्रमाणे नोंवाव्यो होय तो तेथी सही तथा सहीओ करना-रना खरापणा विषे इतर लेखोनो पैठ नोंधणी कामदार जोइती खात्री करी शके छे. माटे संमति बद्दल अमे आ निवेदन साथे सामेल राखेला कायदाना नवा मुसद्दामा नमनो सूचव्यो छे ते प्रमाणे एक लेख थवानी, ते नोंधाववानी अने एवो नोंवावेलो लेख रजू कर्या वगर दीक्षा नहीं आपवानी एक कलम कायदामां दाखल थाय तो तेथी जेमनी संमति लेवानी आवश्यकता राखवामां आवे ते संमति छे के नहीं, ते जोवाने दीक्षा आपनार पासे ते दाखलो रजू थतां तेमने सहेज जणाई आवशे।

७५. केटलाक तरफथी एक सूचना एवी थई छे के जेणे दीक्षा लीधी होय ते दीक्षा छोडी देनारनो मिलकत मलवानो मिलकत उपरनो तेनो हक्क कायम रेहेवो जोईए. उपरनो हक्क परंतु आ सूचना अमने योग्य जणाती नथी. मिलकत विगेरेनो त्याग ए दीक्षानुं मुख्य अंग छे अने ज्यारे कोई इसमे दीक्षा लीधी होय त्यारे ते लीधायीज मिलकत उपरनो तेनो हक्क नष्ट थाय छे. एटला माटे दीक्षा लेनार कोई पण सखस दीक्षा छोडी पाछो संसारमां आवे त्यारे ते हक्क तेने फरीथी मळवो न जोईए.

जो हक्क पाछो मळे एम ठराववामां आवे तो पुख्त विचार कर्या वगर दीक्षा लेवा दोडी जवाना उतावठीया कामने उत्तेजन मळशे अने दीक्षा छोडी देवाना दाखला वघवानो अने तेथी दीक्षानुं महत्व घटवानो पण संभव रहेशे. दीक्षा छोडी पाछा घेर जईशुं तोपण आपणो मिळकतनो हक्क आपणने मळवानो नथी एवी समज होय तोज दीक्षा लेवामां थंतुं उतावळपणुं अटके माटे आ सूचना अमे मान्य राखता नथी. परंतु दीक्षा गेर-कायदेसर एटले के कायदामां ठरावेली उमरना अंदरना इसमोने आपी होय अगर जेमनी संमतिनी आवश्यकता कायदामां राखी होय तेमनी संमति वगर आपी होय तो तेवी दीक्षा परिशिष्ट १ ना खरडानी कलम ४ प्रमाणे मूळयीज निरर्थक अने रद्द बातल छे अने तेथी मिळकतना हक्क उपर एवी गेरकायदे दीक्षाथी काही असर थती नथी अर्थात् एवो हक्क मूळमांज काही जतो नथी ए उवड छे. परंतु एवो इसम जो दुनियादारीमां पाछो आववा ईच्छतो होय तो पोतानो हक्क तेणे सामान्य कायदामां बतावेली मुदत अंदर स्थापित करावी लेवो जोईए.

७६. परिशिष्ट १ ना खरडानुं त्रीजुं प्रकरण शिक्षा माटे छे. ए प्रकरणमां

फरियाद.

परंतु फरियादकोणे करवी, खानगी द्रेष के अदावतना

लीधे खोटी फरियाद न यतां शुद्धबुद्धियीज करवामां आवे तेने माटे शो बंदोबस्त राखवो अने फरियाद करवानो प्रसंग आवे तो काम कोना आगळ चलावळुं ५ विषे विचार थई कलमो दाखल येली नथी. अमने लागे छे के आवा प्रकारना कायदामां ठरावेला गुन्हा बदल फरियाद कोईपण इसम करी शके पण एवा गुन्हा पोलिस अधिकारमां आववा न जोईए. निंबध विरुद्ध काही गुन्हाईत कृत्य बन्युं होय तो तेने माटे फरियाद प्रथम फोजदारी न्यायाविशी वर्ग १ आगळ यवी जोईए; अने तेमणे ते बाबत प्रायमिक तपास करी जो हकीकत खरी जणाय तो अधिकारवाळा पहेला वर्गना फोजदारी न्याया धीशो काम चलाववानी मंजूरी आपवानुं धोरण कायदामां दाखल थंतुं जोईए. एवी मंजूरी वगर फरियादनुं काम न चालवुं जोईए. सामान्य फोजदारी कायदा प्रमाणे मनु-व्यहरण विगेर गुन्हो बनतो होय तेने माटे उपर प्रमाणेनी विधिनी जरूर नवी पण जो दीक्षा निंबधमां ठरावेला गुन्हा बदलज फरियाद करवी होय तो तेने माटे उपर प्रमाणे विधि यवी जोईए, के जेथी खोटी फरियाद थवाना अनें कोईने वगर कारणे हेशन करवानो प्रसंग बने नहीं. टुक्रामां धी इंडियन चाइरेड मैरेज रीस्ट्रेन्ट अॅक्ट (सन १९२९ नो १९ सो) मां गुन्हानुं काम चलाववा संबंधी जे धोरणो छे ते बनता लगी आ निंबधमां दाखल करवानो सुधारो करवो जोईए. ए निंबध प्रमाणेना गुन्हानो इन्साफ डिस्ट्रीक्ट मैजीस्ट्रेट अगर प्रेसीडेन्सी मैजीस्ट्रेट शिवाय वीजा कोईयी थई शकतो नथी, वळी गुन्हो बन्यानी तारीखवी एक वर्षाती अंदर फरियाद थई न होय तो काम चलावी शकानुं नथी. फरियादीनी जुवानी लीधा पछी अने आरोपी उपर आव्हानपत्र काढतां अगाउ न्यायाविशीए फरियादी पासे रु. १०० रोकड अना-

मत मुकाववानुं अगर ते आपवानुं एक खत जामीनसह के जामीनवगर करी आपवानुं ए कायदामां राख्युं छे, पण आ कायदामां तेनी जखर नथी, कारण के आवा गुन्हाना काममां खोटी फरियाद थवानो संभव ओछो रहे छे. वठी फरियाद करवाना काममां एवी सख्ताई राखवामां आवे तो कोई फरियाद करवानी परवा रखे नहीं अने गुन्हा बन्या छतां कायदानो अमल थाय नहीं; कारण के खरा प्रसंगे पण फरियाद करवा आगळ आवे एवा निडर अने परोपकारी लोको आपणा समाजमां योडाज होय छे; तो पछी तेमनी पासे रकम अनामत मुकवानुं ठाकवामां आवे तो भग्येज कोई फरियाद करवा आगळ आवे, एक सूचना एवी थई हती के बाल्लग्न प्रतिबंधक निबंध विरुद्ध गुन्हानी फरियादो गामना पटेल करे तेम दीक्षा निबंध विरुद्धना गुन्हानो फरियादो पण सरकार तरफथी थवा धोरण ठाकवुं जोईए. पण आ सूचना स्वीकारवानी अमे भलामण करी शकता नथी, दीक्षा निबंध विरुद्ध गुन्हा काई एउआ वधा थगना नथी के तेने माटे गामेगाम बाल्लग्ननी पेठे पत्रको राखावबां योग्य थाय. एक वर्षमां आखा राज्यमां थईने भग्येज आठ दस फरियादो थवानो प्रसंग आवे; जो के आ गुन्हा पोलिस अधिकारना न होवाथी पोलिस पोते थईने तेनी तपास करी शके नहीं पण पोलिसने मळेली खबर उपरथी फरियाद करवी योग्य जणाय तो तेम करवाने काई बाध नथी पण वास्तविक रीते तो आवा कामनी फरियादो जे ते धर्मना अनुयायीओना स्थानिक आगेवानोए अगर लागतवळगता संबंधवाळाए करवी ए तेनुं कर्तव्य छे.

७७. अयोग्य दीक्षा हवे बे प्रकारनी थशे. (१) अज्ञानने आपेली दीक्षा अने

(२) सज्जन सखसे लेख करी आप्या शिवाय लीखेली

दीक्षा अगर तेणे लेख करी आप्यो छे एवी खात्री कर्य वगर तेने आपेली दीक्षा. आ पैकी पहेला प्रकारनो गुन्हो ए बीजा प्रकारना गुन्हा करतां वधारे गंभीर प्रकारनो छे. तेथी ते माटे वधारे सख्त शिक्षा राखवी जोईए. अमारा अभिप्राय प्रमाणे पहेला प्रकारना गुन्हा माटे एक वर्ष सुधीनी गमे ते प्रकारनी केदनी तथा ते उपरांत पांचसो रूपिया सुधीना दंडनी शिक्षा राखवी जोईए. बोजा प्रकारना गुन्हा माटे छ मास सुधीनी आसान केदनी अगर पांचसो रूपिया सुधीना दंडनी शिक्षा राखी होय तो बस थशे.

७८. प्रसिद्ध थयेला निबंधनो खरडो अमारी सूचना प्रमाणे सुधारवामां आवे तो निबंधनो सुधारेलो खरडो. ते केवो थशे ए अमे परिशिष्ट ३ थी नवो मुसद्दो सामेल क्यों छे ते उपरथी जणाशे.

७९. अमारे करवानुं काम घणी मुश्केली अने गुंचवाडा भरेलुं हतुं अने काई पण निर्णय पर आवतां पहेलां अमरे घणुं विचारवानुं तथा उपसंहार.

तपासवानुं हतुं ते संबंधमां अमाराथी बनतो प्रयत्न अमे क्यों छे. अमारी सूचनाओ जैन धर्मना अनुयायीयो के जेमनामां बे पक्ष बंधाई घगो

विरोध चाले छे तेमने बधाने पूरो सतीष आपी शके नहीं प उघड छे. तोपण अमे आशा राखीए छीए के तेमने एटलुं तो कबूल कर्या वगर नहीं चाले के आ महत्वना काममां तेमना धर्मने काँई अडचण आवे नहीं एवी सरळ, साधारण अने व्यवहारू प्रकारनी भलामणो अमे करी छे. अमे आशा राखीए छीए के अमे जे भलामण करी छे ते स्वीकारवायी संन्यास दीक्षा जेवी महत्वनी अने उच्च धर्मनी बाबतमां हाल जे मलीनता दाखल थयेली छे ते दूर थई जे ते धर्मनो जेवा प्रकारनो दीक्षित वर्ग हाल छे तेना करतां आगल उपर बधारे शुद्ध अने सारो थशे. अमारु निवेदन तथा भलामण सरकार तथा जे ते धर्मना अनुयायीओने पसंद पडशे तो तेथी अमारी महेनत सफळ थई एम मानी अमे खुशी थईशुं.

८०. आ निवेदन बंध करतां पहेलां अमारा सेक्रेटरी नायब न्यायमंत्री रा. रा.
आभार प्रदर्शन. पुष्करराम वामनराम महेता एम. ए., एलएल. बी. तथा
तेमना शिरस्तेदार रा. छोटालाल मगनलाल शाह बी. ए.
एमणे जे उमंग, खंत अने श्रमथी अमने अमारा काममां मदद करी छे तेने माटे अमे
तेमनो आभार मानीए छीए अने तेमनी आ सारी नोकरी सरकारना ध्यान उपर
लावीए छीए.

तारीख ६ माहे डिसेंबर सन १९३२.

पु. वा. महेता.

गोविंदभाई हा. देसाई.

वि. कृ. घुरंधर.

अ. आ. केहीमकर.

परिशिष्ट १ लुं.

संन्यासदीक्षा प्रतिबंधक निबंधनो मुसद्दो.

श्रीमंत सरकार महाराज सयाजीराव गायकवाड सेनाखासखेल समशेर बहादूर, जी. सी. एस आयू., जी. सी. आयू. ई., फरजंदे-खास-ई-दौलते-इंगिलशिया एमणे नीचे लखेलो “संन्यासदीक्षा प्रतिबंधक निबंध” मंजूर कर्यो छे.

सन १९३१ नो मुसद्दो अंक २ जो.

संन्यासदीक्षा प्रतिबंधक निबंध.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रम अंक.

बाबत.

पृष्ठ.

० उद्देश.

प्रकरण १ लुं.

प्राथमिक.

१. संज्ञा.
२. व्याख्या.

प्रकरण २ जुं.

प्राथमिक.

३. (१) सगीरने दीक्षा नहीं आपवा बाबत.
- (२) रजामंदी होय तोपण पेटाकलम (१)
ना ठरावने बाध नहीं आववा बाबत.
४. कलम ३ ना ठराव विरुद्ध अपायली दीक्षा निरर्यक होवा बाबत.

प्रकरण ३ जुं.

शिक्षा.

५. शिक्षा.

संन्यासदीक्षा प्रतिबंधक निबंध.

साधु, संन्यासी, यति, योगी, वेरागी तथा फकीर विगेरे एवा लोको तरफथी अज्ञान बाल्कोने, संन्यास एटले संसार त्याग करवानी उद्देश.
दीक्षा आपवामां आवे छे अने तेनाथी अनेक अनर्थी याय छे ते अटकाववा काँईक प्रतिबंध मुक्कवो जरूर छे एम जणायायी श्रीमंत सरकार महाराज सयाजीराव गायकवाड सेनाखासखेल समशेर बहादूर, जी. सी. एस. आयू., जी. सी. आयू. ई., फरजंदे-खास-ई-दौलते-इंगिलशिया एमणे नीचे प्रमाणे ठाराव्युं छे:-

प्रकरण १ लं.

प्राथमिक.

१. आ निबंधने “ संन्यासदीक्षा प्रतिबंधक निबंध ” कहेवो.

संहा,

२. पुर्वापर संबंध उपरथी बाध आवतो न होय तो
व्याख्या,

(क) “ संन्यासदीक्षा ” ए शब्दमां कोईपण धर्मना
संन्यासदीक्षा.

(अ) (१) साधु,
 (२) संन्यासी,
 (३) यति,
 (४) योगी,
 (५) वेरागी,
 (६) फकीर,
 विगेरे एवा माणसो पोताना

(आ) (१) धर्ममां अथवा
 (२) पंथमां,
 जीवन गळवाने कोईपण माणसने

(इ) (१) मंत्र आपे,
 (२) मुंडे,
 (३) चेलो करे,
 (४) लुच्चितकेश करे,
 (९) कफनी ओराढे,
 (६) नाथे अथवा
 (७) एवीज बीजी कोई रीते किया करे

के जेथी संसारनो त्याग कयों गणाय तेनो समावेश थाय छे.

(ख) “ दीक्षा ” एटले “ संन्यासदीक्षा ” एम समजबुं.

दीक्षा.

प्रकरण २ ऊँ.

प्रतिबंध.

३. (१) “ सज्जानपणानी उमर तथा पाल्यपालक संबंधी निबंध ” नी कलम सगीरने दीक्षा नहीं आपवा ४ मां जेने आवत.

(अ) सगीर गणवामां आव्यो छे तेने, तेमज

(आ) जे सज्जान थयो नयी एम गणवामां आव्यो छे तेने कोईपण माणसथी संन्यासदीक्षा आपी शकाशे नहीं.

(२) (अ) पेटाकलम (१) मां जणावेलो

रजामंदी होय तोपण पेटाकलम
(१) ना ठरावने बाध नहीं
आपवा बाबत,
प्रसंग.

(१) सगीर अथवा

(२) जे सज्जान थयो नयी ते अगर

(आ) (१) तेनां माबाप अगर

(२) वाली

परिणाम. संन्यासदीक्षा आपवा माटे रजामंदी आपे तेथी पेटाकलम (१) ना ठरावने बाध आवशे नहीं.

४. कलम ३ मां कहेला ठराव विरुद्ध जो कोई तेवी दीक्षा आपशे तो ते सर्व प्रसंग. कारण माटे

कलम ३ ना ठराव विरुद्ध
अपायली दीक्षा निरर्थक होवा
आवत.

परिणाम. निरर्थक गणाशे एटले के, तेवी दीक्षा अपायला सखसना

(अ) (१) संप्राप्त अगर

(२) भविष्यमां प्राप्त थनारा

कोईपण

(आ) (१) वारसाईना,

(२) भरणपोषणना,

- (३) वहेंचणीना अगर
 (४) बीजा कोईपण
 (५) कायदेसर
 (१) हक्कने तथा
 (२) जवाबदारीओने
 तेवीं दीक्षाथी कोईपण जातनो बाब आवशो नहीं.

प्रकरण ३ ऊँ.

शिक्षा.

९. कलम ३ ना ठराव विरुद्ध जो कोई सखस,
 शिक्षा.

(अ) (१) दीक्षा आपशे अगर
 प्रसंग. (२) फोजदारी निवंधमां “ मददगारी करवी ” ए शब्दोनी जे
 व्याख्या आपवामां आवी छे ते प्रमाणे दीक्षा आपवामां मददगारी
 करशे

तो ते

(आ) (१) एक वर्ष सुधीनी
 (अ) सखत अगर
 परिणाम. (आ) आसान
 केदनी अथवा
 (२) रुपिया एक हजार सुधीना दंडनी,
 अथवा
 (३) बने
 शिक्षाने पात्र थशे.

तारीख २४ माहे जुलाई सन १९३१.

मं. से. दवे.

विष्णु कृष्णराव धुरंधर,
 न्यायमंत्री.

સંન્યાસદીક્ષા પ્રતિબંધક નિબંધ.

હેતુઓ અને કારણો.

તારીખ ૧૯-૧૨-૧૯૨૯ ની ધારાસમાની બેઠકમાં રા. લલ્લુભાઈ કિશોરમાર્ફે
નીચેનો ઠરાવ આપ્યો હતો:-

હાલનો મુસદ્દો તૈયાર કર-
ની જરૂરિયાત. ધારાસમાની
રા. લલ્લુભાઈનો ઠરાવ.

“ નાહની ઉમરમાં માણસોને દીક્ષા આપી ત્યાગી બનાવવામાં આવે છે. તેથી
કુમળી વયના અને કાચી બુદ્ધિનાં માણસો સમજ વગર દીક્ષા લે છે અને
ત્યાગી બને છે, તેથી ઘણા પ્રસંગે અનર્થ યાય છે. માટે જેની ઉમરનાં ૨૧
વર્ષ પૂરાં થયાં ન હોય તેવા કોઈપણ માણસ, સ્ત્રી અગર પુરુષને સંસાર ત્યાગની
દીક્ષા આપી શકાય નહીં તથા જેની ઉમરનાં ૨૧ વર્ષ પૂરાં થયાં હોય પણ
૩૦ વર્ષ પૂરાં થયાં ન હોય તેવા માણસને પ્રાંત ફોજડારી ન્યાયાધિશીની પર-
વાનગી મેલદ્વયા શિવાય સંસારત્યાગ કરવાની દીક્ષા આપી શકાય નહીં એવું
ધોરણ ઠરાવવા આ ધારાસમા શ્રીમંત સરકારને વિનંતિ કરે છે.”

આ ઠરાવના સંબંધમાં નેક નામદાર અધ્યક્ષ સાહેબે ખુલાસો કર્યો હતો કે આ
બાબતમાં તપાસ કરી આવા કાયદેસર અંકુશની જરૂર છે કે કેમ તેનો વિચાર કર-
વામાં આવશે.

૨. વળી કેટલેક પ્રસંગે કુમળી વયના જૈન બાઠકોને ત્યાગની દીક્ષા આપવામાં
આવી સાધુ બનાવવામાં આવે છે અને તેથી તે પદ્ધત
હુજુરશ્રીની ધ્યાનમાં આવેલી શોચનીય હોઈ બંધ કરવા પાત્ર છે એમ શ્રીમંત સરકારને
પણ જણાયું છે.

૩. આ ઉપરથી હાલનો મુસદ્દો તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે. સગીર વયના બાઠકોને
મુસદ્દો સામાન્ય સ્વરૂપનો છે. સમાએલાં હોય છે તેથી તેવી દીક્ષા અપાતી હોય તેના
ઉપર અંકુશ મૂકવા હાલનો મુસદ્દો કરવામા આવ્યો છે. હાલનો મુસદ્દો માત્ર જૈન સાધુઓ
દીક્ષા આપે છે તેનેજ લાગુ થાય એવો કરવામાં આવ્યો નથી. તે સામાન્ય સ્વરૂપનો કર-
વામાં આવ્યો છે, એટલે કે કોઈપણ ધર્મના સાધુ, સંન્યાસી, યતિ, યોગી, વેરાગી, ફકીર
વિગેરે એવા માણસો પોતાના ધર્મ અથવા પંથમાં જીવન ગાલ્લવાનો કોઈપણ માણસને
મંત્ર આપે, મુંડે ચેલો કરે વિગેરે એવી કોઈ ક્રિયા કે સંસ્કાર કરે કે જેથી
સંસારનો ત્યાગ થયો ગણાય તેવી સર્વ પ્રકારની દીક્ષાને લાગુ થાય એવી રીતનો તૈયાર
કર્યો છે. (કલમ ૨).

४. त्यागनी दीक्षा एक धार्मिक संस्कार गणाय छे; तेनी वच्चे श्रीमंत सरकारे पडवानो आ मुसद्दानो हेतु नथी; परंतु जो कोई सगीरने मुखदानी कलम ४.

तेव्री दीक्षा आपवामां आवे तो ते तेनी समजण शिवाय अथवा रजामंदी शिवाय छे एम गणवुं जोईए अने तेयी तेव्री दीक्षाने अंगे कायदाने लईने तेना हितविरुद्ध जे जे परिणाम आवे ते तेने भोगवां न पडे एवा इरादायी सगीरने दीक्षा आपवामां आवे तो ते कायदानी दष्टिए सर्व प्रकारे निरर्थक छे एम गणवा कलम ४ मां ठरावुं छे, एटले के ते कलममां जण्याऱ्या प्रमाणे तेवा कोई सगीरना कायदेसर हक के जवाबदारीओ होय तेने तेव्री दीक्षाशी बाध आवशे नहीं एवुं समजवा ठराव्युं छे.

५. आ उपरांत एवा कोई सगीरने जो कोईपण माणस दीक्षा आवशे अगर आपवामां मददगारी करशे तेने कलम ५ थी शिक्षा पात्र कलम ५.

६. आठला धोरणो हाल पूरतां छे एम जणावुं छे; सगीर न होय एवा माणसने सगीर न होय एवा माणसने कोई बाची दीक्षा आपे तो तेने माटे प्रतिबंध मूक्यो आवी दीक्षा अपे तो प्रतिबंध नथी, मूक्यो नथी.

७. आशा छे के जनसमाजना हित माटे श्रीमंत सरकार तरफयी थप्ला वखतो-वखतना कायदाओनी माफक आ कायदानो मुसद्दो पण प्रजा राजीखुशीशी स्त्रीकारशे अने जे अनर्थी थता होय ते अटकाववामां सहायभूत थशे.

तारीख २३ माहे जुलाई सन १९३१.

मं. से. दवे.

विष्णु कृष्णराव धुरंधर,

न्यायमंत्री.

પરિશિષ્ટ ર જું.

1. Name of the department. Nyayamantri.
2. No. and date of the Tippam.
3. Subject:—Appointment of the Committee in connection with the Jain Diksha Bill.

Dewan Order.

The Jain Diksha Bill.

A Committee consisting of:—

Appointment Committee.	of R. B. Govindbhai H. Desai Mr. A. A. Kehimkar Mr. V. K. Dhurandhar
---------------------------	---

with Mr. P. V. Mehta (Naib Nyayamantri) as Secretary will receive all the representations on the above Bill, examine witnesses in Baroda and submit a report to Government.

V. T. KRISHNAMACHARI.

15-8-31.

પારિશિષ્ટ ઇ જું.

સંન્યાસદીક્ષા નિયામક નિબંધનો મુસહો.

શ્રીમત સરકાર મહારાજ સયાજીરાવ ગાયકવાડ સેનાખાસખેલ સમશેર બહાદૂર જી. સી. પ્સ. આય., જી. સી આય. ઈ., ફરજદે-ખાસ-ઈ-દૌલતે-ઇંગ્લિશિયા એમણે નીચે લખેલો “સંન્યાસદીક્ષા નિયામક નિબંધ ” મંજૂર કર્યો છે.

સન ૧૯૩૨ નો મુસહો અંક સંન્યાસદીક્ષા નિયામક નિબંધ.

અનુક્રમણિકા.

અનુક્રમ અંક	બાવત.	પૃષ્ઠ.
૦ ઉદ્દેશ.	

પ્રકરણ ૧ જું.

પ્રાથમિક.

૧. (૧) સંજ્ઞા.
(૨) શરૂવાત.
૨. વ્યાખ્યા.

પ્રકરણ ૨ જું.

સંન્યાસ દીક્ષાનું નિયમન.

૩. અજ્ઞાનને સંન્યાસદીક્ષા આપવી નહીં.
૪. (૧) સંન્યાસદીક્ષા લેનારે લેખ કરવા વિષે.
(૨) દીક્ષાના લેખ ઉપર કયા સખસોની સહી હોવી જોઈએ.
(૩) લેખ નોંધાવવો જોઈએ.
(૪) નિયમ કરવા.
૫. લેખ કર્યાની ખાત્રી કર્યા વગર દીક્ષા આપવી નહીં.
૬. કલમ ૩-૪ ના ઠરાવ વિરુદ્ધ આપેલી દીક્ષા નિર્યાદ ગણાશે.
૭. (૧) કલમ ૩ વિરુદ્ધના ગુન્હા બદલ શિક્ષા.
(૨) કલમ ૯ તથા ૪ વિરુદ્ધના ગુન્હા બદલ શિક્ષા.
૮. ગુન્હાનું સ્વરૂપ.
૯. (૧) ઇન્સાફનો અધિકાર.
(૨) પરવાનગી વગર કામ ચલાવવું નહીં.
૧૦. (૧) ફરિયાદ પ્રાંત ફોજદારી ન્યાયાધીશ વર્ગ ૧ તરફ કરવી.
(૨) પ્રાંત ફોજદારી ન્યાયાધીશ વર્ગ ૧ એમણે ચોકેશી કરવી.
(૩) ખાત્રી થાય તો શું કરવું.
(૪) સાધારણ ફોજદારી ન્યાયાધીશે કરવાની તજવીજ.
૧૧. ફોજદારી નિબંધ પ્રમાણે ફરિયાદ ચાલવા બાધ નથી.
નમૂનો નિશાની ૧.

संन्यास दीक्षा नियामक निर्बंध.

साधु संन्यासी, यति, योगी, विगेरे पोतपोताना धर्मना अनुयायीओने संन्यास दीक्षा आपे छे, तेमां कोई कोईवार दीक्षा एटले शु ए उद्देश.

समजे नहीं एवां कुमली वयनां बाळकोने पण दीक्षा आपवामां आवे छे अने कोई कोईवार एवी दीक्षा तेमना वालीनी संमति लीधा वगर अने उमेर्द्वार लायक होय अने विवाहित होय त्यारे तेनी स्त्रीनी अगर पतिनी संमति वगर दीक्षा आपे छे अने तेथी कलह, झगडा, टंटा, फिसाद, फरियादो विगेरे याय छे ते अटकाववा आ बाबतमां कायदाथी नियमन करवु इष्ट जणायाथी श्रीमंत सरकार महाराज सयाजीराव गायकवाड, सेनाखासखेल समशेर बहादूर, जी. सी. एस आय., जी. सी. आय. ई., फरजंदे-खास-ई-दौलते-इंगिलिशिया एमणे नीचे मुजब ठराव्युं छे:-

प्रकरण १ लुं.

प्राथमिक.

१. (१) आ निर्बंधने “ संन्यास दोक्षा नियामक निर्बंध ” कहेवो.

संहा.

(२) आ निर्बंध	तारीख	माहे	सन	थी
शरूवात.		अमलमां आवशे.		

२. पूर्वापर संवंध उपरथी बाध आवतो न होय तो
व्याह्या.

(१) “ अज्ञान ” एटले जेनी उमरनां १६ वर्ष पूरा यथां न होय एवो सखस समजवो;

(२) “ नोंधणी कामदार ” एटले दस्तावेज नोंधणी संवंधी निर्बंध अन्वये दस्तावेजो नोंधवा माटे निमायलो नोंधणी कामदार;

(३) “ सज्जान ” एटले जे सखस अज्ञान न होय ते समजवो;

(४) “ संन्यास दीक्षा ” एटले कोईपण धर्मना

(१) संन्यासी,

(२) यति,

(३) आचार्य,

विगेरे लोको, कोई सखसने

(क) मंत्र आपवानी,

- (ख) मुंडवानी,
 (ग) कफनी ओराढवानी अगर
 (घ) एवीज बीजी
 शिष्य, चेलो के साधु बनावधानी क्रिया करीने पोताना वर्गमां दाखल करे के जेना परिणामे ते सखसे संसारनो त्याग करेलो गणाय तेवी कोई क्रिया समजवी.

प्रकरण २ ऊँ.

संन्यासदीक्षानु नियमन.

३. कोईपण अज्ञान सखसने संन्यास दीक्षा आपां शकाशे नहीं.

अज्ञानने संन्यास दीक्षा आपकी नहीं.

४. (१) (क) जे सज्जान सखसनी संन्यास दीक्षा लेवानी इच्छा हशे तेणे संन्यास दीक्षा लेनारे लेख करवा जोईए; (ख) ते जो विवाहित होय तो करवा विषे.

प्रसंग.

(१) तेनी पत्नीनी संमति शिवाय, अने

परिणाम. (२) पत्नीना अने छोकरांना भरणपोषणनी व्यवस्था कर्या शिवाय ते संन्यास दीक्षा लई शकाशे नहीं.

(२) (अ) पेटाकलम (१) प्रमाणेना लेख उपर

(क) तेनी सही होवी जोईए तथा

दीक्षाना लेख उपर क्या सख- (ख) (१) माता पितानी अगर तेमना पैकी जे सोनी सही होवी जोईए.

हयात होय तेनी अगर न्यातना बे आगेवाननी अने

(२) ते उपरांत, ते विवाहित होय तो, तेनी पत्नीनी

साख होवी जोईए;

(आ) पत्नी अज्ञान होय तो तेनी वती

(१) तेना पिताए अने

(२) पिताना अभावे तेनी माताए अने

(३) तेना अभावे कोई नजिकना बे सगांए साख करवी.

(३) (क) सदरहु लेख ताट्कानी नोंधणी कचेरीमां नोंधाववा माटे
दीक्षा लेनारे रजू करवो;
लेख नोंधाववो जोईए,

(ख) नोंधणी कामदारे ते लेख उपरनी सही तथा साक्षी खरी होवा
बदल खात्री करी, ते लेख नोंधी आपवो.

(४) आत्रा दस्तावेजोनी नोंधणी संबंधी जरूर जगाय तेवा नियमो नोंधणी
खाताना मुख्य अधिकारी हजूर मंजूरीथी करी शकशे.
नियम करवा.

५. संन्यास दीक्षा लेवानी इच्छा राखनारे कलम ४ मां ठराव्या प्रमाणे लेख
करी नोंधाव्यो छे एवी खात्री कर्या वगर कोईपण
लेख कर्यानी खात्री कर्या वगर
दीक्षा आपवी नहीं.

- (क) साधूए,
- (ख) संन्यासीए अगर
- (ग) आचार्ये
संन्यास दीक्षा आपवी नहीं.

६. (क) कलम ३ ना ठराव विरुद्ध अज्ञान सखसने संन्यास दीक्षा आपी हशे
ते, तथा
कलम ३-४ ना ठराव विरुद्ध
आपेली दीक्षा निरर्थक गणाशे,
प्रसंग.

(ख) कलम ४ ना ठराव प्रमाणे लेख नोंधाव्या शिवाय सज्जान सखसे संन्यास
दीक्षा लीधी हशे ते

परिणाम. सर्व कारण माटे निरर्थक गणाशे, एटले के-

- (अ) तेवी दीक्षा अपायला सखसने
 - (१) संप्राप्त थयेला अगर
 - (२) भविष्यमां संप्राप्त थनारा
वारसाईना अगर बीजा कोईपण प्रकारना कायदेसर हक्कने बाध
आवशो नहीं, तेम
- (आ) (१) तेना आश्रितोनुं भरणपोषण करवानी अगर
- (२) बीजी कोई
कायदेसर जवाबदारीमांथी ते मुक्त थएलो गणाशे नहीं.

७. (१) जे सखस

कलम ३ विरुद्धना गुन्हा बदल
शिक्षा.

(क) कलम ३ ना ठराव विरुद्ध कोई अज्ञान सखसने संन्यास दीक्षा
आपशे ते तथा

(ख) फोजदारी निबंधमां आपेली व्याख्या मुजब तेवा कोई कृत्यमां
मददगारी करशे ते

एक वर्षसुधीनी गमे ते प्रकारनी केदनी तथा रूपिया ९०० सुधीना दंडनी शिक्षाने
पात्र थशे.

८. (२) जे सखस

कलम ५ तथा ४ विरुद्धना
गुन्हा बदल शिक्षा.

(क) (१) कलम ५ ना ठराव विरुद्ध बीजा कोई सखसने संन्यास
दीक्षा आपशे ते तथा

(२) जे सखस कलम ४ ना ठरावो विरुद्ध संन्यास दीक्षा लेशे
ते तेमज

(ख) फोजदारी निबंधमां आपेली व्याख्या मुजब तेवा कोई कृत्यमां
मददगारी करशे ते

छ मास सुधीनी आसान केदनी अगर रूपिया ९०० सुधीना दंडनी अगर ए बने
शिक्षाने पात्र थशे.

८. कलम ७ मुजबनो गुन्हो

गुन्हानुं स्वरूप.

(क) जामीन लहै शकाय एवो तथा

(ख) पकडहुकम वगर पकडाय नहीं एवो

छे एम समजवुं.

९. (१) कलम ७ मुजबना गुन्हानो इन्साफ पहेला वर्गना हकुमतवाला फोज-
दारी न्यायाधीश्थी थहै शकशे.
इन्साफनो अधिकार.

(२) परंतु सदरहु गुन्हा माटे काम चलाववानी प्रांत फोजदारी न्यायाधीश
वर्ग १ नी मंजूरी वगर काम चाली शकशे नहीं.

परवानगी वगर काम चलाववुं
नहीं.

૧૦. (૧) (ક) કલમ ૭ મુજબના ગુન્હાની ફરિયાદ જે તે પ્રાંતના પ્રાંત ફોજદારી ન્યાયાધીશ વર્ગ ૧ તરફ, ગુન્હાની તારીખથી એક વર્ષની મુદત અંદર કોઈપણ સખસ કરી શકશે;

(ખ) રકમ (ક) માં ઠારવેલી મુદત બહારની ફરિયાદ દાખલ કરવી નહીં.

(૨) (ક) સદરછુફરિયાદ ખરી છે કે કેમ તેની ખાત્રી કરવા સારુ પ્રાંત ફોજદારી ન્યાયાધીશ વર્ગ ૧ પોતાને યોગ્ય લાગે તેવી એમણે ચોકશી કરવી.

(ખ) આવી ચોકશીમાં સાક્ષીઓની જુબાની તથા આરોપીઓનો ખુલાસો લઈ શકાશે.

(૩) પેટાકલમ (૨) પ્રમાણે ચોકશી કર્યા પછી, ફરિયાદ ખરી હોવાની પ્રસંગ. પ્રાંત ફોજદારી ન્યાયાધીશ વર્ગ ૧ ની ખાત્રી થાય તો ખાત્રી થાય તો શું કરશું. તેમણે પરિણામ.

(ક) આરોપીઓ ઉપર કામ ચલાવવાની પરવાનગી આધ્યાત્મિક હુકમ કરવી અને

(ખ) ફરિયાદ તથા બનેલા કાગળો હક્કુમતવાળા પહેલા વર્ગના સાધારણ ફોજદારી ન્યાયાધીશ તરફ મોકલી આપવાં.

(૪) પેટાકલમ (૩) પ્રમાણે પોતાના તરફ કાગળો આવે એટલે સાધારણ સાધારણ ફોજદારી ન્યાયાધીશે બીજી ફરિયાદોની માફક પોતાની ધીશે કરવાની તજવીજ.

૧૧. આ નિબંધ વિરુદ્ધ ગુન્હો બનતો હોય તે ઉપરાંત ફોજદારી નિબંધ વિરુદ્ધનો પણ ગુન્હો બનતો હોય તો તે નિબંધ પ્રમાણે તે ગુન્હા બાબત ફરિયાદ ચાલવાને આ નિબંધના કોઈ ઠરાવથી બાધ આવે છે એમ સમજવું નહીં.

નમૂળો નિશાની ૧.

(જુઓ કલમ ૪.)

૧. હું	જાતે	રહેવાસી	<u>નો</u> <u>ની</u>
--------	------	---------	------------------------

૨. હું આ લેખથી જાહેર કરું છું કે,

(ક) આ સંસાર તરફ વિતરાગ આનન્દાથી હું મારી રાજીબુદ્ધીથી સંન્યાસ દીક્ષા લું છું.

(ખ) મારી ઉમર પૂરાં વર્ણની છે.

(ગ) મારા માતા પિતા હ્યાત છે.
નથી.

(ઘ) હું કુંવારો કુંવારી છું.

(ઙ) હું વિધુર વિધવા છું

(ચ) હું પરણેલો પરણેલી છું.

*(છ) મારી સ્ત્રી તથા છોકરાંના ભરણપોષણ માટે મેં યોગ્ય વ્યવસ્થા કરી છે,
તે અર્થે મારી સ્ત્રીએ આ લેખ ઉપર સાખ સહી કરી છે.

તારીખ

સહી.

સાખ.

* દીક્ષા લેનાર સ્ત્રી હોય તો આ રકમ છેકો નાખવો.

सूची.

	परिच्छेद	पृष्ठ
अधिकार		
ईन्साफनो. (परिशिष्ट ३)	०	७०
अणवनाव		
श्रीपूज्यने संघसाथे.	३४	१९
अधमता		
हिंदुसंन्यासनी उत्तम भावनामां.	३७	२१
अधिकारी		
मनुष्य चारित्यवान होय तो त्याग रूप दीक्षानो अधिकारी.	६३	४८
अनामत		
फरियादी पासे.	७६	१६
अनुकरण		
बाळलग्न प्रतिबंधक निबंधना कायदानुं.	६७	११
अनुमती		
ईस्लाम धर्म शास्त्रनी.	१०	४
अनुमोदन		
जैनघर्मनां अनुयायीओना संबंधमां.	४३	३०
संन्यास लेवानी ईच्छा राखनोरे लेवा विषे.	१४	६
हिंदुधर्मना अनुयायीओना संबंधमां.	४३	३०
अपवाद		
सोळवर्षयी कमी उमरना बाळको माटे,	७०	१४
सोळवर्षनी उमरना विशेष प्रकारनी बुद्धिवाळा बाळको माटे.	७०	१३
अपेक्षा		
संधनी संमतिनी.	७३	९४
संधनी संमतिने माटे,	९०	३६
संमतिनी—सोळवर्षनी उपरनाने दीक्षा लेती वस्त्रे माबाप विग्रेनी.	४३	२९
अमल		
कायदानो केवो यशे.	६७	११
अयोग्य		
दीक्षा आपवामां.	३९	२४
अयोग्यपण्		
दीक्षा आपवामां.	८	३

	परिच्छेद	पृष्ठ
दीक्षामा यतुं अटकाववाने कायदानी कलमो पुरती, साधुदीक्षामां दाखल थयेलुं.	७३ ३६	९४ २१
अरजी		
दीक्षाना उमेदवारे दिवानी न्यायाधीशीमां करवी, दीक्षाना उमेदवारे प्रांतना सुबा पासे करवी.	७४ ७४	९९ ९९
अर्थ		
अहिंसानो. असत्य त्यागनो. अस्तेयनो. ब्रह्मचर्यनो. अपरिग्रहनो.	२३ २३ २३ २३ २३	११ ११ ११ ११ ११
अवनति		
कोई पण धर्मना साधु संवनी, साधु वर्गनी.	३६ ३६	२० २१
असर		
प्रजानी मानसिक नैतिक अने आर्थिक उन्नति उपर. संघनी साधु उपर.	६६ ३२	९० १८
अंकुश		
अयोग्य वर्तन करनार साधुओ उपर. आचार्यनो-संन्यासी साधु भ्रष्ट थाय तो. कायदेसर-दीक्षा उपर. देवस्थान अने साधुओ उपर. राजशासनना-दीक्षा प्रणालीपर. शृंगेरीमठ शिवाय अन्यत्र संन्यासीओ अने त्यागीओ उपर. साधुओना चरित्र उपर-त्रावकोनो. संसारीओनो-हिंदुर्धर्मना त्यागीओ उपर. हिंदुर्धर्मना गृहस्थोनो-संन्यासी साधु भ्रष्ट थाय तो.	९८ ३२ २ ३२ ६६ ३२ ३४ ३७ ३२	४१ १७ २ १८ ९० १८ १९ २२ १७
आश्रेप		
साधुओ उपर, अज्ञान वयना बाल्कने नसाडी भगाडो लहै जवानो. ४०	२४	
आचार्य		
गच्छमां यतिमङ्डळ होय छे ते दरेकना उपरी. वैष्णव संप्रदायमां. घरबारी.	३१ १६ १६	१७ ८ ८
आतुर		
छ कायाना जीवोनी रक्षा करवा.	६४	४९

	परिच्छेद	पृष्ठ
आधार		
संमति बाबत—धर्मबिंदुनो.	४४	३२
आमंत्रण		
दीक्षा आपवाने प्रसंगे सगां व्हालां अने स्नेहीओने.	२०	१६
आरोप		
फोसलाववा विगरेना.	३०	२४
सगीरोने दीक्षा लेवा माटे फोसलाववानो.	३९	२३
आवश्यकता		
कायदो करवानी.	६६	१०
संघनी संमतिनी.	९०	३६
उत्तराजन		
हिंदुओ मिथ्याचारीने आश्रय आपी आपे छे.	३२	१८
उद्देश		
संघनी संमतिनो.	७३	९९
संन्यास लेवानो.	०	४
उपयोग		
आध्यात्मिक अने आधिभौतिक प्रथानो.	१९	१०
उमर		
दीक्षा लेवानी कमीमां कमी.	६९	४९
उमेदवार		
दीक्षानो—सोळ वर्षनी उपरांतनो.	४३	२९
कपडां		
चोरी करनार आचार्यनां उत्तरावी लेत.	४१	२८
भगवां.	१६	८
कागळ		
दीक्षानी क्रिया करता अगाउ कुटुंबनी संमतिनो.	२९	१६
काम		
शास्त्र विरुद्ध बनतुं होय ते अटकाववानुं जैन संघनुं.	३७	२२
काम चलावबुं		
प्रांत फोजदारी न्पायाधीश वर्ग १ नी मंजुरी वगर—नहीं.	०	७०
(परिशिष्ट ३)		

		परिच्छेद	घृष्ण
कारणो			
ख्री के धणीनी संमतिनां.		७२	९४
क्रिया			
आध्यात्मिक—कर्या पछी यतिने लायक उपाध्याय के आचार्यने पदे लेवामां आवे छे.	३०	१७	
आध्यात्मिक—दीक्षा थया पछी श्वेतांबरोमां करवानी.	३०	१७	
दीक्षानी.	२१	११	
दीक्षानी क्यां थाय छे ते.	२९	१६	
दीक्षानी—तेरापंथीमां.	२९	१६	
प्रतिक्रमणनी.	६२	४६	
साध्वीनी दीक्षाने प्रसंगे.	२९	१६	
खबर			
माता पिता भाई ख्री विगेरेने.	४८	३९	
खरडो			
निबंधनो सुधरेलो.	६८	९७	
लाला सुखबीरसिंहनो.	६४	३८	
खर्च			
दीक्षा आपवाने प्रसंगे.	२९	१६	
खामीओ			
दीक्षा आपवामां.	६६	९०	
खुलासो			
विशेष—समिति तरफ आवेली सूचनाओना संबंधमां.	७	४	
गच्छ			
मूर्तिपूजक श्वेतांबरोमां तपा, खरतर, पायचंद अने अंचल.	३१	१७	
श्वेतांबर अने दिगंबर संप्रदायमां.	३१	१३	
गण			
श्वेतांबर अने दिगंबर संप्रदायमां.	३१	१७	
गणी			
पन्न्यास नीचे होवा विषे.	३१	१७	
गुरु			
मठधारी के मंदीरवाळा.	१६	८	
गेरशीस्त रीतो			
दीक्षामां चालती—उघाडी पाडवी.	४०	२९	

		परिच्छेद	पृष्ठ
प्रथो			
प्रमाण तरीके गणता.		७	३
चूटणी			
विधि प्रमाणे थई होय तोपण अयोग्य पुरुषने गादीए बेसाडतां अटकाव.		३४	१९
चोकशी			
प्रांत फोजदारी न्यायाधीश वर्ग १ एमणे करवी. (परिशिष्ट ३) ०		७१	
झूँड			
संन्यास लेवानी—ब्रह्मचारी माटे. सोळ वर्षे सथा ते उपरनी उमरना सखसो माटे.		१४ ७१	७ ९४
झूँपवट			
दीक्षा आपवाना काममां.		४१	२८
जवाबदारी			
भरणपोषणनी.		४३	३३
जीवन			
धार्मिक—संसारमां रही गाळवा माटे.		१०	४
जैन त्यागी संस्था			
वधारे त्यागवाढी अने चढियाती.		२२	११
ठराव			
दीक्षा बाबत. धारासभामां. (परिशिष्ट १) धारासभामां रजू यएलो—दीक्षा बाबतनुं नियमन रहेवा माटे. धारासभाना सभासदे रजू करेलो—दीक्षा बाबतनुं नियमन रहेवा माटे.		४९ ० १ १	३९ ६३ १ १
संघनी संमति लेवा संबंधी. जैन कॉन्फरन्सोना.		४८ ४९	३९ ३९
डोळ			
ज्योतीष अने जादू विद्या जाणवानो.		३४	१९
तजवीज			
साधारण फोजदारी न्यायाधीशे करवानी. (परिशिष्ट ३)		०	७१
तार			
दीक्षाना ठरावनी तरफेण तथा विरुद्धमां.		२	१

	परिच्छेद	घृष्ण
त्याग		
जैन साधु घणो सारो राखे छे ते.	२६	१४
संन्यास दीक्षा लीधेला साधुए सर्व प्रकारनी धन संपत्तिनो करवो पडे छे.	२६	१३
सं सारना भौतिक प्रयासोनो.	९	४
दलील		
कायदो वरवानी तरफेणनी सूचनाओमां.	६	३
कायदो करवानी विरुद्धनी सूचनाओमां.	६	३
दीक्षाना विरोधी ओनी.	६७	४०
यंगमेन्स जैन एसोसीएशनना सभ्यो तरफथी.	४३	३१
दाखलो		
चोरीनी दीक्षानो.	४३	३०
दावो		
दीक्षा लीधेला जैन सामे खोराकी पोषाकनो.	४४	३२
दिग्दर्शन		
संन्यास दीक्षा संबंधी शास्त्रधी केवी रीते ठरेलुं छे ए विषे. हिंदु, जैन, मुर्लीम तथा इतर धर्ममां संन्यास विषे शी रीते ठरेलुं छे तेनुं.	१७	२१
	९	४
दिवस		
एकज—साधुए एक गाममां रहेवुं.	२६	१४
साधुए पांच—एक नगरमां रहेवुं.	२६	१४
दीक्षा		
अज्ञान सखसने. (परिशिष्ट ३)	०	६८
अयोग्य—अपाय छे के ?	३७	२१
लेख कर्यानी खात्री कर्या वगर नहीं आपवा विषे. (परिशिष्ट ३) ०	०	६९
कुमठी वयनां बालकोने.	६८	९२
कोण लई शके.	२४	११-१२
जैन धर्ममां.	१८-२२	९-११
जंबुक स्वामीए यौवनावस्थामां—लीधी हत्ती.	६४	४८
तपश्चर्या छे.	६०	४३
नसाडी, भगाडी, फोसलावाने आपवा विषे.	३७	२२
निरर्थक गणाशे. (परिशिष्ट ३)	०	६९

	પરિચ્છેદ	પૃષ્ઠ
નિર્ધિક હોવા વિષે. (પરિશિષ્ટ ૧)	૦	૬૧
માબાપ વિગેરેની સંમતિ લીધા વગર.	૩૭	૨૨
માબાપ વિગેરેની સંમતિ લીધા વગર સગીરોને છુપી રીતે-અપાય છે કે કેમ ?	૩૮	૨૩
પરીક્ષા કર્યા વગર.	૪૧	૨૬
પ્રતિમાઓનો અભ્યાસ કર્યા પછી.	૬૩	૪૭
રહસ્ય ન સમજે એવા સગીરોને આપવામાં આવે છે કે કેમ ?	૪૧	૨૬
શાસ્ત્ર વિહુદ્વ-ચેલા વધારવાના લોમથી.	૩૭	૨૨
સગીરને નહીં આપવા વિષે. (પરિશિષ્ટ ૧)	૬૧	
સગીરોને છુપી રીતે અપાય છે.	૪૨	૨૭
સમજવગર.	૧	૧
સમજ વગરનાને.	૪૧	૨૬
સંઘને જણાવ્યા વગર.	૩૭	૨૨
સંમતિ વગર આપવા કરેલી તજવીજ.	૪૦	૨૯
સંમતિ વગર-આપી દેવાનો પ્રકાર.	૬	૩
સંસાર ત્યાગની-પરવાનગા) મેલવ્યા શિવાય આપી શકાય નહીં.૧ ખ્રી માબાપ વિગેરને રડાવી કકળાવીને.	૪૬	૩૪
દીક્ષાની કિયા		
તેશપંથીમાં.	૨૯	૧૬
દેખું		
પરણેતર બાઈનું ભરણપોષણ કરવાનું.	૪૯	૩૩
ધમાલ		
સાધુની-સ્વિસ્તી ધર્મમાં સુધારો થયો તે પહેલાં.	૧૧	૬
સાધુની-પ્રોટેસ્ટંટ સંપ્રદાયમાંથી નીકળી ગઈ છે.	૧૧	૬
ધર્મગુરુઓ		
ખોસ્તી ધર્મમાં-ઘરબારી હોય છે.	૧૧	૬
લગ્ન કરી ઘરબારી તરીકે રહી શકે છે તેવા.	૧૦	૪
ધર્માધતા		
આગાલ વધતા વિચારોમાં બાધા નાંખનાર.	૩૯	૨૦
જૈન ધર્મની અવનતિ આણનાર.	૩૯	૨૦
ધાર્મિક જીવન		
સંસારમાં રહી ગાલ્વા માટે.	૧૦	૪

	परिच्छेद	पृष्ठ
धोरणो		
इंडियन चाइल्ड मेरेज रीस्ट्रेस्ट अँकटमां गुन्हानुं काम चलाववा संबंधीना.	७६	९६
नमन		
नवीन साधु गुरुने—करे छे.	२९	१६
श्रावक श्राविकाओ नवीन साधुने—करे छे.	२९	१६
नमूनो		
संन्यास दीक्षा माटेना लेवनो. (परिशिष्ट ३)	०	७२
नसाडे		
दीक्षा माटे .	४०	२४
नाम		
कायदानुं—संन्यास दीक्षा नियमक निबंध राखवुं, गण, कुळ अने शाखानां.	६८ ३१	९२ १७
नापसंदगी		
गेर रीते वर्तनार साधु प्रत्ये.	६८	४१
नाश		
काळे करीने खवाई जता ग्रंथोनो.	२०	६०
नालायकी		
दीक्षा माटे —पुरुषोनी. —च्चांओनी.	२९ २९	१२-१३ १३
दीक्षा लेवानी उमेदवाळामां—नही होवा विषेनी खात्री करी लेवी.	२८	१९
निमणूक		
समितिनी.	४	२
नियम		
सख्त राखवानुं कारण. साधु साध्वीए पाळवाना. साधीओ माटेना वधारे आकरा.	२६ २६ २६	१९ १४ १९
निर्वाह		
बैरी छोकरां माटे. साधुओनो—श्रावकोना दानने आधारे.	१४ ३२	६ १८
निवेदन		
समिति जे निर्णय उपर आवी छे तेनुं.	८	३
निषेध		
धातुना शिका राखवानो. नोटो राखवानो.	३४ ३४	१९ १९

		परिच्छेद	पृष्ठ
नौथ			
देवाळुं काढनारनी स्थात्र जंगम मिलकतनी.	४३	३३	
डॉक्टर भट्टाचार्य पासे जैनधर्म शास्त्रानां फरमान विषे तैयार करावेली.	७	३	
प्रोफेसर गोविंदलाल भट पासे हिंदुधर्म शास्त्रानां फरमान विषे तैयार करावेली.	७	३	
पद			
चारित्रनां	३०	१७	
परिणाम			
न्हानी उमरना दीक्षा लेवा आवनारना संबंधमां.	४१	२७	
परीक्षा			
एक महिनानी मुदत सुधी.	४८	३९	
दीक्षाना उमेदवारनी.	२८	१९	
पुनरुद्धार			
त्यागनो—हिंदुओमां शंकराचार्य कर्यो.	३२	१८	
पुरावो			
संमति माटे केवो होवो जोईए.	७४	६६	
पुत्तको			
अयोग्य दीक्षा अपाय छे एवो आक्षेप करनारा.	४०	२९	
दीक्षितो मेलववाने अधर्मी आचरण थाय छे एवो आक्षेप करनारा.	४०	२९	
पंचास			
उपाध्यायनी नीचे.	३१	१७	
प्रकार			
फकीरोना.	१०	४	
संन्यासना—हिंदुधर्ममां.	१९	७	
संमतिवगर दीक्षा आपी देवानो.	६	३	
समिति तरफ आवेली सूचनाओनो.	६	३	
प्रतिक्रमण			
धर्मनुं अने विधिनुं उल्लंघन यतां—करतुं.	३०	१७	
जैन धर्ममां एक आवश्यक किया,	६२	४६	
साधुओने पाप लाग्युं होय त्यारे.	६२	४६	
प्रतिश्ना			
लग्ननी.	७२	९४	
प्रतिबंध			
दीक्षाना काममां—१६ वर्षनी उमर सुधी.	६९	९३	
११			

		परिच्छेद	पृष्ठ
दीक्षानो—१६.	वर्षथी कमी उमरना माटे.	६९	७२
दीक्षा लेवानो-स्त्री के धणीनी संमति न होय तो		७२	७४
सगीर न होय एवा माणसने दीक्षा माटे. (परिशिष्ट १)		०	६४
प्रदक्षणा			
समवसरणनी.		३०	१७
प्रयत्न			
साधु संख्या वधारवाने.		९२	३७
साधु संघमांथी दूर करवानो.		३६	२१
प्रश्न			
दीक्षा लेवाने आवेला पुरुषने पुछवा विषे.		२८	१९
प्रायश्चित्त			
धर्मनुं अने विधिनुं उल्लङ्घन यतां करवुं.		३०	१७
फकीर			
निर्वाहना साधन माटे.		९१	३७
फरज			
जे ते धर्मना अनुयायीओनी.		९३	३७
परणेतर स्त्री तरफ.		४७	३४
बाललग्ननी अटकायत कायदाथी करवानी.		९६	४०
राज्यनी—समाजने नुकसान शाय तेवी बाबतो अटकाववानी.		९६	४०
फल			
कर्मनां.		९	४
फरियाद			
कायदामां ठावेला गुन्हा बदल.		७६	७६
खोटी थवानो संभव नथी.		७६	७७
दीक्षा विरुद्धना गुन्हानी.		७६	७७
प्रांत फोजदारी न्यायाधीश वर्ग १ तरफ करवी. (परिशिष्ट ३)		०	७१
फेरफार			
प्रसिद्ध थएला खरडामां—करवानी आवश्यक्ता.		८	३
प्रसिद्ध थयेला खरडामां केवो करवो ते.		६८	९२
बाध			
फोजदारी निबंध विरुद्धनो गुन्हो बनतो होय तो ते निबंध			
प्रमाणे फरियाद चालवाने नथी. (परिशिष्ट ३)		०	७१
बाबतो			
बंदोबस्त करवानी.		६६	४९
निवेदनमां समावेश करेली.		८	३

	परिच्छेद	पृष्ठ
बादारा.	१०	४
बालदीक्षा		
अपवादरूप.	५९	४२
ना हिमायती.	६४	४८
बील		
लाला सुखबीरसिंहनुं.	६४	३८
बेठक		
कौन्सोल अँग टेटनी	६४	३८
बेशरा.	१०	४
बोध		
कर्मना बंधनमांथी मुक्त थई मोक्ष मेळववा माटे.	१८	९
भगाडे		
दीक्षा माटे.	४०	२४
भट्टारक		
समस्त गच्छना उपरी.	३१	१७
भरती		
साधु लोकोनी.	१७	९
भलामणो		
व्यवहार.	७९	९८
भावना		
परमार्थ करवानी—मुक्ति फोजना पादरीओमां.	११	९
साधु थवानी—दिन प्रतिदिन कमी थती जाय छे.	११	९
साधु संस्था प्रत्ये.	६७	९९
भेद		
जैन साधुनां वस्त्रोमां.	१९	९
श्वेतांबर अने दिगंबरना मंतव्यो अने क्रिया कांडमां.	१९	१०
श्वेतांबर अने दिगंबर सामाजिक संप्रदायना बंधारणमां.	१९	१०
मत		
जाबालोपनिषदनो,	१४	७
संन्यास क्यारे लई शकाय ते विषे,	१४	६
मतभेद		
हिंदुधर्ममां संन्यास क्यारे लई शकाय ते विषे.	१४	६
मध्यबिंदु		
संन्यास लेवाना तत्त्वज्ञाननुं.	१८	९

		परिच्छेद	षट्ठ
महसा			
	त्यागनी—वैराग्य अने तपोबळ उपर.	३२	१८
मानभक्ति			
	साधु संस्था माटे.	९३	३८
मुदत	खरडानी विरुद्ध अगर लाभमां हकीकत जाहेर करवा माटे.	९	२
मुद्दा	तकरारी बाबतोमां विचार करवाना. निर्णय करवाना.	३८ ३८	२५ २३
मुसहो			
	नवो.	७८	९७
	कायदानो.	७४	९९
	सामान्य स्वरूपनो. (परिशिष्ट १)	०	६३
मोह			
	संसारनो.	३६	२०
यज्ञा			
	अज्ञान वयनी उमरनी.	६९	९२
	पांत्रीस वर्षनी अंदरनी ख्रीओने दीक्षा न आपवानी.	६२	४६
	सज्जान वयनी उमरनी.	६९	९२
युक्ति			
	संबंधी वर्ग आज्ञा आपे एवी.	४३	३०
रक्तम	बक्षीस के चांह्यानी—दीक्षा लेनारे धर्मदामां आपत्रा विषे.	२९	१६
रजामंदी	संन्यास दीक्षा माटे. (परिशिष्ट १)	०	६१
लागणी			
	संन्यास दीक्षा लेवानी—जैनोमां.	१८	९
लाभ			
	दीक्षाना—बधा पक्षना जैनोने कबूल.	३९	२४
लायकात			
	दीक्षा आपनार गुहनी.	२७	१९
लायकी			
	दीक्षा लेवानी उमेदवाळामां होवा विषेनी खात्री करी लेवी.	२८	१९
लेख			
	दीक्षाना—उपर कोनी सही जोईए. (परिशिष्ट ३)	०	६७
	दीक्षानो उमेदवार तैयार करे.	७४	९९

		परिच्छेद	घृष्ण
	नोंधणीना कायदा प्रमाणे नोंधाववो.	७४	११
	नोंधाववो जोईए. (परिशिष्ट ३)	०	६९
	हकुमतवाळी नोंधणी कचेरीमां रजू करवो.	७४	११
लोप	साधु वर्गनो.	६७	४१
खखत	प्रतिमाओ शीखवानो.	६०	४३
वहिवट	संघनी संमति लेवानो.	४८	३९
वासक्षेप	माथां उपर करवामां आवे छे.	२९	१६
बाल	दीक्षा लेनार उखेडी नांखे छे.	२९	१६
वांधो	हिन्दु धर्म समाजनो—खरडाने कायदानुं रूप आपवामां.	३७	२२
विचारो	जैनमुनिना—भरण पोषणनी जवाबदारी संबंधी.	४९	३३
विद्वान	बाल दीक्षितज थई शके एम नयी.	६४	४८
विधि	दीक्षा लेवा आवेला पुरुषने प्रश्न आचार कथन अने परीक्षा विगेर करवानो.	६३	४७
विभाग	जैन धर्मना.	१९	९
विरोध	अयोग्य रीते अपाती दीक्षा सामे.	३९	२४
	कन्यानी चौद अने वरनी उमर अढारनी सामे.	६६	५०
	जैन शिवाय बीजा कोई धर्मवालानो—करवा धारेला कायदाना संबंधमां.	६	३
	त्यागात्रमनो.	३२	१८
	मूतपूजा विरुद्ध.	२०	१०
	श्रीमंत सरकारे प्रसिद्ध करेला खरडानो.	९७	४०
	सगानो.	४०	२९
व्यय	अनुस्पादिक द्रव्यनो.	१७	९

	परिच्छेद	पृष्ठ
व्याख्या		
अज्ञान. (परिशिष्ट ३)	०	६७
दीक्षा शब्दनी. (परिशिष्ट १)	०	६०
नोंधणी कामदार. (परिशिष्ट ३)	०	६७
सज्जान. (परिशिष्ट ३)	०	६७
संन्यास दीक्षा. (परिशिष्ट १ अने ३)	०	६०-६७
व्रतो		
जैनगृहस्थोए पालवानां.	२३	११
जैन साधुए पालवानां.	२३	११
शारखाओ		
पेटा—श्वेतांबरोमां तथा दिगंबरोमां.	२१	११
शिक्षा		
अज्ञानने आपेली दीक्षा माटे,	७७	९७
केदनी. (परिशिष्ट १)	०	६२
दंडनी. (परिशिष्ट १)	०	६२
दीक्षा आपवाना गुन्हा माटे.	७९	९६
मुसद्दानी कलम ३ विरुद्धना गुन्हा माटे. (परिशिष्ट ३)	०	७०
" ४ " (परिशिष्ट ३)	०	७०
" ५ " (परिशिष्ट ३)	०	७०
स ज्ञान सख्से लेख करी आप्या शिवाय लीघेली दीक्षा बदल.	७७	९७
शिथिल		
चारि त्रमां—मंदीरोना वहिवटनी जंजाळ्मां पडवाथी.	६२	४९
शिथिलता		
हिंदु साधुओमां.	२६	१३
ओ पूज्य		
समस्त गच्छना उपरी.	३१	१७
सत्ता		
धर्मज्ञ साधुओनी—श्रावकोना धार्मिक जीवन उपर.	३६	२०
राजपूतानाना अने गुजरातना साधु संघर्मा श्रावकोने.	३३	१८
श्रावक संघनी—साधु संघ उपर.	३३	१८
श्रावकोनी—साधु उपर.	३४	१९

	परिच्छेद	पृष्ठ
श्रावकोनी—संघना उपरी श्रीपूज्य उपर.	३४	१९
साधुओनी दीक्षा, शिक्षा अने चारित्र उपर.	३५	१८
साधुओनी—श्रावको उपर.	३६	२०
समज		
दीक्षानुं महत्व समजवा जेवी.	९९	४२
सरखामणी		
हिंदु अने जैन साधु रचनानी.	३२	१७
स्वाल		
संन्यास दीक्षामां मात्र नसाड्या भागाड्यानो नयी.	९९	३९
समारंभ		
दीक्षा आपचाने प्रसंगे.	२९	१६
साधना		
मुक्तिनी.	३६	२०
साधु		
ए एक गाममां एकज दिवस रहेवुं.	२६	१४
ए एक नगरमां पांच दिवस रहेवुं.	२६	१४
जैन समाज उपर भारे धार्मिक असर करता होय एवा.	३६	२०
गुजरातमां.	१६	८
ढोगी.	१७	९
दिगंबरी जैनना.	१९	१०
रामकीओ लईने फरनारा.	१७	९
शैव संप्रदायना.	१६	८
श्वेतांबरोना.	१९	९
साधारण श्वेत अने संवेगी कपडां राखे छे.	२६	१४
साधु जीवन		
तेरापंथी.	२१	११
सुधारो		
त्यागी संस्थामां.	३७	२२
समाज अने त्यागनी संस्थाओमां.	३६	२०
सूचना		
कायदाना खरडा उपर.	३६	२१
कायदाना लाभमां के तरफेणमां.	६	३
जैन धर्मना अनुयायी तरफथी.	६	३
दीक्षा प्रतिबंधक निबंधना खरडाना संबंधमां.	४	२

	परिच्छेद	घृष्ण
दीक्षा माटे कायदो करवानी विरुद्धनी अने तरफेणनी.	६	३
विरुद्धता के तरफेणनी.	६	३
हिंदु, मुस्लीम विगेरे बीजा धर्मना अनुयायीओ तरफथी.	६	३
सूरिमंत्र		
आचार्य धनार यतिना कानमां.	३०	१७
संख्या		
फकीरोनी—बडोदरा राज्यमां.	१०	९
बीजाओनी कमाई उपर आजीविका चलावनार साधुओनी.	१७	९
संघ		
अव्यवस्थित अने निर्बळ.	७३	९९
श्रावक, श्राविका, साधु अने साध्वीनो बनेलो.	३२	१८
श्वेतांबर अने दिगंबर संप्रदायमां.	३१	१७
संग्रहाय		
जैन धर्मना.	१९	९
योगीओमां.	१९	८
श्वेतांबरी जैन धर्मनो.	२०	१०
स्थानकवासी.	२०	१०
संबंध		
साधु संघ अने श्रावक संघ वच्चे.	३३	१८
संमति		
दीक्षा लेतां पहेलां मावाप विगेरेनी.	६६	४९
मातापितानी.	४४	३२
मावाप विगेरेनी आवश्यक.	४७	३४
मावाप, स्त्री विगेरे आप वर्गनी.	३७	२२
मावाप स्त्री विगेरेनी दीक्षा आपतां पहेलां.	३८	२९
संघनी.	४८	३४
सोळ वर्ष उपरनी उमरनाने दीक्षा आपती वखते.	४२	२७
सोळ वर्षनी अंदरनाने माटे.	४२	२७
संघनी लेवानुं आवश्यक.	३८	२३
संमेलन		
श्रीमंत विजयानंद सूरीश्वरजीना संघाडाना मुनिओनुं.	४८	३९
स्थानकवासी श्वेतांबरोना साधुओनुं.	४९	३९
संन्यास		
इस्लाम धर्ममां—नयी.	१०	४

	परिच्छेद	पृष्ठ
विस्ती धर्ममां—नथी.	११	६
जैन धर्ममां.	१८	९
ज्ञोरोस्ट्रीयन धर्ममां—नथी.	१२	६
हिंदु धर्ममां—कोण लई शके.	१३	६
हिंदु धर्ममां—क्यारे लई शकाय.	१३	६
स्थान		
हिंदुस्थानना साधुओमां जैन साधुओनुं.	३६	२१
स्थिति		
परणेतर खीनी.	४७	३४
स्वरूप		
गुन्हानुं. (परिशिष्ट ३)	०	७०
दीक्षा आपवाने योग्य गुरुनुं.	२७	१९
हकीकत		
कायदो करवानी तरफेणमां तथा विरुद्धमां.	८	३
प्रायमिक.	८	३
समितिए जुबानी तरीके पूछी लीधी.	७	३
हजूरश्रीनी ध्यानमां आवेली. (परिशिष्ट १)	०	६३
हक्क		
कायदेसर-सगीरना. (परिशिष्ट १)	०	६४
कुटुंबनी मिलकत उपर.	९९	३९
दीक्षा छोडी देनारनो—मिलकत उपर.	७४	९५
हरकत		
दीक्षा लेवा मागतो होय तेमां.	९९	४३
हानिकारक		
समज वगरना बाल्कोने दीक्षा आपवी ते.	६३	४८
हुक्म		
दिवाननो—दीक्षा प्रतिबंधक निवंधना मुसद्दाना संबंधमां समिति निमवानो.	४	२
हेतु		
कायदानो.	६८	९२
कायदो करवानो.	६८	९९
झूपी रीते दीक्षा आपी देवानो.	४०	२४
सरकारनो-संमति वगरनी झूपी रीते अपाती दीक्षा बंध करवानो. ७०	७०	९३
हेरानगति		
माता पितादिकने निर्वाहना कारण माटे.	४४	३२

